राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 विविधता को एकता के सूत्रा में पिरोने का नाम हिंदी है: शाह.....

बंगाल के 12 पूर्व कुलपतियों ने गवर्नर के खिलाफ खेला मोर्चा; भेजा नोटिस..... 10

वर्ष : 14 | अंक : 125 | नई दिल्ली, शनिवार, 16 सितम्बर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

आदित्य एल1 ने चौथी बार सफलतापूर्वक कक्षा परिवर्तन की प्रक्रिया पूरी की: इसरो

बेंगलुरु, एजेंसी

सूर्य का अध्ययन करने के लिए भारत के पहले अंतरिक्ष-आधारित मिशन आदित्य एल1 ने शुक्रवार तड़के चौथी बार सफलतापूर्वक पृथ्वी की एक कक्षा से अन्य कक्षा में प्रवेश किया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने यह जानकारी दी। अंतरिक्ष एजेंसी से एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में कहा, ह्यह्यचौथी बार पृथ्वी की कक्षा परिवर्तन की प्रक्रिया (ईबीएन-4) को सफलतापूर्वक निष्पादित किया गया। मॉरीशस, बेंगलुरु, एसडीएससी-एसएचएआर और पोर्ट ब्लेयर में इसरो के ग्राउंड स्टेशनों ने इस अभियान के दौरान उपग्रह की निगरानी की। आदित्य एल1 की वर्तमान कक्षा 256 किलोमीटर 121973 किलोमीटर है। इसरो ने कहाः कक्षा परिवर्तन की अगली प्रक्रिया ट्रांस-लैग्रेजियन पॉइंट 1 इंसर्शन (टीएल1आई) -19 सितंबर को देर रात लगभग दो बजे निर्धारित है। आदित्य-एल1 पहली

भारतीय अंतरिक्ष-आधारित वेधशाला है जो पृथ्वी से लगभग 15 लाख किलोमीटर दूर सूर्य-पृथ्वी के पहले लैग्रेंजियन बिंदु (एल1) के चारों ओर एक प्रभामंडल कक्षा से सूर्य का अध्ययन करने वाली है। पृथ्वी की कक्षा परिवर्तन की पहली, दूसरी और तीसरी प्रक्रिया क्रमशः तीन, पांच और 10 सितंबर को सफलतापूर्वक की गई थी। पृथ्वी के चारों ओर आदित्य-एल1 की 16-दिवसीय यात्रा के दौरान यह प्रक्रिया की जा रही है, जिसके दौरान आदित्य-एल1 अपनी आगे की यात्रा के लिए आवश्यक गति प्राप्त करेगा। पृथ्वी से जुड़े कक्षा परिवर्तन की चार प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद आदित्य-एल1 अगले ट्रांस-लैग्रेंजियन1 सम्मिलन की कक्षा में प्रवेश की प्रक्रिया से गुजरेगा, जो एल1 लैग्रेंज बिंदु के आसपास गंतव्य के लिए अपने लगभग 110-दिवसीय प्रक्षेप पथ की शुरूआत करेगा। एल1 पृथ्वी और सूर्य के बीच एक संतुलित गुरुत्वाकर्षण स्थान है। उपग्रह अपना पूरा मिशन जीवन पृथ्वी और सूर्य को जोड़ने वाली रेखा के लगभग लंबवत समतल में अनियमित आकार की कक्षा में एल1 के चारों ओर परिक्रमा करते हुए बिताने वाला है। इसरो के ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी-सी57) ने दो सितंबर को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) के दूसरे प्रक्षेपण केंद्र से आदित्य-एल1 को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया था।

मौसम

अधिकतम तापमान 35.6°C

न्यूनतम तापमान 26.9°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना 61,080

चांदी 75,100

सेंसेक्स 65,953

निफ्टी 19,597

भारत को कुशल 'मल्टी-मॉडल' परिवहन प्रणाली की आवश्यकता: राष्ट्रपति मुर्मू

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि देश को एक कुशल मल्टी-मॉडल परिवहन प्रणाली की आवश्यकता है, जिसके लिए रेल, सड़क, वायु और जल परिवहन को अलग-अलग देखने के बजाय उनका समग्र नजरिए से प्रबंधन किया जाना चाहिए। मुर्मू ने यहां राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में भारतीय रेलवे की विभिन्न सेवाओं के (2019, 2020 और 2021 बैच) 213 परिवीक्षाधीन अधिकारियों के एक समूह को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी अन्य वाणिज्यिक संगठन के विपरीत रेलवे देश की एक सामाजिक जीवन रेखा है। उन्होंने कहा कि यह आम लोगों के सपनों को एक स्थान से दूसरे स्थान लेकर जाती है और साथ ही इसकी राष्ट्रव्यापी संपर्क

सुविधा देश की विविधता को दशार्ती है। मुर्मू ने कहा, देश को एक कुशल मल्टी-मॉडल परिवहन प्रणाली की आवश्यकता है, जिसके लिए रेल, सड़क, वायु और जल परिवहन को अलग-अलग देखने के बजाय उनका समग्र नजरिए से प्रबंधन किया जाना चाहिए। मुर्मू ने परिवीक्षाधीन अधिकारियों से कहा, मैं आप सभी से अन्य विभागों के अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर काम करने का आग्रह करती हूं ताकि आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र का लक्ष्य हासिल किया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व गति के साथ और बड़े पैमाने पर परिवर्तन हो रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों से सामूहिक रूप से काम करने और रेलवे को भविष्य के लिए तैयार संगठन बनाने को कहा। मुर्मू ने कहा कि रेलगाड़ियां और उनकी यात्राएं हमेशा लोगों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं। उन्होंने कहा, लोकल ट्रेन से लेकर लंबी दूरी की ट्रेन तक, रेलगाड़ी की हर यात्रा अनगिनत कहानियां बनाती है और उनकी गवाह बनती है। सार्वजनिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले ऐसे प्रतिष्ठान का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा होने के नाते आपको यह समझना चाहिए कि देश और लोगों को आपसे बहुत उम्मीदें हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि रेलवे दिन-ब-दिन अधिक ईंधन-कुशल होता जा रहा है और वह नए एवं पर्यावरण अनुकूल तरीके भी अपना रहा है। मुर्मू ने कहा, रेलवे बुनियादी ढांचे का विकास देश की सामाजिक-आर्थिक वृद्धि एवं विकास को बहुत प्रोत्साहित करता है। उन्होंने कहा कि विश्वस्तरीय सुविधाओं को शामिल करके और हरित प्रौद्योगिकी का उपयोग करके अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास करना एक महान जन-केंद्रित पहल है जो पर्यटन गतिविधियों और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देगी। राष्ट्रपति ने कहा, मुझे विश्वास है कि आज यहां मौजूद सभी प्रतिभाशाली युवा अधिकारी एक आधुनिक हरित भारतीय रेलवे और एक विकसित राष्ट्र के निर्माण में उपयोगी भूमिका निभाएंगे।

मणिपुर हिंसा: पिछले चार महीने में 175 लोगों की मौत, 1100 लोग घायल

इम्फाल, एजेंसी

मणिपुर में मई से शुरू हुई जातीय हिंसा में अब तक कम से कम 175 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 1108 लोग घायल हुए हैं और 32 लोग लापता हैं। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि इस हिंसा में कुल 4,786 मकानों को आग के हवाले किया गया और 386 धार्मिक स्थलों को नष्ट किया गया। पुलिस महानिरीक्षक (अभियान) आई के मुइवा ने कहा, मणिपुर इस समय जिस चुनौतीपूर्ण समय का सामना कर रहा है, ऐसे में हम आपको भरोसा दिला सकते हैं कि केंद्रीय बल, पुलिस और नगर निकाय प्रशासन सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए चौबीसों घंटे काम कर रहा है। मुइवा ने बृहस्पतिवार को बताया कि जो हथियार खोए थे, उनमें से 1,359 आग्नेयास्त्र और 15,050 गोला-बारूद बरामद कर लिए गए हैं। हिंसा के दौरान कथित तौर पर दंगाइयों ने बड़ी संख्या में पुलिस के हथियार और गोला-बारूद लूट लिए थे। मुइवा ने बताया कि इस दौरान आगजनी के कम से कम 5,172 मामले दर्ज किए गए और 254 गिरजाघर एवं 132 मंदिर समेत 386 धार्मिक स्थलों में तोड़-फोड़ की गई। पुलिस महानिरीक्षक (प्रशासन) के. जयंत ने बताया कि मारे गए 175 लोगों में से नौ की अब भी पहचान नहीं हो पाई है। उन्होंने कहा, 79 शवों के परिजन का पता चल गया है जबकि 96 शव लावारिस हैं। इम्फाल स्थित रिम्स (क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान संस्थान) और जेनीएमएस (जवाहरलाल नेहरू आयुर्विज्ञान संस्थान) में क्रमशः 28 और 26 शव रखे हैं, 42 शव चुराचांदपुर अस्पताल में हैं। जयंत ने बताया कि 9,332 मामले दर्ज किए गए और 325 लोगों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस महानिरीक्षक (जोन-3) निशित उज्ज्वल ने बताया कि एनएच-32 और एनएच-2 सामान्य रूप से चालू हैं। अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने की मेइती समुदाय की मांग के विरोध में पर्वतीय जिलों में जनजातीय एकजुटता मार्च के आयोजन के बाद तीन मई को राज्य में जातीय हिंसा भड़क गई थी। मणिपुर की आबादी में मेइती लोगों की आबादी लगभग 53 प्रतिशत है और वे ज्यादातर इंफाल घाटी में रहते हैं। नगा और कुकी 40 प्रतिशत से कुछ अधिक हैं और पर्वतीय जिलों में रहते हैं।

संक्षिप्त खबरें

ऑस्ट्रेलियाई राजनयिकों के हिन्दी प्रेम पर मोदी हुए मंत्रमुग्ध

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत में ऑस्ट्रेलियाई उच्चायुक्त एवं उच्चायोग के अन्य अधिकारियों के हिन्दी के प्रति प्रेम एवं हिन्दी की कहावतों एवं दोहों को सोशल मीडिया पर साझा करने की सराहना की है। भारत में ऑस्ट्रेलिया के उच्चायुक्त फिलिप ग्रीन ओआम ने ट्वीटर (अब एक्स) पर कल देर रात एक पोस्ट में एक वीडियो साझा किया है जिसमें उच्चायोग के अधिकारी अपनी पसंदीदा मुहावरे एवं दोहे कह रहे हैं। उच्चायुक्त कहते हैं -हिंदी न केवल ऑस्ट्रेलिया में, बल्कि दिल्ली स्थित हमारे राजनयिकों के बीच भी लोकप्रिय है। आज हिन्दी दिवस के अवसर पर हमारे राजनयिक अपनी पसंदीदा हिंदी कहावतें, जो उन्हें प्रेरित करती हैं आपसे साझा कर रहे हैं। बाद में उच्चायोग के अधिकारी दोहे या मुहावरे कहते हैं-काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में परलय होएगी तो बहुरि करेगो कब, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती, जैसा देश वैसा वेष, सांच को आंच नहीं और कर्म करो, फल की चिंता मत करो। श्री मोदी इस पर टिप्पणी करते हैं, आपके ये दोहे और मुहावरे मंत्रमुग्ध करने वाले हैं! ऑस्ट्रेलिया के राजनयिकों का हिन्दी के प्रति ये लगाव बेहद ही दिलचस्प है। इसके जवाब में उच्चायुक्त कहते हैं -आपके प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी। हम अभ्यास करते रहेंगे!

हिमाचल की त्रासदी को लेकर प्रियंका ने लिखा मोदी को पत्र

नई दिल्ली, एजेंसी

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर कहा है कि आपदा ने हिमाचल प्रदेश को तबाह कर दिया है और वहां पूरी तरह से पुनर्निर्माण की जरूरत है इसलिए पीड़ितों को राहत पहुंचाने के लिए इस त्रासदी को राष्ट्रीय आपदा घोषित किया जाना चाहिए। श्रीमती वाड्रा ने प्रधानमंत्री को लिखे पत्र में कहा मैं आपसे अपील करती हूँ कि इस आपदा को 2013 की केदारनाथ त्रासदी की तरह राष्ट्रीय आपदा घोषित किया जाये और पीड़ितों तथा राज्य को आर्थिक मदद पहुँचाई जाये ताकि हिमाचल के भाई-बहनों को राहत मिले और राज्य का समुचित ढंग से पुनर्निर्माण किया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य की जनता के साथ कंधा से कंधा मिलाकर त्रासदी से निपटने के लिए लगातार काम कर रही है। वहां लोग एकजुट होकर श्रमदान कर रहे हैं और चंदा जुटाकर राहत कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को राहत देने का प्रयास कर रहे हैं। आपदा से निपटने की लोगों की यह एकजुटता बहुत प्रभावित करती है और उनकी समस्याओं को इससे समझा जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस त्रासदी से पीडित हिमाचल के साथ आज पूरा देश आगे बढ़कर खड़ा हो रहा है और उन्हें उम्मीद है कि हिमाचल की जनता के प्रति संवेदनशीलता रखते हुए श्री मोदी उनकी मदद के लिए उचित कदम उठाएँगे। श्रीमती वाड्रा ने कहा, पिछले दिनों मैं शिमला, कुल्लू, मनाली और मंडी में आपदा पीड़ितों से मिली। हर तरफ हुई तबाही देखकर बहुत दुःख हुआ। अब तक इस आपदा में 428 लोगों ने जान गँवाई है। कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने सभी परिजन इस

आपदा में खो दिए। मृतकों में छोटे बच्चे भी शामिल हैं, जो अपनी माताओं के साथ सावन के अंतिम सोमवार को सुबह-सुबह शिव मंदिर में पूजा करने गए थे। राज्य में 16,000 से ज्यादा पशु-पक्षी मारे गये हैं जिनमें 10,000 से अधिक पोल्ट्री बर्ड और 6,000 से अधिक गाय, भैंसे तथा अन्य पालतू जानवर हैं। इसमें 13,000 से ज्यादा घर और मकान पूरी तरह या आंशिक रूप क्षतिग्रस्त हुए हैं। शिमला से परवाणू राष्ट्रीय राजमार्ग और कुल्लू-मनाली-लेह राजमार्ग के बड़े-बड़े हिस्से पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये हैं। राज्य की अनेक सड़कें पूर्णतः या अंशतः टूट चुकी हैं। प्रदेश को हजारों करोड़ का नुकसान हुआ है। उन्होंने इस बात पर हैरानी जताई कि इस त्रासदी में जब हिमाचल की जनता मदद की उम्मीद में चारों ओर देख रही है, उसी समय केंद्र सरकार द्वारा विदेशी सेब पर आयात कर घटाने से हिमाचल के सेब किसानों और बागबानों पर दोहरी आर्थिक मार पड़ेगी। श्रीमती वाड्रा ने कहा, मेरी समझ में, इस मुश्किल वक्त में किसानों को ऐसी चोट नहीं देनी चाहिए बल्कि केंद्र सरकार की ओर से हिमाचल के किसानों को किसी भी तरह की आर्थिक मदद मिल पाये तो उन्हें सहूलियत मिलेगी।

'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के पहले चरण में स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित 2.33 लाख से अधिक शिलाफलकम् स्थापित

नई दिल्ली, एजेंसी

"मेरी माटी मेरा देश" अभियान के पहले चरण में देश के 36 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में स्वतंत्रता सेनानियों और सुरक्षा बलों को समर्पित 2.33 लाख से अधिक शिलाफलकम् स्थापित किए जा चुके हैं। शुक्रवार को संस्कृति मंत्रालय ने बताया कि अब तक लगभग 4 करोड़ पंच प्रण प्रतिज्ञा सेल्फी वेबसाइट पर अपलोड की जा चुकी हैं। देश भर में 2 लाख से अधिक बहादुर अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। वसुधा वंदन थीम के तहत 2.36 करोड़ से अधिक स्वदेशी पौधे लगाए गए हैं और 2.63 लाख अमृत वाटिकाएं बनाई गई हैं। मंत्रालय के अनुसार यह अभियान देश भर में अमृत कलश यात्राओं की योजना के साथ अपने दूसरे चरण में प्रवेश करने के लिए पूरी तरह तैयार है। इस अभियान का उद्देश्य देश के हर घर तक पहुंचना है। भारत भर के ग्रामीण क्षेत्रों के 6 लाख से अधिक गांवों और शहरी क्षेत्रों के वार्डों से मिट्टी और चावल के दाने एकत्र किए जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में इसे ब्लॉक स्तर पर जोड़कर ब्लॉक स्तरीय कलश बनाया जाएगा। राज्य की राजधानी से औपचारिक विदाई के बाद ये कलश राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए दिल्ली आएंगे। शहरी क्षेत्रों में मिट्टी को वार्डों से एकत्र किया जा रहा है और राज्य की राजधानी के माध्यम से दिल्ली में मिश्रण और परिवहन के लिए बड़े शहरी स्थानीय निकायों में लाया जा रहा है। उम्मीद है कि अंतिम कार्यक्रम के लिए अक्टूबर के अंत तक 8500 से अधिक कलश दिल्ली पहुंचेंगे। भारत के सभी कोनों से एकत्र की गई मिट्टी को अमृत वाटिका और अमृत स्मारक में रखा जाएगा, जिससे आजादी का अमृत महोत्सव मनाने की विरासत तैयार होगी। उल्लेखनीय है कि देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों को श्रद्धांजलि देने के लिए 9 अगस्त, 2023 को एक राष्ट्रव्यापी अभियान मेरी माटी मेरा देश शुरू किया गया था। यह अभियान 'आजादी का अमृत महोत्सव' का समापन कार्यक्रम है, जो 12 मार्च, 2021 को शुरू हुआ और पूरे भारत में 2 लाख से अधिक कार्यक्रमों के साथ व्यापक सार्वजनिक भागीदारी (जनभागीदारी) देखी गई है।

संस्थाओं का गला घोंटकर लोकतंत्र पर प्रणालीगत हमला: खड़गे

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस पर कहा कि हाल के दिनों में हमारे संविधान निमार्ताओं द्वारा कड़ी मेहनत से बनाई गई संस्थाओं का गला घोंटकर लोकतंत्र पर प्रणालीगत हमला किया गया है। उन्होंने लोगों से संसदीय लोकतंत्र के लोकाचार की रक्षा करने का संकल्प लेने का आग्रह किया। एक्स पर एक पोस्ट में खड़गे ने पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की पंक्तियों को उद्धृत किया कि ₹लोकतंत्र का अर्थ है सहिष्णुता, सहिष्णुता न केवल उन लोगों के लिए जो हमसे सहमत हैं, बल्कि उनके लिए भी जो हमसे सहमत नहीं हैं। भाजपा का नाम लिए बिना उस पर निशाना साधते हुए खड़गे ने कहा, "लोगों की इच्छा और जिन संस्थानों को बनाने में वह मदद करती है, वे लोकतंत्र को फलने-फूलने में सक्षम बनाते हैं। हाल के दिनों में, हमारे संस्थानों का गला घोंटकर लोकतंत्र पर एक प्रणालीगत हमला किया गया है, जिसे हमारे संविधान के निमार्ताओं ने बड़ी मेहनत से बनाया है।" राज्यसभा में विपक्ष के नेता ने कहा, अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस पर, आइए हम अपने स्वतंत्र संस्थानों में निहित हमारे संसदीय लोकतंत्र के लोकाचार की रक्षा और संरक्षण का संकल्प लें। उनकी टिप्पणी 18 से 22 सितंबर तक संसद के पांच दिवसीय विशेष सत्र से पहले आई है। कांग्रेस ने पहले विपक्ष को संसद में बोलने की अनुमति नहीं देने के लिए सरकार पर निशाना साधा था।

महादेव सट्टेबाजी मामला: ईडी ने 417 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी मामले में 417 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त और फ्रीज कर ली है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने आरोप लगाया कि दुबई से संचालित यह कंपनी नए उपयोगकताओं को जोड़ने, उपयोगकर्ता आईडी (पहचान पत्र) बनाने तथा कई बेनामी बैंक खातों के जरिए धन शोधन करने के लिए ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप्लिकेशन का उपयोग करती थी। कंपनी के प्रवर्तक सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल हैं। एजेंसी ने एक बयान में आरोप लगाया, ईडी ने हाल में कोलकाता, भोपाल, मुंबई आदि शहरों में महादेव एपीपी से जुड़े धन शोधन नेटवर्क के खिलाफ व्यापक स्तर पर छापेमारी की थी। उसने इस दौरान कई सबूत एकत्र किए और अपराध से अर्जित 417 करोड़ रुपये की राशि जब्त/फ्रीज की गई है। अधिकारियों ने कहा कि ईडी की जांच से पता चला है कि महादेव ऑनलाइन बुक ऐप संयुक्त अरब अमीरात स्थित केंद्रीय मुख्यालय से संचालित होती है। ईडी ने कहा कि यह अपने ज्ञात सहयोगियों को 70-30 प्रतिशत लाभ अनुपात पर पैनल/शाखाओं की फ्रेंचाइजी देकर काम करती है। एजेंसी ने कहा कि सट्टेबाजी की आय को विदेशी खातों में भेजने के लिए बड़े पैमाने पर हवाला संचालन किए जाते हैं। ईडी ने कहा कि नए उपयोगकताओं और फ्रेंचाइजी (पैनल) चाहने वालों को आकर्षित करने के लिए सट्टेबाजी वेबसाइट के विज्ञापन को लेकर भारत में नकद में भी बड़ा खर्च किया जा रहा है। कंपनी के प्रवर्तक छत्तीसगढ़ के भिलाई के रहने वाले हैं और महादेव ऑनलाइन बुक बेटिंग ऐप्लिकेशन अवैध सट्टेबाजी वेबसाइट के लिए ऑनलाइन मंच की व्यवस्था करने वाला एक प्रमुख माध्यम है।

चुनावों की रणनीति लोकसभा और विधानसभा चुनावों की रणनीति पर होगा जोर.....

कांग्रेस की नई कार्य समिति की शनिवार को पहली बैठक

हैदराबाद, एजेंसी

कांग्रेस की नई कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की पहली बैठक कल यानी शनिवार को यहां होगी जिसमें आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर आगे की रणनीति, विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) की एकजुटता को आगे ले जाने, आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों तथा कई अन्य विषयों पर चर्चा होगी। कांग्रेस ने गत 20 अगस्त को अपनी कार्य समिति का पुनर्गठन किया था जिसमें पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के साथ पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और राहुल गांधी समेत कई वरिष्ठ नेता शामिल हैं। कार्य समिति में 39 सदस्य, 32 स्थायी आमंत्रित सदस्य और 13 विशेष आमंत्रित सदस्य शामिल किए गए हैं। इस कार्य समिति में सचिन पायलट और शशि थरूर जैसे नेताओं को पहली बार जगह मिली है। कांग्रेस कार्य समिति की बैठक 16 सितंबर को होगी और फिर इसके अगले दिन विस्तारित कार्य समिति की बैठक होगी। विस्तारित कार्य समिति की बैठक में कार्य समिति के सभी सदस्यों के अलावा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और कई अन्य वरिष्ठ नेता भाग लेंगे। कार्य समिति की बैठक के बाद 17 सितंबर को हैदराबाद के निकट एक जनसभा भी होगी जिसे पार्टी के शीर्ष नेता

संबोधित करेंगे। सूत्रों का कहना है कि इसमें आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर सरकार को घेरने की रणनीति, विपक्षी गठबंधन इंडिया की एकजुटता को आगे ले जाने, संगठन को मजबूत करने तथा कई अन्य विषयों पर चर्चा होगी। सूत्रों ने यह भी बताया कि भारत जोड़ो यात्रा के दूसरे चरण को लेकर भी इस कार्य समिति में चर्चा हो सकती है। माना जा रहा है कि कार्य समिति की बैठक, जनसभा और मार्च के जरिये कांग्रेस तेलंगाना विधानसभा चुनाव के लिए अपने प्रचार अभियान का विधिवत आगाज करेगी। राज्य में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित है। कांग्रेस कार्य समिति की बैठक ऐसे समय होने जा रही है जब उसने और दो दर्जन से अधिक विपक्षी दलों ने मिलकर विपक्षी गठबंधन इंडिया का गठन किया है। इंडिया के घटक दलों ने फैसला किया है कि वे अगला लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ेंगे और जहां तक संभव हो सकेगा सीटों पर तालमेल करेंगे। सूत्रों का कहना है कि कार्य समिति की बैठक में इंडिया गठबंधन को और मजबूत करने को लेकर चर्चा हो सकती है। कार्य समिति की इस बैठक में कुछ महीने बाद पांच राज्यों- मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारी को लेकर भी मंथन होगा। कांग्रेस की कोशिश है कि इन राज्यों के विधानसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करके लोकसभा चुनाव के लिए अपनी दावेदारी को और मजबूत किया जाए। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस कार्य समिति की इस बैठक में महंगाई, बेरोजगारी, अर्थव्यवस्था की स्थिति, चीन के साथ सीमा पर तनाव और कथित भ्रष्टाचार के मुद्दों पर सरकार को घेरने की रणनीति पर भी चर्चा हो सकती है।

यूएस नगर और हरिद्वार में बाढ़ से निपटने में विफल रही सरकार : माहरा

काशीपुर, एजेंसी। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार ने जनता का विश्वास खो दिया है। उन्होंने सरकार पर ऊधमसिंह नगर व हरिद्वार में बाढ़ से निपटने में विफल और निकाय चुनाव टालने का आरोप लगाया। मुरादाबाद रोड स्थित एक होटल में पत्रकार वार्ता के दौरान माहरा ने कहा कि राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस लोकसभा चुनावों में उतरेगी। उन्होंने मणिपुर हिंसा और विदेशी धरती पर भारतीय खिलाड़ियों के अपमान पर मोदी सरकार की चुप्पी को शर्मनाक बताया। माहराने कहा कि अग्निवीर भर्ती में हरियाणा, पंजाब और उत्तराखंड के युवाओं के हितों से खिलवाड़ किया गया है। उत्तराखंड की आर्थिकी कमजोर हो रही है और पलायन बढ़ रहा है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा ने कहा कि अनियोजित विकास के चलते पूरे देहरादून को खोद दिया गया है। जगह जगह गड्ढों में पानी भरने से डेंगू तेजी से फैल रहा है। राज्य में डेंगू के 12 हजार से अधिक केस हैं। इनमें से एक हजार केस काशीपुर से ही हैं। फिर भी सरकार आंखें मूंदे है। केदारधाम से सोना चोरी होने की घटना में सरकार की भूमिका पर भी सवाल उठाए हैं। वहां जसपुर विधायक आदेश चौहान, मुशर्रफ हुसैन, राशिद फारूकी, राजू छीना, मो. हनीफ आदि थे।

डंपर की चपेट में आकर नानकमत्ता जा रहे बाइक सवार दो दोस्तों की मौत

रुद्रपुर, एजेंसी। दोनों युवक दोस्त थे। वे नानकमत्ता जा रहे थे। इसी दौरान किच्छा में पुल भट्टा के पास एक डंपर ने बाइक को टक्कर मार दी। उत्तराखंड के रुद्रपुर में बुधवार शाम दर्दनाक हादसा हो गया। रुद्रपुर से नानकमत्ता जा रहे बाइक सवार दो युवकों की डंपर की चपेट में आकर मौत हो गई। दोनों की मौत से परिवार में कोहराम मचा हुआ है। पुलिस ने आरोपी चालक को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार, दोनों युवक जीत भट्ट (17) और खेड़ा निवासी विकास (21) शाम को नानकमता जा रहे थे। इसी दौरान किच्छा में पुल भट्टा के पास एक डंपर ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर लगने से युवक डंपर की चपेट में आ गए और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों में से जीत पीएसी के जवान महेश का बेटा था। बताया जा रहा है कि दोनों में से किसी ने भी हेलमेट नहीं पहना था।

तीनपानी से इंडियन ऑयल डिपो लालकुआं तक बनेगी डेढ़ लाइन सड़क

हल्द्वानी, एजेंसी। तीनपानी बाइपास से इंडियन ऑयल डिपो लालकुआं तक 14 किलोमीटर डेढ़ लाइन सड़क बनाई जाएगी। वन भूमि हस्तांतरण के बाद क्षतिपूरक वन और एनपीबी के लिए शासन से लोनिवि को 2.68 करोड़ रुपये मिल गए हैं। दो दिन में यह पैसा वन विभाग के खाते में हस्तांतरित हो जाएगा। उधर, वन भूमि मिलने के बाद लोनिवि ने सड़क का डिजायन और डीपीआर बनाने का काम भी शुरू कर दिया है। सितंबर अंतिम सप्ताह में डीपीआर शासन को भेज दी जाएगी। लोनिवि के अधिशासी अभियंता अशोक कुमार ने बताया कि शासन ने क्षतिपूरक वन और एनपीबी के 2.68 करोड़ रुपये जारी कर दिए हैं। दो दिन में यह बजट वन विभाग के खाते में भेज दिया जाएगा। इसके बाद वन विभाग भूमि का चिह्नीकरण कर लोनिवि को हस्तांतरित करेगा। इसके बाद पेड़ों की गिनती शुरू होगी।

150 में खरीदनी पड़ रही 40 रुपये की एंटी रैबीज वैक्सीन

हल्द्वानी, एजेंसी। पशु चिकित्सालय में पशुओं को लगाई जाने वाली एंटी रैबीज वैक्सीन एक महीने से खत्म है। लोग निजी स्टोर से चार गुना अधिक दाम पर वैक्सीन खरीदने को मजबूर हैं। घरों में पालतू जानवर होना आम बात है। ऐसे में स्वयं और जानवर के स्वास्थ्य को लेकर सजगता भी जरूरी है। पालतू जानवरों को साल में एक बार एंटी रैबीज वैक्सीन जरूर लगवानी चाहिए। इससे कुत्ते, बिल्ली के काटने पर रैबीज का खतरा कम हो जाता है। सरकारी अस्पतालों में 40 रुपये वैक्सीन लग जाती है। कालाढूंगी रोड स्थित पशु चिकित्सालय में अगस्त से एंटी रैबीज खत्म है। ऐसे में लोगों को मेडिकल स्टोर से 150 रुपये एंटी रैबीज खरीदनी पड़ रही है। पशु चिकित्साधिकारी डॉ. आरके पाठक ने बताया कि पशु चिकित्सालय में एंटी रैबीज उपलब्ध होने पर जानवरों को लगाई जाती है। कुछ समय से स्टॉक में नहीं है।

ऑक्सीजन की कमी से हुई मछलियों की मौत

रुद्रपुर/शांतिपुरी, एजेंसी। धौराडैम में ऑक्सीजन की कमी से मंगलवार को 60 क्विंटल मछलियां मरी मिलीं। इससे पहले बौर हरिपुरा जलाशय में भी ऑक्सीजन की कमी से मछलियों की मौत हुई थी। शांतिपुरी क्षेत्र के नजीबाबाद इलाके में स्थित धौराडैम में मरी मछलियों को देखने के लिए भीड़ जुट गई थी। डैम के ठेकेदार ने मत्स्य विभाग को सूचना दी थी। इसलिए मत्स्य विभाग के सहायक निदेशक संजय छिम्वाल बुधवार को मौके पर गए। उनकी सूचना पर पंतनगर विवि के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय की पांच सदस्यीय टीम ने भी मौका मुआयना कर घटना की जांच की। सहायक निदेशक छिम्वाल ने बताया कि अब वहां ऑक्सीजन का स्तर सामान्य है। मरी मछलियों को डाम से हटा दिया गया है। वहीं मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय पंतनगर के डॉ. आशुतोष मिश्रा ने बताया कि डैम में ऑक्सीजन का स्तर पानी की ऊपरी सतह पर पांच मिलीग्राम और निचली सतह पर मात्र 0.2-0.3 मिलीग्राम प्रति लीटर था। भारी बारिश में निचली सतह का पानी ऊपर आने के कारण ऑक्सीजन की मात्रा कम होने से मछलियों की मृत्यु होने की आशंका है। परीक्षण के लिए पानी और मृत मछलियों के नमूने एकत्र कर जांच के लिए भेजे गए हैं।

न्यायालय ने बीमा कंपनी को हाउस लोन ब्याज समेत भुगतान के दिए आदेश

काशीपुर, एजेंसी। पति की मौत के बाद बीमा कंपनी ने बीमित हाउसिंग लोन का भुगतान पीड़िता को करने से मना कर दिया। इस पर महिला ने स्थायी लोक अदालत में चुनौती दी। न्यायालय ने इंश्योरेंस कंपनी को ब्याज सहित लोन का भुगतान करने के आदेश दिए। लक्ष्मीपुर पट्टी निवासी हरि सिंह ने एक हाउसिंग फाइनेंस कंपनी से 14,82,818 रुपये का आवासीय लोन लिया था। उसने लोन का रिस्क कवर कराने के लिए बीमा कराया था, जिसका प्रीमियम 12,311 रुपये अदा किया गया था। दो जनवरी 2019 को हरि सिंह की मौत हो गई। इंश्योरेंस कंपनी ने हरि सिंह की मौत आत्महत्या का कारण मानते हुए क्लेम का भुगतान देने से मना कर दिया। मृतक की पत्नी लक्ष्मी देवी ने अपने अधिवक्ता अरविंद कुमार शर्मा के माध्यम से स्थायी लोक अदालत में वाद दायर कर कहा कि उसके पति की मौत स्वाभाविक रूप से हुई है। ऐसे में बीमा कंपनी हाउसिंग लोन का भुगतान करने से मना नहीं कर सकती है। स्थायी लोक अदालत के अध्यक्ष बृजेंद्र सिंह, सदस्य अब्दुल नसीम और अर्चना पीयूष पंत ने अधिवक्ता अरविंद कुमार शर्मा के तर्कों को सुना। इससे सहमत होकर न्यायालय ने कंपनी को हाउसिंग लोन का भुगतान मय ब्याज करने के आदेश दिए हैं।

अल्मोड़ा में भारी बारिश से सड़कों पर जलभराव, सड़कों पर मलवा आने से यात्री परेशान

अल्मोड़ा, एजेंसी।
जिले में दो दिन के बाद फिर से मौसम ने करवट बदली। पूरे दिन धूप खिलने के बाद देर शाम भारी बारिश हुई। सड़कों और रास्तों पर जलभराव हो गया। वहीं अल्मोड़ा-पिथौरागढ़ हाईवे पर पनुवानौला से आरतोला के बीच निर्माणाधीन कलमठों में मलबा जमा होने से वाहन फंसे रहे और यात्रियों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ा।

दो घंटे तक हुई भारी बारिश के बाद नदी-नाले उफान पर आ गए। सड़कों और रास्तों पर जलभराव होने से लोगों को दिक्कत झेलनी पड़ी। सबसे अधिक परेशानी अल्मोड़ा-पिथौरागढ़ हाईवे पर यात्रियों और वाहन चालकों को हुई। पनुवानौला से आरतोला के बीच जगह-जगह कममठों का निर्माण हो रहा है। बारिश के बाद इनके आसपास जमा मलबे ने कीचड़ का रूप ले लिया, इसमें वाहन फंस गए। आरतोला के पास वाहन फंसने से आवाजाही ठप हो गई और सड़क के दोनों तरफ बड़ी संख्या में वाहन फंसे रहे। यात्री वाहनों को धक्का देकर मलबे से बाहर निकालने में जुटे रहे, लेकिन उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली। सूचना के बाद एनएच ने मौके पर जेसीबी भेजकर मलबा हटाया और वाहनों की आवाजाही शुरू कराई। करीब डेढ़ घंटे बाद आवाजाही शुरू होने पर यात्रियों और वाहन चालकों ने राहत की सांस ली।

नगर के पास रानीधारा सड़क पर बारिश का पानी नाले के रूप में बहने लगा। इस वजह से सड़क पर आवाजाही ठप हो गई। इस दौरान लोगों का पैदल चलना भी दूभर हो गया। बारिश थमने के बाद पानी कम हुआ तो किसी तरह आवाजाही शुरू हुई।

जिले में आयोजित सम्मेलन में शामिल होने पिथौरागढ़ और चंपावत के भाजपा कार्यकर्ता बड़ी संख्या में पहुंचे थे। सम्मेलन के बाद सभी यहां से रवाना हुए। लेकिन बारिश के बाद अल्मोड़ा-पिथौरागढ़ हाईवे पर मलबे आने से आवाजाही ठप हो गई और भाजपा कार्यकर्ता भी घंटों फंसे रहे।

जिले में एक बार फिर मौसम का मिजाज बदला। तेज गर्जना और हवा के साथ झमाझम बारिश हुई। बारिश के बीच कौसानी मोटर मार्ग पर भूस्खलन से कई घंटे तक यातायात ठप रहा। कपकोट के गुलम परगड़ गांव में एक मकान ध्वस्त हो गया है।

बृहस्पतिवार की सुबह आसमान में हल्के बादल थे। दिन चढ़ने के साथ ही धूप निकल आई। दोपहर बाद फिर से बादल घिरने लगे और शाम होने तक बिजली चमकने लगी। तेज हवा और गड़गडाहट के बाद बारिश शुरू हो गई। इधर दोपहर बाद कौसानी रोड पर अचानक भूस्खलन हुआ और चीड़ का पेड़ गिर गया। जिसके चलते सड़क पर यातायात बाधित हो गया। बागेश्वर और अल्मोड़ा से आवाजाही करने वाले वाहनों को कई घंटे जाम का सामना करना पड़ा। विभाग ने जेसीबी भेजकर मलबा हटाया और पेड़ को काटकर यातायात सुचारु करवाया।

वहीं कपकोट के गुलम परगड़ गांव में बारिश से भीम सिंह पपोला पुत्र जशोद सिंह का मकान क्षतिग्रस्त हो गया है। जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी शिखा सुयाल ने बताया कि प्रभावित को हुए नुकसान की जानकारी जुटाई जा रही है।

पंजाब के ब्यास के लिए चलेगी दो विशेष ट्रेन

रुद्रपुर, एजेंसी। राधा स्वामी सत्संग ब्यास की संगत के लिए अच्छी खबर है। रेलवे 29, 30 सितंबर और चार अक्तूबर को ब्यास-रुद्रपुर सिटी-ब्यास गाड़ी का संचालन करेगा। ब्यास और रुद्रपुर से यह विशेष ट्रेन फिलहाल दो-दो बार ही चलेगी। यह पहली बार होगा जब रुद्रपुर स्टेशन से किसी ट्रेन का सीधा संचालन होगा। विशेष ट्रेन के संचालन के बाद अब रुद्रपुर से विभिन्न जगहों के लिए ट्रेन संचालन की उम्मीद जगी है।

जिले में बड़ी संख्या राधा स्वामी सत्संग ब्यास के अनुयायी हैं। इस कारण बड़ी संख्या में अनुयायी पंजाब के ब्यास स्थित राधा स्वामी मुख्यालय में जाते हैं। वह पंजाब के ब्यास, अमृतसर के लिए ट्रेन शुरू करने की मांग करते रहे हैं। अब रेलवे विभाग ने विशेष ट्रेन चलाने का फैसला लेकर इसके संचालन की समय सारिणी भी जारी कर दी है। सबसे खास बात है कि रुद्रपुर सिटी स्टेशन से पहली बार किसी ट्रेन का सीधा संचालन होगा। इन दोनों गाड़ियों में साधारण द्वितीय श्रेणी के 22 और एसएलआर के दो कोच लगाए जाएंगे।

पूर्वोत्तर रेलवे के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक रोहित गुप्ता ने बताया कि इस विशेष ट्रेन का संचालन उत्तर रेलवे कर रही है। अगर इसकी मांग रही तो इसे नियमित भी किया जा सकता है।

विद्यार्थियों ने अपने अभिनय से दर्शकों का मन मोहा

रानीखेत, एजेंसी।
जीडी बिड़ला मेमोरियल स्कूल में बृहस्पतिवार को अंतर सदनीय हास्य नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विद्यालय के चार सदनों की टीमों ने भाग लिया। इस दौरान फ्री स्टाइल गवाही, यमराज सभा, अंधेर नगरी चौपट राजा, रेलवे पूछताछ पर आधारित हास्य नाटक प्रस्तुत किए गए। प्रधानाचार्य आसिम अली ने बताया कि प्रतिभागियों को 16 सितंबर को पुरस्कृत किया जाएगा। यहां मिथिलेश मिश्रा, अनंता अग्रवाल, शालिनी शर्मा आदि मौजूद रहे।

एसएसजे परिसर के सिमकनी मैदान में एनसीसी कैडेट्स भर्ती परीक्षा आयोजित हुई। छात्राओं का साक्षात्कार और शारीरिक दक्षता के बाद उनकी लिखित परीक्षा कराई गई।

बृहस्पतिवार को हुई भर्ती परीक्षा में 64 छात्राओं ने भाग लिया। इस दौरान उनका साक्षात्कार हुआ और नापतौल की गई। एनसीसी लेफ्टिनेंट डॉ. ममता पंत ने बताया कि जल्द ही भर्ती का परिणाम घोषित किया जाएगा। इस दौरान कमान अधिकारी कर्नल एमके कांडपाल, सूबेदार मेजर शिव सिंह, सविता, सीनियर अंडर ऑफिसर प्रियांशी भाकुनी, अंडर ऑफिसर संगीता तिवारी, सीनियर सार्जेंट किरन चौहान, सार्जेंट माला गुप्ता आदि मौजूद रहे।

रोडवेज बस में यात्रियों की सुरक्षा भगवान भरोसे

काशीपुर, एजेंसी।
परिवहन निगम यात्रियों की सुरक्षा को लेकर संजीदा नहीं है। काशीपुर डिपो की कई बस में न तो फर्स्टएड बॉक्स मिले और न ही आग बुझाने वाले यंत्र। इस दौरान यात्री रोडवेज बस में जान जोखिम में डालकर यात्रा करने के लिए मजबूर हैं। इसके बावजूद विभागीय अधिकारी कोई ठोस कदम नहीं उठा रहे हैं जबकि बस में दुर्घटना की आशंका रहती है।

संवाद न्यूज एजेंसी की टीम ने बृहस्पतिवार को रोडवेज डिपो की बस में सुरक्षा मानकों की पड़ताल की। इस दौरान डिपो की दिल्ली और अन्य रूट पर जाने वाली कई बस में देखा जिसमें आग बुझाने वाले यंत्र और फर्स्टएड बॉक्स नहीं मिला। बस के परिचालक-चालकों ने बताया कि डिपो की पुरानी बस में अग्निशामक नहीं लगे हैं। अधिकतर अग्नि सुरक्षा यंत्र चालक सीट के पीछे या मुख्य दरवाजे से सटा कर लगाए जाते हैं। बस में फर्स्टएड किट खाली है। इस कारण रोडवेज बस सुरक्षा मानकों को ताक पर रखकर चल रहीं हैं।

डिपो की कार्यशाला में दिन में कई बस ठीक की जातीं हैं। वहां वेल्डिंग मशीन समेत कई प्रकार की मशीन लगी हैं। ऐसे में सुरक्षा के लिहाज से यहां अग्निशामक उपलब्ध होने चाहिए लेकिन वहां महज शोपीस के तौर पर दीवार पर टंगा बेहद पुराना अग्निशामक मिला। इस कार्यशाला में पांच-छह साल पहले आग की घटना हो चुकी हैं। इसके बावजूद सुरक्षा यंत्रों को नहीं भरवाया गया।

किसानों ने लगाया जमीन को खुर्दबुर्द करने का आरोप

बहादराबाद, एजेंसी। किसान संघर्ष समिति के बैनर तले धीरवाली ज्वालापुर के किसानों ने अपनी मांगों को लेकर जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन किया। समिति अध्यक्ष बलवंत सिंह चौहान ने कहा कि भेल रानीपुर और सिडकुल की बांसोंवाली में किसानों की हजारों बीघा जमीन को सरकार खुर्द बुर्द करने की तैयारी में है। इसे वह किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे। जिलाधिकारी को सौंपे ज्ञापन में किसानों ने कहा कि वह अपनी जमीन वापस लेने के लिए 16 वर्षों से संघर्ष कर रहे हैं। इस पर कोई पहल नहीं की जा रही।

हड़बड़ाहट में चलती ट्रेन से उतर गई महिला, जीआरपी जवान की सतर्कता से बच पाई जिंदगी

नैनीताल, एजेंसी।
हड़बड़ाहट में एक महिला ने चलती ट्रेन से उतरने के कोशिश की, लेकिन ट्रेन के दरवाजे के पास वह लटक गईं। महिला को ट्रेन और प्लेटफार्म के बीच लटका देख जीआरपी जवानों ने ट्रेन की ओर दौड़ लगाई।

काठगोदाम रेलवे स्टेशन पर एक महिला की जिंदगी अपनी सतर्कता से जीआरपी के हेड कांस्टेबल ने बचा ली। कुछ पल की भी देर होती तो महिला के साथ अनहोनी हो सकती थी। दमुवाढूंगा के शिवपुरी निवासी आनंदी देवी (40) काठगोदाम रेलवे स्टेशन पर पति मोहन राम के साथ भांजे और उसके परिवार को काठगोदाम-लखनऊ एक्सप्रेस में बैठाने पहुंचीं। वह ट्रेन में सीट तक बैठाने पहुंच गईं। ट्रेन अपने नियत समय 11:15 पर हल्द्वानी के लिए चल दी। हड़बड़ाहट में आनंदी ने चलती ट्रेन से उतरने के कोशिश की, लेकिन ट्रेन के दरवाजे के पास वह लटक गईं। महिला को ट्रेन और प्लेटफार्म के बीच लटका देख जीआरपी जवानों ने ट्रेन की ओर दौड़ लगाई। हेड कांस्टेबल अनिल कुमार ने ट्रेन और प्लेटफार्म के बीच लटकी महिला का हाथ पकड़कर प्लेटफार्म पर खींचने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं हुए। इस बीच ट्रेन ने गति बढ़ाई तो अनिल ने दौड़ लगाई और महिला को प्लेटफार्म पर सुरक्षित खींचने में कामयाब हो गए। इस बीच ट्रेन भी रुकी तो महिला के पति मोहन राम उतरे और पत्नी का हालचाल जाना। उन्होंने जीआरपी के जवान का आभार जताया। काठगोदाम जीआरपी थानाध्यक्ष रमेश सिंह नेगी ने बताया कि जीआरपी की मुस्तैदी से अनहोनी टल गई। महिला पूरी तरह सुरक्षित है।

दूसरे की संपत्ति को अपनी बताकर हड़पे 36.40 लाख

काशीपुर, एजेंसी।
दूसरे व्यक्ति की संपत्ति को अपनी बताकर प्रॉपर्टी डीलर ने एक व्यक्ति से 36,40,000 रुपये हड़प लिए। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने आरोपी दंपती के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज किया है।

कोतवाली क्षेत्र के गौतमनगर इंदिरानगर कॉलोनी टांडा उज्जैन निवासी रमेश सिंह चौहान ने न्यायालय में प्रार्थना पत्र सौंपा। इसमें बताया कि उसने रॉयल इंक्लेव निवासी मनोज कुमार गुप्ता और उसकी पत्नी अंजू गुप्ता से खड़कपुर देवीपुरा में स्थित एक संपत्ति का सौदा 36,40,000 रुपये में तय किया था। इसलिए फरवरी-मार्च 2022 में उसने सारी रकम उनके खाते में स्थानांतरित कर दी।

इसके बाद दोनों प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री कराने के लिए टालमटोल करते रहे। जानकारी करने पर पता चला कि बेची गई संपत्ति गोपाल सिंह बिष्ट की है। पुलिस में सुनवाई न होने पर उन्होंने न्यायालय में अर्जी दी। कोर्ट के आदेश पर आईटीआई थाना पुलिस ने आरोपी दंपती के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जिला आबकारी कार्यालय परिसर में हरियाणा मार्का शराब के साथ जब्त किए गए ट्रैक्टर के चोरी होने के मामले में नामजद पीआरडी के पूर्व जवान धर्मवीर के विरुद्ध न्यायालय ने गैर जमानती वारंट जारी किया है। उससे पूछताछ के बाद पुलिस इस मामले में कुछ और लोगों को गिरफ्तार कर सकती है। ट्रैक्टर चोरी के मामले में पुलिस छह लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है। इस अपराध में किसी गिरोह के शामिल होने की आशंका है।

नहाने गया युवक बैराज में डूबा

किच्छा, एजेंसी। खुरपिया फार्म से डैम पर नहाने गए पांच युवकों में एक की डूबने से मौत हो गई। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर कार्रवाई में जुटी है।

खुरपिया फार्म निवासी नितिश ढाली (19) पुत्र निखिल ढाली अपने दोस्तों के साथ बृहस्पतिवार दोपहर किच्छा बैराज पर नहाने गया था। बताया जा रहा है कि उसके चार दोस्त एक ओर थे, जबकि नितिश दूसरी ओर निकल गया। वहां पानी गहरा होने के कारण नितिश डूब गया। इस पर दोस्त शोर मचाने लगे। सूचना पर एनडीआरएफ ने मौके पर पहुंचकर देर शाम नितिश का शव बरामद कर लिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया है।

मोहल्ला मझरा अल्ली खां निवासी राशिद (28) पुत्र फुरकान का स्वास्थ्य खराब होने पर परिजन उसे एलडी भट्ट अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर ने उसकी हालत नाजुक होने पर हायर सेंटर रेफर कर दिया। परिजन उसे एंबुलेंस से लेकर जा रहे थे कि रामनगर रोड स्थित एक निजी अस्पताल के सामने उसने दम तोड़ दिया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शव घर ले गए। बुधवार को परिजन तबियत खराब होने पर सरकारी अस्पताल लेकर पहुंचे थे। ओएसटी केंद्र की चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुचेता सिंह ने बताया कि मृतक इंजेक्शन से नशा करता था। मृतक सात मई 2019 से केंद्र से नशा छोड़ने की दवा खा रहा था। करीब एक सप्ताह से दवाई खाने नहीं आ रहा था।

मिनिस्टीरियल कर्मचारियों के पक्ष में आया फैसला, एक जनवरी 2013 से देना होगा ग्रेड वेतन का लाभ

नैनीताल, एजेंसी।
एकलपीठ ने कर्मचारियों के पक्ष में निर्णय देते हुए कर्मचारियों को एक जनवरी 2013 से यह लाभ देने के निर्देश दिए थे। एकलपीठ के इस आदेश के खिलाफ सरकार ने हाईकोर्ट में स्पेशल अपील दायर कर चुनौती दी थी।

अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत तृतीय संवर्ग के मिनिस्टीरियल कर्मचारियों को ग्रेड वेतन का लाभ सरकार को एक जनवरी 2013 से ही देना होगा। मुख्य न्यायाधीश विपिन सांघी एवं न्यायमूर्ति आलोक कुमार वर्मा की खंडपीठ ने हाईकोर्ट की एकलपीठ का आदेश बरकरार रखते हुए प्रदेश सरकार की स्पेशल अपील खारिज कर दी है। सरकार ने हाईकोर्ट में स्पेशल अपील दायर कर एकलपीठ के तृतीय संवर्ग में कार्यरत कर्मचारियों को ग्रेड वेतन का लाभ एक जनवरी 2013 से देने के आदेश को चुनौती दी थी। बताते चलें कि अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत मिनिस्टीरियल कर्मचारियों की ओर से नारायण दत्त पांडे व अन्य ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी।

एकलपीठ ने कर्मचारियों के पक्ष में निर्णय देते हुए कर्मचारियों को एक जनवरी 2013 से यह लाभ देने के निर्देश दिए थे। याचिकाकर्ता के अधिवक्ता हरेंद्र बेलवाल की ओर से कोर्ट को अवगत कराया कि अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में यह लाभ अध्यापकों व चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को पूर्व से दिया जा रहा है। एकलपीठ के इस आदेश के खिलाफ सरकार ने हाईकोर्ट में स्पेशल अपील दायर कर चुनौती दी थी। खंडपीठ ने सरकार की स्पेशल अपील को खारिज करते हुए एकलपीठ के आदेश को सही माना।

केजरीवाल के निर्देश पर हुआ क्लासरुम घोटाला, सीबीआई से कराई जाए जांच : भाजपा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निर्देश पर दिल्ली में क्लासरुम घोटाला होने का आरोप लगाते हुए सीबीआई जांच करवाने की मांग की है।

मनोज तिवारी ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि विजिलेंस डिपार्टमेंट की रिपोर्ट को देखते हुए दिल्ली में हुए क्लासरुम घोटाले केस में जो नया मोड़ आया है, उससे दिल्ली के पूर्व शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया को लंबे समय तक जेल में रहना पड़ सकता है।

उन्होंने कहा कि विजिलेंस डिपार्टमेंट द्वारा लोकायुक्त को सौंपी गई रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि अरविंद केजरीवाल के निर्देश पर 7180 क्लासरूम को 4126 कर दिया गया लेकिन पैसों में किसी भी प्रकार की कोई कटौती नहीं की गई। इतना ही नहीं 100 करोड़ के ऊपर के प्रोजेक्ट को कैबिनेट में लाया जाता है फिर वह उपराज्यपाल के पास भी भेजा जाता है। लेकिन, केजरीवाल के कहने पर पूरे प्रोजेक्ट को 16 छोटे-छोटे भागों में बांट दिया गया और यह पूरा प्रोजेक्ट 19 अक्टूबर 2015 को तत्कालीन पीडब्ल्यूडी मंत्री सत्येन्द्र जैन द्वारा ही अप्रूव कर दिया गया।

भाजपा सांसद ने इस पूरे मामले की सीबीआई द्वारा जांच कराए जाने की मांग करते हुए आगे कहा कि आम आदमी पार्टी दिल्ली में एक ऐसी सरकार चला रही है, जिसे चोरों की बारात कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी और उनके मुखिया मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल स्वयं हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली में पेनिक बटन, डीटीसी बस, शीशमहल, शराब, जलबोर्ड जैसे घोटाले करने के बाद शिक्षा के नाम पर बड़ी-बड़ी बातें करने वाले अरविंद केजरीवाल की शह पर स्कूलों के कमरे बनवाने में भी घोटाला कर दिया गया।

तिवारी ने कहा कि एक सेमी स्ट्रक्चर कमरा बनवाने के लिए केजरीवाल सरकार ने 32 लाख रुपये खर्च कर डाले। जबकि, भाजपा जब नगर निगम में थी तो परमानेंट स्ट्रक्चर 9.5 लाख रुपये में प्रति कमरा बनवाया था।

वहीं, दिल्ली भाजपा के सचिव हरीश खुराना ने अरविंद केजरीवाल के जल्द जेल की सलाखों के पीछे जाने का दावा करते हुए कहा कि विजिलेंस डिपार्टमेंट ने जो लोकायुक्त को रिपोर्ट सौंपी है, उसमें मुख्य रुप से पांच लोग शामिल हैं।

पहले स्वयं अरविंद केजरीवाल, जिनके निर्देश पर घोटाले को अंजाम दिया गया, दूसरा उस वक्त के तत्कालीन शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया, तत्कालीन पीडब्ल्यूडी मंत्री सत्येंद्र जैन और बब्बर एंड बब्बर एसोसिएट शामिल हैं। उन्होंने कहा कि रिपोर्ट में एक नया नाम एक आर्किटेक्ट का भी आया है और यह वही आर्किटेक्ट है, जिसने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का 6 फ्लैग स्टॉफ रोड स्थित शीशमहल का निर्माण कराकर करोड़ों के घोटाले को अंजाम दिया। उन्होंने कहा कि अब अरविंद केजरीवाल को बताना होगा कि क्लासरुम घोटाले में जिनके भी नाम हैं, उससे उनका क्या संबंध है।

इसके साथ ही भाजपा ने आम आदमी पार्टी शासित दिल्ली नगर निगम में भी ईएसआई स्वास्थ्य सेवा कार्ड देने के नाम पर किए जा रहे घोटाले का पदार्फाश करने का दावा किया।

दिल्ली भाजपा प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने दिल्ली की मेयर डॉ. शैली ओबेरॉय को पत्र लिखकर दिल्ली नगर निगम द्वारा ईएसआई स्वास्थ्य सेवा देने के नाम पर किये जा रहे घोटाले का पदार्फाश करने का दावा किया है।

भाजपा प्रवक्ता ने पत्र में मेयर को याद दिलाया है कि अप्रैल 2023 में नगर निगम ने जारी 2 श्रेणियों के लगभग 5500 कर्मचारियों को ईएसआई स्वास्थ्य कार्ड देने की घोषणा की और अप्रैल से ही रुपये की कटौती शुरू कर दी गई। इन कर्मचारियों के वेतन से 150 रुपये ईएसआई कार्ड के नाम पर कटते हैं। लेकिन, छह महीने बीत चुके हैं और ये कार्ड अभी तक चालू नहीं हुए हैं। जब कर्मचारी ईएसआई कार्ड को लेकर ईएसआई डिस्पेंसरी या अस्पतालों में जाते हैं तो उन्हें बताया जाता है कि उनके कार्ड निष्क्रिय हैं और अपंजीकृत हैं।

दिल्ली भाजपा प्रवक्ता ने आगे दावा किया कि आज जब उन्होंने ईएसआई से पूछताछ की तो अधिकारियों से पता चला है कि एमसीडी, जो 5500 कर्मचारियों से राशि काट रहा है, उसने आज तक ईएसआई को एक पैसा भी नहीं दिया है।

यौन उत्पीड़न : दिल्ली हाईकोर्ट ने बाल पीड़ित मामलों के लिए एसओपी पर सुझाव मांगे

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली सरकार के एक निलंबित अधिकारी द्वारा 16 वर्षीय लड़की के साथ महीनों तक कथित दुष्कर्म के मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय ने गुरुवार को एक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) की तैयारी पर विभिन्न अधिकारियों से सुझाव मांगे, जिनका नाबालिगों से जुड़े मामलों में पालन किया जाना चाहिए।

28 अगस्त को उच्च न्यायालय ने दिल्ली सरकार के निलंबित अधिकारी प्रेमोदय खाखा और उनकी पत्नीस पर एक नाबालिग लड़की के यौन उत्पीड़न और उसके बाद गर्भावस्था खत्म करने के मामले में स्वतः संज्ञान लिया था। गुरुवार को सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा और न्यायमूर्ति संजीव नरूला की खंडपीठ ने कई अधिकारियों -बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी), राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर), दिल्ली बाल अधिकार संरक्षण आयोग (डीसीपीसीआर), दिल्ली महिला आयोग (डीसीडब्ल्यू), दिल्ली सरकार का महिला एवं बाल विकास विभाग, दिल्ली पुलिस और दिल्ली राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरण (डीएसएलएसए) -एसओपी का मसौदा तैयार करने के लिए बैठक में भाग लेंगे।

दिल्ली पुलिस के लिए अतिरिक्त स्थायी वकील रूपाली बंदोपाध्याय ने अदालत को अवगत कराया कि उन्होंने एक स्थिति रिपोर्ट दायर की है, जिसे अदालत ने रिकॉर्ड पर नहीं बताया और उसे इसे रिकॉर्ड पर रखने के लिए कहा।

पीठ ने डीसीपीसीआर को भी याचिका में एक पक्ष बनाया और मामले में उसके द्वारा उठाए गए कदमों को रिकॉर्ड पर रखने को कहा।

अगली सुनवाई 6 अक्टूबर के लिए सूचीबद्ध की गई है। पिछली सुनवाई में कोर्ट ने दिल्ली पुलिस से स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने और नाबालिग लड़की की पहचान की सुरक्षा सुनिश्चित करने को कहा था। दिल्ली पुलिस ने अदालत को युवा पीड़िता की गंभीर स्वास्थ्य स्थिति से अवगत कराया था।

21 अगस्त को दिल्ली पुलिस ने दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग में उप निदेशक के पद से निलंबित 51 वर्षीय खाखा और उनकी पत्नीम को उनके आवास पर कई घंटों तक पूछताछ करने के बाद गिरफ्तार किया था।

यह कदम पीड़िता द्वारा शहर के एक अस्पताल में मजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान दर्ज कराने के बाद उठाया गया।

दंपति बुराड़ी इलाके के शक्ति एन्क्लेव का रहने वाला है। आरोपी ने कथित तौर पर 2020 और 2021 के बीच पीड़िता से बार-बार बलात्कार किया। एक पुलिस सूत्र ने कहा कि आरोपी अपने दोस्त की नाबालिग बेटी के साथ महीनों तक दुष्ककर्म करता रहा, इस दौरान उसकी पत्नीअ ने भी कथित तौर पर उसकी मदद की।

सूत्र ने कहा था, सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि जब पीड़िता गर्भवती हो गई, तो उसे आरोपी द्वारा गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी गई। जब आरोपी ने यह बात अपनी पत्नी को बताई, तो पीड़िता की मदद करने के बजाय, महिला ने अपने बेटे को गर्भपात की गोलियां खरीदने के लिए भेजा, उसने पीड़िता को गोलियां खिला दीं। पीड़िता की आरोपी से मुलाकात एक चर्च में हुई थी। बाद में लड़की से दोस्ती करने के बाद आरोपी उसे मदद करने के बहाने अपने घर ले गया। 2020 में पीड़िता के पिता का निधन हो गया, जिसके बाद वह डिप्रेशन में चली गई थी।

2020 दंगा मामला : आरोपियों ने आरोप पर बहस से पहले दिल्ली पुलिस से स्पष्टीकरण मांगा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

देवांगना कलिता, नताशा नरवाल और आसिफ इकबाल तन्हा सहित 2020 के दंगों के पीछे एक बड़ी साजिश का आरोप लगाने वाले मामले के कुछ आरोपियों ने अपनी जांच की स्थिति के बारे में दिल्ली पुलिस से स्पष्टीकरण मांगा है। उन्होंने आवेदन दायर कर अदालत से यह निर्देश देने की मांग की है कि आरोप तय करने पर बहस शुरू होने से पहले पुलिस को यह स्पष्ट करने का निर्देश दिया जाए कि जांच कब पूरी होगी।

तन्हा ने विशेष रूप से जांच की समय-सीमा तय करने का अनुरोध किया। सफूरा जरगर, शरजील इमाम और मीरान हैदर सहित अन्य सह-अभियुक्त भी इसी तरह के अनुरोध पर विचार कर रहे हैं। मामले को अगली बार 18 सितंबर के लिए सूचीबद्ध किया गया है। 5 अगस्त को कोर्ट ने कहा था कि वह 11 सितंबर से रोजाना आधार पर सुनवाई शुरू करेगा।

हालांकि, 11 सितंबर को कलिता की ओर से पेश वकील अदित पुजारी ने आरोपों पर आगे बढ़ने पर आपत्ति जताते हुए कहा कि अभियोजन पक्ष इधर-उधर घूम रहा है और अभी भी यह नहीं कह रहा है कि मामले में जांच पूरी हो गई है। कड़कड़डूमा अदालत के विशेष न्यायाधीश अमिताभ रावत के समक्ष पेश हुए, तन्हा का प्रतिनिधित्व करने वाले वकील सौम्य शंकरन ने कहा था कि मुकदमे को आगे बढ़ाने से पहले, अभियोजन पक्ष को यह आश्ववस्त करना होगा कि उनकी जांच पूरी हो गई है और मामले में कोई और पूरक आरोपपत्र दाखिल नहीं किया जाएगा। हालांकि, विशेष लोक अभियोजक अमित प्रसाद ने इन दलीलों का विरोध किया, जिन्होंने दावा किया कि यह सिर्फ उन आरोपियों द्वारा की जा रही एक रणनीति है, जो जमानत पर हैं, उन आरोपियों के लाभ के लिए जो हिरासत में हैं क्योंकि वे उच्च न्यायालयों के समक्ष मुकदमे में देरी का दावा करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि इसे रिकॉर्ड पर लिया जाना चाहिए, क्योंकि कल यह प्रतिबिंबित नहीं होना चाहिए कि उन्होंने बहस शुरू नहीं की, और तर्क दिया कि वे पहले से ही दिन-प्रतिदिन की सुनवाई का विरोध कर सकते थे और एक उचित आवेदन दायर कर सकते थे। अदालत ने तब आदेश दिया : अभियोजन पक्ष को अग्रिम प्रति के साथ एक विस्तृत प्रस्तुतिकरण दें। मामले में कार्यवाही सितंबर 2020 में पहली चार्जशीट दाखिल करने के साथ शुरू हुई और तब से दिल्ली पुलिस ने मामले में कुल चार आरोप पत्र दायर किए हैं। आरोप पत्र 16 सितंबर, 2020 को प्रस्तुत किए गए, इसके बाद 22 नवंबर, 2020, 24 फरवरी, 2021 और 2 मार्च, 2022 को पूरक आरोप पत्र प्रस्तुत किए गए। इस मामले के आरोपियों में ताहिर हुसैन, उमर खालिद, खालिद सैफी, इशरत जहां, हैदर, गुलफिशा फातिमा, शिफा-उर-रहमान, तन्हा, शादाब अहमद, तसलीम अहमद, सलीम मलिक, मोहम्मद शामिल हैं। सलीम खान, अतहर खान, जरगर, इमाम, फैजान खान और नरवाल शामिल हैं।

हाईकोर्ट ने आज तक चैनल के समान नाम व चिह्न का उपयोग करने पर लगाई रोक

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली उच्च न्यायालय ने ह्यआज तक समाचार चैनल के ट्रेडमार्क के समान भ्रामक नामों व चिह्नों का उपयोग करने वालों यूट्यूब चैनलों और सोशल मीडिया हैंडल पर इसका उपयोग करने पर रोक लगा दी है। मामले की अध्यक्षता कर रहे न्यायमूर्ति सी हरि शंकर ने समाचार चैनल आज तक के पीछे की इकाई लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड के पक्ष में फैसला सुनाया। अदालत के आदेश ने कई संस्थाओं को बिना अनुमति के आज तक चिह्न और इसके व्युत्पन्न रूपों का उपयोग करने से स्थायी रूप से रोक दिया।

आजतक का तर्क था कि ये यूट्यूब चैनल और सोशल मीडिया हैंडल बिना सहमति के आजतक चिह्न और इसके विभिन्न डेरिवेटिव का उपयोग करके उसके पंजीकृत ट्रेडमार्क का उल्लंघन कर रहे हैं। जिन संस्थाओं पर स्थायी रूप से प्रतिबंध लगाया गया है उनमें अबतक न्यूज चैनल, राजस्थान तक, आप तक, हरियाणा तक, समय तक न्यूज, कल तक, अब तक टीवी न्यूज समेत अन्य शामिल हैं। न्यायमूर्ति शंकर ने कहा कि चूंकि 25 प्रतिवादियों ने समाचार चैनल द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के समान सेवाओं में प्रत्यय तक का इस्तेमाल किया था, इसलिए ये निशान प्रथम दृष्टया आज तक के पंजीकृत ट्रेडमार्क का उल्लंघन कर रहे थे। नतीजतन, अदालत ने स्थायी निषेधाज्ञा का एक आदेश जारी किया, जिसमें इन प्रतिवादियों को ऑनलाइन चैनल या संबंधित सामान और सेवाओं को चलाने के लिए आज तक के समान भ्रामक रूप से उपयोग करने से रोक दिया गया। इसके अलावा, सच तक न्यूज मार्क के साथ एक वेबसाइट, यूट्यूब चैनल और सोशल मीडिया अकाउंट संचालित करने वाले पांच अन्य प्रतिवादियों ने तर्क दिया कि आज तक तक प्रत्यय पर विशिष्टता का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि इसे अलग से पंजीकृत नहीं किया गया है। लेकिन, न्यायमूर्ति शंकर ने कहा कि तक आज तक के अंकों के लिए स्रोत पहचानकर्ता बन गया है, इससे अंकों का एक परिवार बन गया है। इसलिए, अदालत ने इन पांच प्रतिवादियों को अपनी वेबसाइट और सोशल मीडिया पेज हटाने का निर्देश दिया। यदि वे एक सप्ताह के भीतर अनुपालन करने में विफल रहे, तो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को स्वयं कार्रवाई करने का निर्देश दिया जाएगा।

शख्स ने कुत्ते के साथ किया कुकर्म

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में एक व्यक्ति ने कथित तौर पर एक आवारा कुत्ते के साथ कुकर्म किया। दिल्ली पुलिस के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। एक कार्यकर्ता और पीपुल्स फॉर एनिमल्स (पीएफए) के सदस्य ने आरोपी के खिलाफ पश्चिमी दिल्ली के राजौरी गार्डन पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई थी। एफआईआर के अनुसार, सुभाष नगर निवासी एक व्यक्ति काफी समय से आवारा कुत्तों के यौन शोषण में लिप्त है।

शिकायतकर्ता ने कहा, मैंने सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाले वीडियो और फोटो को देखा, जिसने मुझे असहाय जानवरों को निशाना बनाने वाले इस भयानक अपराध के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया। यदि इस पर ध्यान नहीं दिया गया, तो मुझे डर है कि यह व्यक्ति भविष्य में महिलाओं के खिलाफ भयानक अपराध करने के लिए आगे बढ़ सकता है। एक महिला शिकायतकर्ता ने कहा कि पीएफए के सदस्य के रूप में मैं यह शिकायत तत्काल दर्ज करा रही हूं। मैंने उपरोक्त शिकायत के लिए सहायक फोटो संलग्न किए हैं। मैं आईपीसी और पीसीए अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज करके आरोपियों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई का अनुरोध करती हूं। एफआईआर में कहा गया है, मादा कुत्ते के साथ बलात्कार का अप्राकृतिक कृत्य पिछले कुछ महीनों से हो रहा है। सबसे हालिया घटना 6 सितंबर को सुबह 6 से 7 बजे के बीच हुई। एक अधिकारी ने कहा कि भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 377 और पशु क्रूरता निवारण (पीसीए) अधिनियम की धारा 11 के तहत गुरुवार को मामला दर्ज किया गया है और जांच शुरू की गई है।

कूड़ा निस्तारण की क्षमता को दोगुना करने का प्लान तैयार किया गया : डॉ. शैली ओबरॉय

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली में कूड़े के पहाड़ों का तेजी से निस्तारण होगा। दिल्ली नगर निगम की आप सरकार ने नई अतिरिक्त एजेंसियां नियुक्त करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। ओखला और गाजीपुर लैंडफिल साइट पर एजेंसी नियुक्त करने के लिए टेंडर खुल गए हैं। दोनों लैंडफिल साइट पर अतिरिक्त एजेंसी जल्द कार्य करना शुरू करेंगी। वहीं भलस्वा लैंडफिल साइट के लिए अगले माह टेंडर निकाला जाएगा। भलस्वा लैंडफिल साइट पर अतिरिक्त एजेंसी द्वारा नवंबर तक कार्य शुरू करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। तीनों लैंडफिल साइट पर नई एजेंसी नियुक्त होने से दो साल के भीतर 90 लाख टन अतिरिक्त कूड़े का निस्तारण हो सकेगा। सीएम अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में एमसीडी जल्द दिल्ली को कूड़े के पहाड़ों से मुक्ति दिलाएगी। इस दिशा में निगम की आप सरकार दिन-रात काम कर रही है। सीएम अरविंद केजरीवाल के निर्देश पर कूड़ा निस्तारण की क्षमता को दोगुना करने का प्लान तैयार किया गया है। अभी प्रत्येक कूड़े के पहाड़ पर एक-एक एजेंसी निस्तारण का कार्य कर रही है। दो साल के भीतर उनको 30-30 लाख टन कूड़े का निस्तारण करना है। लेकिन अब कूड़ा निस्तारण की क्षमता को दोगुना करने का लक्ष्य तय किया गया है, ताकि कूड़े के पहाड़ों का समय से पहले निस्तारण हो सके।

योजना के तहत प्रत्येक कूड़े के पहाड़ के लिए एक-एक अतिरिक्त एजेंसी नियुक्त की जाएगी। इस तरह प्रत्येक कूड़े के पहाड़ पर दो-दो एजेंसी निस्तारण का काम करेंगी। प्रत्येक एजेंसी को दो साल के भीतर 30-30 लाख टन कूड़े का निस्तारण करना होगा। इस तरह प्रत्येक कूड़े के पहाड़ पर दो साल में 60-60 लाख टन कूड़े का निस्तारण होगा।

ओखला, गाजीपुर और भलस्वा लैंडफिल साइट पर अतिरिक्त एजेंसी नियुक्त करने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। दिल्ली नगर निगम की ओर से ओखला और गाजीपुर के लिए टेंडर जारी करने के बाद खोल भी दिए गए हैं। अब जल्द टेंडर एजेंसियों को अवार्ड किए जाएंगे। इसके तुरंत बाद नई एजेंसी कूड़ा निस्तारण का काम शुरू कर देंगी। वहीं भलस्वा लैंडफिल साइट के लिए टेंडर अगले माह अक्टूबर में निकाला जाएगा। इसके बाद एजेंसी नवंबर तक कार्य करना शुरू कर देगी। योजना के मुताबिक सबसे पहले कूड़ा निस्तारण का काम गाजीपुर लैंडफिल साइट पर शुरू होगा। इसके बाद ओखला लैंडफिल साइट पर नई एजेंसी कार्य करना शुरू करेगी। आखिर में नवंबर से भलस्वा लैंडफिल साइट पर काम शुरू हो जाएगा।

कूड़ा निस्तारण समय से पहले करने का मिलेगा इनाम

अगर एजेंसी तेजी से कूड़ा निस्तारण का कार्य करती है तो उसे इनाम भी दिया जाएगा। योजना के मुताबिक 2 साल से पहले जो भी एजेंसी 30 लाख टन कूड़े का निस्तारण करेगी उसे अतिरिक्त 15 लाख टन कूड़ा निस्तारण का काम दिया जाएगा। इसकी जानकारी सभी एजेंसी को दे दी गई है, ताकि एजेंसी तेजी से काम करें। इसकी शर्तें भी टेंडर प्रक्रिया में शामिल की गई हैं। दिल्ली के तीनों कूड़े के पहाड़ों को जल्द से जल्द खत्म करने के लिए सीएम अरविंद केजरीवाल खुद एक-एक काम की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। सीएम अरविंद केजरीवाल के निर्देश पर कूड़ा निस्तारण की क्षमता को दोगुना करने का प्लान तैयार किया गया है। तीनों कूड़े के पहाड़ों पर अभी एक-एक एजेंसी काम कर रही है। लेकिन अब जल्द एक-एक और अतिरिक्त एजेंसी वहां काम करेंगी। इसके लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव की तैयारी तेज, एनएसयूआई ने अंतिम सूची की जारी

नई दिल्ली। नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया यानी एनएसयूआई ने दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) के लिए अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। शुक्रवार को दी गई जानकारी में एनएसयूआई ने बताया कि हितेश गुलिया उनकी ओर से दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ में अध्यक्ष पद पर चुनाव लड़ेंगे। एनएसयूआई ने दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ की चारों पोस्ट के लिए उम्मीदवारों की घोषणा की है। अध्यक्ष पद पर हितेश गुलिया, उपाध्यक्ष के लिए अभि दहिया, सचिव पर यक्ष्ना शर्मा और संयुक्त सचिव पर शुभम चौधरी चुनाव लड़ेंगे। वहीं, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा अंतिम सूची शुक्रवार शाम तक जारी की जाएगी। दिल्ली विश्वविद्यालय में एनएसयूआई और एबीवीपी के बीच सीधा मुकाबला है। इस बार विभिन्न छात्र संगठनों और निर्दलीय मिलाकर कुल 97 उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किए हैं। अभी तक डूसू अध्यक्ष और संयुक्त सचिव के पद के लिए एक-एक उम्मीदवार का नामांकन रद्द कर दिया गया है। नामांकन पत्रों की छंटनी के बाद उम्मीदवार अपना नाम भी वापस लेंगे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का कहना है कि वह 3 बजे अपने अधिकृत उम्मीदवारों की अंतिम सूची जारी करेगी। दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने छात्रसंघ चुनाव की तिथियों की घोषणा पहले ही कर दी है। दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने 22 सितंबर को चुनाव की तिथि के रूप में घोषित किया है। इससे पहले विश्वविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव वर्ष 2019 में करवाए गए थे। कोरोना महामारी के कारण लंबे समय तक शिक्षण संस्थान बंद रहे। अधिकतर क्लास ऑनलाइन माध्यमों से ही ली गई। यही कारण है कि वर्ष 2019 के उपरांत अब 2024 में छात्र संघ चुनाव होने जा रहे हैं। चुनाव तिथियों की अधिसूचना जारी होते ही दिल्ली विश्वविद्यालय में आचार संहिता भी लागू हो गई है। विश्वविद्यालय का कहना है कि छात्र संघ चुनाव में लिंगदोह कमेटी और सुप्रीम कोर्ट की सिफारिशों का पालन सुनिश्चित करवाया जाएगा। वहीं, छात्रसंघ चुनावों की घोषणा होने के उपरांत दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न छात्र संगठनों ने भी अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं। चुनावों को लेकर सभी छात्र संगठन अपनी-अपनी चुनावी रणनीति बना रहे हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के मुताबिक छात्र संघ चुनाव के लिए नामांकन दर्ज कराने के उपरांत नामांकन पत्रों की स्क्रूटनी की जाएगी। स्क्रूटनी में जिन उम्मीदवारों का नॉमिनेशन सही पाया जाएगा वह उम्मीदवार चुनाव लड़ सकेंगे। एनएसयूआई व अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद समेत विभिन्न छात्र संगठनों व छात्रों ने इसे बहुप्रतीक्षित फैसला बताया।

विधायक बग्गा ने कृष्णा नगर में किया सड़कों का उद्घाटन

नई दिल्ली। विधायक एसके बग्गा द्वारा एफ ब्लॉक की 4 सड़कों का उद्घाटन किया व कृष्णा नगर विधानसभा अध्यक्ष श्रवण दीक्षित के नेतृत्व में कृष्णा नगर विधानसभा के दो कार्यकर्ता दीपक राजपूत और साहिल भाई ने आम आदमी पार्टी ज्वाइन करी। कार्यक्रम का आयोजन एफ ब्लॉक जगतपुरी में रखा गया, जिसमें मुख्य रूप विधायक प्रतिनिधि विकास बग्गा, संगठन पूर्व मंत्री सरदार मनदीप सिंह, राहुल घाघरा, अयूब भाई, महबूब भाई, प्रधान जमशेद, बिल्ला आहूजा, सुनील कौशिक, मंजू गुप्ता, संजय सोलंकी, विजय, उमेश कपूर, शिव कुमार, राजेंद्र नायर, अली, सलीम भाई, आसिफ भाई, बहन सलमा त्यागी, माहिर मलिक, हाशिम प्रधान, कासिम अंसारी, बॉबी चौधरी, अफताब बिरयानी वाले सिराजुद्दीन अंसारी आदि कार्यकताओं ने कार्यक्रम में भाग लिया।

हिन्दी की उपयोगिता विषय पर चर्चा

नई दिल्ली । हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत राष्ट्रभाषा हिन्दी से जुड़े विभिन्न विषयों पर केंद्रित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों की श्रृंखला में आज कला, संस्कृति एवं भाषा विभाग, दिल्ली सरकार और हिन्दी अकादमी, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली सचिवालय, आई.पी.एस्टेट, नई दिल्ली के सभागार में हिन्दी की उपयोगिता विषय पर चर्चा, काव्य-पाठ और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कला, संस्कृति, एवं भाषा विभाग के अपर सचिव श्री विवेक अग्रवाल ने कहा कि हिन्दी भाषा के केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं हैं बल्कि देश की विशाल सांस्कृतिक एकता की परिचायक भी है। उन्होंने हिन्दी को वर्तमान तकनीकी से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में श्री अशोक श्रीवास्तव, सलाहकार, संपादक एवं प्रस्तुतकर्ता ने भी अपने विभिन्न अनुभवों के माध्यम से विषय पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए। जाने-माने कवि विष्णु सक्सेना ने अपनी काव्य प्रस्तुति में पढ़ा- *रेत पर नाम लिखने से क्या फायदा/एक आई लहर कुछ बचेगा नहीं/तुमने पत्थर का दिल हमको कह तो दिया/पत्थरों पे लिखोगे मिटेगा नहीं। सखा क्रिएशन द्वारा देशभक्ति और भजनों की प्रस्तुति की गई। हिन्दी पखवाड़े का दूसरा कार्यक्रम अकादमी द्वारा संचालित विभिन्न हिन्दी प्रसार केंद्रों के पाठकों के लिए अन्तरकेन्द्रीय प्रतियोगिता को समर्पित था। जिसके अंतर्गत चंद्रयान-3 और जी- 20 सम्मेलन से जुड़े विषय पर सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता और मौलिक कविता प्रतियोगिता का आयोजन संगोष्ठी कक्ष, पदम नगर, किशन गंज, दिल्ली में किया गया। चयनित प्रतियोगियों को सम्मान स्वरूप प्रथम पुरस्कार 3500 रुपये, द्वितीय 2500 रुपये, दो 1500 रुपये धनराशि के प्रोत्साहन पुरस्कार और प्रमाण पत्र भेंट किये गए। कार्यक्रमों के अंत मे हिन्दी अकादमी के सचिव श्री संजय कुमार गर्ग ने सभी अतिथियों और प्रतियोगियों का आभार व्यक्त किया।

सरकार के कॉलेजों में होगी टीचर्स की परमानेंट अपॉइंटमेंट

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली विश्वविद्यालय में स्थाई सहायक प्रोफेसर के सैकड़ो पद खाली हैं। इन पदों पर विभिन्न विभागों व कॉलेजों में स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया जारी है। अभी तक केवल उन्हीं कॉलेजों में स्थायी शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया चल रही थीं जहां पर स्थायी प्रिंसिपल कार्यरत हैं। हालांकि अब उन कॉलेजों में भी स्थाई शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी जहां अस्थाई प्रिंसिपल कार्यरत हैं। दिल्ली सरकार के 5 ऐसे कॉलेजों में जिन्हें सरकार द्वारा अनुदान दिया जाता है उनमें स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू हो रही है। फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस के मुताबिक जहां पर कार्यवाहक या अस्थायी प्रिंसिपल कार्यरत्त हैं, वहां भी शिक्षकों की स्थाई नियुक्ति का रास्ता साफ हो गया है।दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों का कहना है कि जिन कॉलेजों में अगले सप्ताह से यह नियुक्ति प्रक्रिया शुरू हो रही है उनमें श्री अरबिंदो कॉलेज कालिंदी कॉलेज, मोतीलाल नेहरू कॉलेज, विवेकानंद कॉलेज व गार्गी कॉलेज हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षक संगठनों ने इन कॉलेजों में भी स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया का स्वागत किया है। फोरम के अध्यक्ष व श्री अरबिंदो कॉलेज के प्रोफेसर हंसराज सुमन का कहना है कि यह प्रक्रिया पूरी होने पर दिल्ली विश्वविद्यालय से एडहॉकइज्म समाप्त हो जाएगा। डॉ. सुमन ने बताया कि जिन कॉलेजों में एक्टिंग या ऑफिसिएटिंग प्रिंसिपल हैं उन्होंने अपने यहां छह महीने व एक साल पहले शिक्षकों के स्थायी पदों को भरने के लिए विज्ञापन निकालकर कॉलेजों ने स्क्रीनिंग व स्कूटनी का कार्य पूरा कर लिया है। बहुत से कॉलेजों में स्क्रीनिंग की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है, तो कुछ कॉलेजों में यह कार्य जोरों पर जारी है। उनका कहना है कि जब इन कॉलेजों में शिक्षकों का प्रमोशन हो सकता है है तो स्थायी नियुक्ति क्यों नहीं। इसीलिए विश्वविद्यालय प्रशासन ने इन 5 कॉलेजों में सलेक्शन के लिए पैनल भेज दिया है। दिल्ली सरकार के वित्त पोषित कॉलेजों के प्राचार्यों ने अपने यहां पर स्थायी नियुक्ति हेतु आवेदन पत्रों की स्क्रीनिंग व स्कूटनी के बाद इंटरव्यू के लिए सब्जेक्ट एक्सपर्ट के नामों की लिस्ट मांगी हुई थीं। विश्वविद्यालय प्रशासन ने उन कॉलेजों के प्राचार्यों को सब्जेक्ट एक्सपर्ट की लिस्ट दे दी है। अब यह कॉलेज अपने यहां जल्द ही नियुक्ति प्रक्रिया शुरू कर सकते हैं।

सुमन ने बताया कि विवेकानंद कॉलेज में तो एक शिक्षिका एडहॉक शिक्षक के रूप में ही अपनी निर्धारित सेवाएँ पूरी कर सेवा मुक्त हो चुकी हैं। अभी स्थिति यह है कि 45 से 50 के बीच की उम्र के एडहॉक शिक्षकों की काफी संख्या है। मैत्रेयी कॉलेज, श्यामलाल कॉलेज, शिवाजी कॉलेज, अरबिंदो कॉलेज, रामलाल आनंद कॉलेज, स्वामी श्रद्धानं

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण

राजधानी किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, शनिवार, 16 सितंबर, 2023

यमुना में मूर्ति विसर्जन पर लगेगा 50 हजार का जुमार्ना

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गणेश पूजा और दुर्गा पूजा के दौरान यदि यमुना में मूर्ति विसर्जन किया तो 50 हजार रुपये का जुमार्ना भरना पड़ सकता है। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) ने इसके लिए गाइडलाइंस जारी कर दी हैं।

इन गाइडलाइंस में डीपीसीसी ने साफ किया है कि नेशनल मिशन फार क्लीन गंगा (एनएमसीजी) के 2019 व 2021 में जारी आदेश के अनुसार, गंगा और उसकी सहायक नदियों में मूर्ति विसर्जन करने पर 50 हजार रुपये का पर्यावरण क्षति शुल्क लगाया जाएगा। वहीं, एनएमसीजी के एनवायरमेंटल प्रोटेक्शन एक्ट 1986 के सेक्शन पांच के अनुसार नदियों को प्रदूषित करने पर एक लाख रुपये जुमार्ना, जेल या दोनों की सजा हो सकती है। डीपीसीसी ने मूर्तिकारों और आम लोगों के लिए विसर्जन की गाइडलाइंस जारी की है।

मूर्तिकारों के लिए गाइडलाइन

मूर्ति बनाने के लिए प्रकृतिक मिट्टी, बायोडिग्रेडेबल मैटीरियल का इस्तेमाल करें

मूर्ति को सजाने के लिए प्राकृतिक रंगों व बायोडिग्रेडेबल मैटीरियल का इस्तेमाल करें

पीओपी की मूर्तियां तलाबों, नदियों और जोहड़ों, झीलों में विसर्जित नहीं की जा सकती। इसलिए इन्हें न बनाएं

आम लोगों और आरडबल्यूए के लिए गाइडलाइन

गणेश पूजा और दुर्गा पूजा आदि में पीओपी की मूर्ति का विसर्जन जोहड़ों, झीलों, तालाबों व नदियों में न करें

जहां तक संभव हो, मूर्ति विसर्जन टब या बाल्टी में करें

पूजा के सामान जैसे फूल, सजावटी सामान विसर्जन से पहले मूर्ति से हटा लें

विभागों के लिए गाइडलाइन

सिविक एजेंसियां मूर्ति विसर्जन के लिए अस्थाई तालाबों का इंतजाम करें

एमसीडी और दिल्ली पुलिस गाड़ियों को चैक करें कि कोई मूर्तियों का विसर्जन करने यमुना तक न आए

एमसीडी ऐसे मूर्तिकारों पर एक्शन ले जो बिना लाइसेंस या रजिस्ट्रेशन के मूर्तियां बेच रहे हैं

संबंधित डीएम जुमार्ना लगाने के लिए अपने अपने एरिया में टीमें बनाएं

एनजीओ व समितियों की मदद से लोगों को जागरुक करने का कार्यक्रम चलाएं

डीपीसीसी मूर्ति विसर्जन से पहले और बाद में यमुना के तालाबों की जांच करें ताकि पता चल सके कि पानी प्रदूषित हुआ है या नहीं

क्यों प्रतिबंधित है यमुना में मूर्ति विसर्जन

मूर्ति विसर्जन की वजह से यमुना के पानी में कई तरह के केमिकल्स जैसे मर्करी, जिंक आक्साइड, क्रोमियम, लेड, कैडमियम आदि घुल जाते हैं। यह जल में रहने वाले जीवों के लिए काफी नुकसानदेह है। इस तरह के पानी की मछलियां जब व्यक्ति खाते हैं तो उनमें कई तरह की बीमारी का खतरा होता है।

मालीवाल ने बिहार के मुख्यमंत्री से सहरसा बलात्कार मामले में एसआईटी जांच का आग्रह किया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली महिला आयोग (डीसीडब्ल्यू) की प्रमुख स्वाति मालीवाल ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से सहरसा के स्कूल में एक छात्रा से बलात्कार की जांच के लिए विशेष जांच टीम (एसआईटी) गठित करने का आग्रह किया और मामले की सुनवाई फास्ट ट्रैक अदालत में करने की मांग की।

डीसीडब्ल्यू प्रमुख ने बृहस्पतिवार को कुमार को भेजे गए एक पत्र में घटना की गहन जांच का अनुरोध किया और कहा कि राज्य सरकार को पीड़िता को कानूनी सहायता और मुआवजा देना चाहिए। मालीवाल ने कहा कि डीसीडब्ल्यू को बेहद परेशान करने वाली घटना के संबंध में एक शिकायत मिली है। उन्होंने पत्र में कहा, आरोप है कि स्कूल प्रबंधक के 30 वर्षीय बेटे ने स्कूल के अंदर दो साल से अधिक समय तक लगातार लड़की का यौन उत्पीड़न किया। यह भी आरोप है कि आरोपी ने लड़की का वीडियो बनाया और उसे ब्लैकमेल किया।

मालीवाल ने कहा कि शिकायतकर्ता ने यह भी आरोप लगाया है कि स्कूल की महिला प्रधानाध्यापक ने अपराध को अंजाम देने में नियमित रूप से आरोपी की सहायता की। उन्होंने कहा, ह्यह्यमामले में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और आरोपी व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। हालांकि, पीड़िता ने आयोग को सूचित किया है कि आज तक बिहार सरकार का कोई भी व्यक्ति उससे नहीं मिला है।

मालीवाल ने पत्र में कहा, आगे की कानूनी सहायता और मुआवजा अभी तक पीड़िता तक नहीं पहुंचा है। साथ ही, पीड़िता के परिवार ने मामले की जांच के तरीके पर भी चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि दिल दहला देने वाली इस घटना ने पीड़िता को गहरा सदमा पहुंचाया है। मालीवाल ने मुख्यमंत्री से गहन और व्यापक जांच सुनिश्चित करने के लिए मामले की एसआईटी से जांच कराने का आग्रह किया।

डीसीडब्ल्यू प्रमुख ने कहा, पीड़िता की सहायता के लिए, सरकार को मामले में एक विशेष अभियोजक नियुक्त करना चाहिए, जिसकी त्वरित सुनवाई फास्ट ट्रैक अदालत में की जानी चाहिए। मालीवाल ने कहा कि यह सुनिश्चित करना राज्य का कर्तव्य है कि पीड़िता को सदमे से उबरने में मदद करने के लिए पर्याप्त मुआवजा मिले। उन्होंने पत्र में कहा कि राज्य को पीड़िता के उचित चिकित्सा उपचार और पुनर्वास की सुविधा भी प्रदान करनी चाहिए तथा सरकार के एक वरिष्ठ प्रतिनिधि को लड़की के परिवार से तत्काल मिलना चाहिए एवं हर संभव तरीके से उसकी मदद करनी चाहिए।

केंद्र ने गोपाल राय को कोलंबिया इंडिया एनर्जी डायलॉग के लिए न्यूयॉर्क जाने की मंजूरी दी

नई दिल्ली। केंद्र ने शुक्रवार को दिल्ली उच्च न्यायालय को बताया कि उसने दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय को कोलंबिया इंडिया एनर्जी डायलॉग में भाग लेने के लिए 15 से 21 सितंबर तक न्यूयॉर्क की यात्रा करने की राजनीतिक मंजूरी दे दी है। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद को सूचित किया कि मामले के विशिष्ट तथ्यों और परिस्थितियों में राय की यात्रा के लिए राजनीतिक मंजूरी दे दी गई है, लेकिन इसे एक मिसाल नहीं बनाया जाना चाहिए। विधि अधिकारी द्वारा प्रस्तुत दलील को दर्ज करते हुए उच्च न्यायालय ने राय की याचिका का निपटारा कर दिया, जिसमें उन्होंने केंद्र सरकार के उस आदेश को रद्द करने की मांग की थी, जिसमें उन्हें कार्यक्रम के लिए विदेश यात्रा की खातिर राजनीतिक मंजूरी देने से इनकार कर दिया गया था। केंद्र, जो दिन के पहले भाग में मामला उठाए जाने के दौरान याचिकाकर्ता को मंजूरी देने के खिलाफ था, ने दोपहर के भोजन के बाद के सत्र में अदालत को घटनाक्रम के बारे में सूचित किया। राय ने 18 सितंबर को आयोजित होने वाले कार्यक्रम में भाग लेने के लिए 15 से 21 सितंबर तक अमेरिकी शहर की यात्रा करने की अनुमति मांगी थी, जहां उन्हें एक वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया है।

चट्टान 22 सितम्बर को पूरे भारत में रिलीज

प्रात : किरण संवाददाता

एन .एन.गांगुली और बेला गांगुली प्रस्तुत सर्वमंगला इंटरनेशनल और के.बी .इंटरप्राइजेज के सहयोग से सेवन स्टार क्रिएटिव इंटरनेशनल कृत चट्टान ह्यका प्रीव्यू शो (गानों और चुनीदा सींस)12 सितम्बर को अंधेरी मुंबई के स्टार प्रीव्यू थिएटर में आयोजित किया गया .निर्मात्री राजनिका गांगुली और निर्देशक सुदीप डी मुखर्जी . ने अपनी मुख्य स्टार कास्ट जीत उपेंद्र ,रजनिका गांगुली ,तेज सप्रू, ब्रज गोपाल शिवा के साथ चट्टान की मुख्य बातें और अनुभव प्रिंट सोशल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से सांझा किये .इस अवसर पर फिल्म प्रचारक सतीश कँवल ने फिल्म चट्टान पार्ट २ का पोस्टर का अनावरण किया इसके साथ ही उपस्थित समुदाय ने स्वल्पाहार का आनंद लिया.फिल्म चट्टान 22 सितम्बर 2023 को पूरे भारत में रिलीज हो रही है .

विद्या मालवडे एवं सचिन गुप्ता कि फिल्म महामृत्युंजय

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

अभिनेत्री विद्या मालवडे, हिमांशु गोयल और अभिषेक चव्हाण निर्देशक सचिन गुप्ता के साथ अपनी आनेवाली लघु फिल्म महामृत्युंजय के प्रचार के सिलसिले में दिल्ली आए। महामृत्युंजय एक लघु फिल्म है, जो एक प्रतिभाशाली शास्त्रीय नृत्यांगना और भगवान शिव की प्रबल भक्त शिव्या, उसके दो भाइयों के साथ उसके गहरे संबंध के इर्द-गिर्द घूमती है। उनका भाई-बहन का अटूट बंधन इस कथा के केंद्र में है। हालांकि, कहानी के आगे बढ़ने पर एक त्रासदी आने पर नाटकीय मोड़ भी आता है, क्योंकि एक आसन्न प्रदर्शन के लिए अभ्यास करते समय शिव्या गंभीर दुर्घटना का शिकार हो जाती है और वह गहरे कोमा में चली जाती है। फिल्म में हिमांशु और अभिषेक, विद्या के भाई का किरदार निभा रहे हैं।

निर्देशक सचिन गुप्ता प्रसिद्ध राष्ट्रीय नाट्य भूषण पुरस्कार विजेता फिल्म निमार्ता, सम्मानित लेखक और दूरदर्शी थिएटर निर्देशक हैं। तीन प्रभावशाली फिल्मों, अठारह मार्मिक लघु फिल्मों और प्रसिद्ध गायकों के साथ कई मनोरम संगीत वीडियो के उल्लेखनीय पोर्टफोलियो के साथ उन्होंने मनोरंजन उद्योग पर अमिट छाप छोड़ी है। न्यूयॉर्क और कनाडा में ली स्ट्रैसबर्ग में फिल्म निर्माण में प्रशिक्षित उनकी प्रतिभा ने पूर्व राष्ट्रपतियों और मुख्यमंत्रियों से प्रशंसा प्राप्त की है। सचिन गुप्ता बतौर निर्देश धर्मेंद्र, श्वेता तिवारी, सीमा पाहवा, जरीना वहाब और संजय मिश्रा जैसे फिल्म के दिग्गज कलाकारों के साथ काम कर चुके हैं उनकी फिल्में युटुब और अमेजॉन पर धमाल मचा रही है।

दिल्ली हाई कोर्ट ने एमसीडी से आवारा कुत्तों की समस्या से निपटने को कहा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) को आवारा कुत्तों की समस्या के गंभीर मुद्दे पर त्वरित और उचित कार्रवाई करने को कहा है।

जस्टिस दिनेश कुमार शर्मा ने मामले की गंभीरता बताई और आदेश दिया कि आदेश की एक प्रति एमसीडी कमिश्नर को तत्काल कार्रवाई के लिए भेजी जाए।

अदालत ने सारिका पटेल के खिलाफ 2014 में दायर दो एफआईआर को रद्द कर दिया, जिन पर उनके पालतू कुत्ते द्वारा एक व्यक्ति और उसके पिता को अलग-अलग मौकों पर काटने का आरोप लगाया गया था। हालांकि, शामिल पक्ष पिछले साल मई में एक सौहार्दपूर्ण समझौते पर पहुंचे।

अदालत ने कहा कि पक्षों के बीच विवाद मुख्य रूप से निजी प्रकृति का था और उन्होंने अपने सभी विवादों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझा लिया है। न्याय के हित में और मामले को समाप्त करने के लिए, अदालत ने शिकायतों को रद्द करने का फैसला किया। सारिका पटेल ने खुद को पशु प्रेमी बताया था। सारिका पटेल ने कहा कि वह नियमित रूप से अपने पड़ोस में आवारा कुत्तों और उनके बच्चों को भोजन प्रदान करती हैं। उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि शिकायतकताओं को काटने का आरोपी कुत्ते वास्तव में आवारा थे, न कि उनके पालतू जानवर, और इसलिए उनका उन पर कोई नियंत्रण नहीं था।

पटेल ने तर्क दिया कि चूंकि वह पड़ोसी थी, इसलिए वे अपने समुदाय में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए शिकायतों को खत्म करना चाहती थीं। अदालत को बताया गया कि उन्होंने मामला सुलझा लिया है और अब एक-दूसरे के खिलाफ कोई शिकायत नहीं है।

24 घंटे में साइबर ठगों ने उड़ाए 82 लाख रुपये

नोएडा। जिले में साइबर ठगी के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। बीते 24 घंटे में ऐसे पांच मामले सामने आए हैं। इनमें से चार लोगों ने करीब 82 लाख रुपए साइबर ठगों के हाथों गवां दिए। साथ ही एक अन्य मामले में बैंक के कर्मी की संलिप्तता का मामला दर्ज किया गया है। सभी मामले गौतम बुद्ध नगर के साइबर थाने में दर्ज किए गए हैं। बीते 24 घंटे में नोएडा में साइबर ठगी के कई मामले सामने आए हैं। इसमें पहले मामले में साइबर जालसाजों ने एक व्यक्ति को सोशल मीडिया पर टास्क देकर उससे 16.24 लाख रुपए की ठगी कर ली। दनकौर निवासी सुमित कौशिक ने बताया कि कुछ दिन पहले उनके पास एक मैसेज आया था। मैसेज भेजने वाले ने खुद को एक कंपनी का अधिकारी बताया और पार्ट टाइम जॉब का ऑफर दिया। इसमें रोज 1500 से 2700 कमाने की स्कीम बताई गई थी। ठगी करने वाले ने सुमित को टेलीग्राम पर जोड़ दिया। इसके बाद साइबर ठगों ने वेबसाइट पर 16.24 लाख रुपए कई बार धीरे-धीरे करके जमा कर लिए और पैसे वापस मांगने पर संपर्क बंद कर दिया। दूसरे मामले में साइबर जालसाजों ने टेलीग्राम ग्रुप में जोड़कर एक महिला डॉक्टर से 11.34 लाख रुपए की ठगी कर ली। ग्रेनो वेस्ट की एक सोसाइटी में रहने वाली महिला डॉक्टर को कुछ दिन पहले ही टेलीग्राम पर एक मैसेज आया था। उनको एक गेम को लाइक और सब्सक्राइब कर पैसा कमाने का लालच दिया गया था। शुरूआत में टास्क पूरा करने पर उन्हें 1000 रुपये जमा कर 1300 रुपये मिले। विश्वास में लेकर आरोपियों ने उनसे 25 बार में 11.34 लाख रुपए ट्रांसफर करा लिए। तीसरे मामले में नोएडा स्थित एक कंपनी के मैनेजर की ईमेल आईडी को हैक कर खाते से 18.80 लाख रुपए निकाल लिए गए। पीड़ित अमित कौशिक ने पुलिस को बताया कि दूसरी कंपनी में उन्हें 18.80 लाख रुपए का भुगतान करना था। इसके लिए उन्होने कंपनी को मेल भेजी दूसरी ओर से कंपनी का मेल आया और दूसरे खाते में पैसे भेजने के लिए कहा गया। इस दौरान जालसाजों ने ईमेल आईडी हैक कर मामूली बदलाव कर दूसरी मेल आईडी बना ली। वहां उन्होंने 18.80 लाख रुपए भेज दिए। चौथे मामले में एक महिला ने इंटरनेट पर ऑनलाइन कस्टमर केयर नंबर सर्च किया था। महिला ने पुलिस को बताया कि उसने घर खरीदने के लिए एक व्यक्ति से 5 लाख का चेक लिया था। चेक से संबंधित जानकारी हासिल करने के लिए बैंक का कस्टमर केयर नंबर ऑनलाइन सर्च किया। इस पर एक व्यक्ति से बात हुई और आवाज साफ नहीं आने की बात कहते हुए उसे दूसरे नंबर से कॉल की। इसी दौरान उनके बैंक खाते से 11.34 लाख रुपए कट गए उन्होंने ओटीपी या अन्य कोई जानकारी भी साझा नहीं की थी। पांचवें मामले में भंगेल स्थित सरकारी बैंक के प्रबंधक ने पुलिस को जानकारी दी है कि 16 अप्रैल 2021 से 8 जून 2021 के बीच कर्मचारी योगेश चौहान ने 24.40 लाख रुपए गबन कर लिए। यह रकम आरोपी ने कॉर्डलेस ट्रांजैक्शन से निकाल ली। गबन के लिए आरोपी एक मोबाइल नंबर का संचालन कर रहा था। इस रकम को निकालने के लिए आरोपी ने टेलीफोन पर्सनल आईडेंटिफिकेशन नंबर भी जनरेट किया।

नोएडा में सुबह से झमाझम बारिश, कई जगह गिरे पेड़

नोएडा। नोएडा में शुक्रवार सुबह से ही मौसम ने करवट ली है लोगों को एक तरफ तेज गर्मी और उमस से निजात मिली, तो दूसरी तरफ तेज हवाओं और झमाझम बारिश से कई जगहों पर जल भराव हो गया और कुछ जगहों पर पेड़ गिर पड़े। इसकी वजह से आवागमन भी प्रभावित हुआ।

मौसम के करवट लेते ही पारे में गिरावट दर्ज की गई है। बीते दिनों तेज गर्मी और उमस के चलते लोगों का हाल बेहाल हो गया था और कई दिनों से यह उम्मीद जताई जा रही थी कि बारिश होगी और मौसम खुशनुमा हो जाएगा। नोएडा में शुक्रवार सुबह से ही तेज हवाएं चल रही थी और बारिश हो रही थी। इसके चलते पारे में गिरावट तो जरूर दर्ज की गई, लेकिन कई सोसाइटियों और सेक्टरों के पास पेड़ भी टूट कर गिर पड़े। साथ ही साथ कई जगहों पर जल भराव की भी खबरें सामने आ रही हैं, इसके चलते ऑफिस जाने वाले लोगों को जाम का भी सामना करना पड़ रहा है।

तेज हवाओं के कारण जिन जगहों पर पेड़ गिरे हैं वहां पर विद्युत आपूर्ति को भी कुछ देर के लिए रोका गया है। कोशिश की जा रही है कि जल्द से जल्द गिरे हुए पेड़ों को साइड हटाकर विद्युत आपूर्ति फिर से शुरू की जाए।

मूर्ति विसर्जन के लिए वैकल्पिक ताल की मांग

नई दिल्ली। राजधानी नागरिक कल्याण समिति ने यमुना नदी में मूर्ति विसर्जन पर लगे प्रतिबंध के चलते दिल्ली वालों के लिए मूर्ति विसर्जन के लिए वैकल्पिक ताल बनाने की मांग की है। उपराज्य विनय कुमार सक्सैना को ज्ञापन देकर डीएम नई दिल्ली और एनडीएमसी चेयरपर्सन से अपील की है कि बिरला मंदिर और बिरला मंदिर की वाटिका के मध्य उत्तर-दक्षिण छोर तक पूर्व की कुश्क नहर का बेकार पड़ा हिस्सा इसके लिए उपयुक्त स्थान है। यमुना नदी में मूर्ति विसर्जन पर 50 हजार के जुमार्ना जैसे प्रतिबंध पर बोलते हुए समाज सेवी प्रीतम धारीवाल कहते हैं कि 2019 से प्रतिबंध जारी है। चिर काल से दिल्ली की आरडब्ल्यूए परिसरों, स्कूलों, गली मोहल्ले के छोटे बड़े सभी मंदिरों में सरस्वती पूजा, गणेश पूजा, दुर्गा पूजा के अलावा छट पूजा के लिए भी पानी से भरी नहर की जरूरत होती है।

दिल्ली प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड की गाइड लाइन के अनुसार नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा के 2019 और 2021 में जारी आदेश के अनुसार गंगा और उसकी सहायक नदियों को प्रदूषित करने पर एनवायरमेंटल प्रोटेक्शन एक्ट 1986 के सेक्शन -5 के अनुसार एक लाख रुपए का जुमार्ना जेल या दोनों हो सकते हैं। प्रतिबंध से ना तो मूर्ति पूजन पर प्रभाव पड़ता है ना ही मूर्ति विसर्जन पर। इसके लिए वैकल्पिक व्यवस्था अभी तक नहीं की गई है यह चिंता का विषय है। गोल मार्किट में मूर्ति विसर्जन ताल के संयोजक व समिति अध्यक्ष प्रीतम धारीवाल बताते हैं कि भारतीय सनातनी शास्त्रों के अनुसार सृष्टि के आरंभ में जल था और अंत में भी जल ही बचता है जो स्वयं ब्रह्म स्वरूप है, जल के देवता गणपति जी हैं और इसमें नारायण श्री हरि का निवास है। देवी देवताओं की पूजा अनुष्ठान से मूर्ति में स्थापित करना और उन्हें जल प्रवाह कराके विदा करना भारतीय शास्त्रगत परंपरा है। ऐसा इस लिए किया जाता बताया जाता है ताकि देवी देवताओं का अंश मूर्ति से निकल कर जल में ब्रह्मलीन हो जाय। घरेलू बाल्टियों में, छोटे हौज बनाकर उनमें विसर्जन करवाना धर्म संगत जान नहीं पड़ता। श्री धारीवाल कहते हैं फिलहाल हम बिरला मंदिर के सामने उद्यान मार्ग पार्क में, डीएम नई दिल्ली और एनडीएमसी के सहयोग से इको फ्रेंडली विसर्जन ताल बना कर मूर्तियों का विसर्जन करवाते हैं। पूजा सामग्री के फूलों को खाद बनाने में इस्तेमाल करते हैं। यहां दिक्कत ये है कि यहां किसी अन्य मंत्रालय का निर्माण कार्य चल रहा है। पहले के खुदे ताल को दोबारा यूज नहीं किया जा सकता हर बार अलग से ताल खुदवाया जाता है वो भी जब निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा तब विकट समस्या खड़ी हो जायेगी। चार साल में वैकल्पिक व्यवस्था नहीं हो पाई है, इस पर गंभीरता काम करने की आवश्यकता है।

बेटे ने पिता को पीटकर मार डाला, हुआ गिरफ्तार

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली के अंबेडकर नगर इलाके में घरेलू विवाद में बेटे ने अपने पिता को बेरहमी से पीटा। पिता की पिटाई के बाद उनका सिर दीवार में इस तरह से मारा की उनकी मौत हो गई। मृतक की पहचान लीलाधर भट्ट के रूप में हुई। वह सीआरपीएफ से असिस्टेंट कमांडेंट के पद से रिटायर हुए थे। मामले की सूचना आरोपित बेटे की पत्नी ने अंबेडकर नगर थाना पुलिस को दी। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार किया, जिसकी पहचान दीपक भट्ट के रूप में हुई है। पुलिस पूछताछ में आरोपित ने बताया कि उसका कुछ दिन पहले एक सड़क दुर्घटना में पैर टूट गया था, जिसके बाद से वो इन दिनों घर पर ही रहा था। उसने ये भी बताया कि उसका अक्सर अपने पिता से घर के कामों को लेकर कहा सुनी होती थी लेकिन मंगलवार को ये विवाद इतना बढ़ गया कि बेटे ने पिता को काफी पीटा और पिता को जोर का धक्का दिया जिससे बुजुर्ग पिता का सिर दीवार से जा टकराया। इस दौरान बुजुर्ग को दिल का दौरा पड़ गया और अस्पताल में इलाज के दौरान पिता की मौत हो गई।

गन्ना किसानों के लिए खुशखबरी, धानुका एग्रीटेक ने लांच किया खरपतवारनाशक टाईजोम

संकरी पत्ती, चौड़ी पत्ती और साइपरस रोटडंस (मोथा) जैसी खरपतवार पर असरदार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

- जापान के निसान केमिकल कारपोरेशन के साथ मिलकर विकसित किया
- धानुका की अगले छह महीनों में 3-4 और प्रोडक्ट प्रस्तुत करने की योजना

अग्रणी कृषि-रसायन कंपनी धानुका एग्रीटेक लिमिटेड ने एक नया खरपतवारनाशक टाईजोम लांच किया है, जो गन्ने की खेती को नुकसान पहुंचाने वाले सभी प्रकार के खरपतवारों को नियंत्रित करने के साथ-साथ अधिकतम उपज लेने में किसानों की सहायता करेगा।

जापान के निसान केमिकल कारपोरेशन के सहयोग से लांच किया गया टाईजोम एक ऐसा अद्वितीय खरपतवारनाशक है, जिसकी अनूठी संरचना (कम्पोजीशन) और तत्व गन्ने की खेती में खरपतवार नियंत्रण की क्रांति लाने में सक्षम है। टाईजोम के दो मुख्य सक्रिय तत्व हेलोसल्फ्यूरॉन मिथाइल 6% और मेट्रिब्यूजिन 50% डब्ल्यूजी संकरी पत्ती, चौड़ी पत्ती और साइपरस रोटडंस (मोथा) जैसे खरपतवारों को नियंत्रित रखने का प्रभावकारी समाधान है। इस तरह यह गन्ने की खेती की पैदावार बढ़ाने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

टाईजोम को लांच करते हुए धानुका एग्रीटेक लिमिटेड के संयुक्त प्रबंध निदेशक (जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर) श्री राहुल धानुका ने कहा, टाईजोम हमारे गन्ने से सम्बंधित उत्पाद श्रृंखला को और भी मजबूती देगा और गन्ना किसानों के लिए बेहद मददगार साबित होगा। टाईजोम किसानों को सर्वश्रेष्ठ समाधान उपलब्ध कराने और उनकी आय में वृद्धि की दिशा में हमारे अनवरत प्रयासों का ही एक उदाहरण है। इस वित्तीय वर्ष में वृद्धि के लिए धानुका में हमारी महत्वाकांक्षी योजनाएं हैं और आने वाले वर्ष में हम एक के बाद एक उत्पाद लांच करेंगे, जो कि हमारे किसानों के लिए सहायक सिद्ध होंगे, उन्होंने आगे कहा।

धानुका एग्रीटेक लिमिटेड द्वारा 6 बायोलॉजिकल, 2 खरपतवारनाशक और 1 कीटनाशक उत्पाद (प्रोडक्ट) के लांच के बाद ह्यटाईजोमह्न इस वित्तीय वर्ष में लांच किया जाने वाला दसवां प्रोडक्ट है।

टाईजोम का एक मुख्य फायदा यह है कि यह खरपतवार को लक्ष्य कर उसे समाप्त कर देता है, जबकि गन्ने की फसल को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। साथ ही, टाईजोम लम्बे समय तक खरपतवार पर नियंत्रण रखता है, जिससे किसान को लम्बी अवधि तक खरपतवार मुक्त फसल मिलती है।

टाईजोम के फायदों पर और प्रकाश डालते हुए धानुका एग्रीटेक लिमिटेड के नेशनल मार्केटिंग हेड श्री मनोज कुमार वार्ष्णेय ने बताया, यह उत्पाद खरपतवारों से गन्ने की फसल को सुरक्षित रखने और उनकी अधिकाधिक वृद्धि और उपज सुनिश्चित करने में सहायक साबित होगा। इस तरह का अद्वितीय उत्पाद भारतीय किसानों के लिए अत्यंत आवश्यक है और धानुका में हम किसानों को अनूठे समाधान उपलब्ध कराने के प्रति कृत संकल्पित हैं।

धानुका में खतपतवारनाशक के लिए सीनियर पोर्टफोलियो मैनेजर श्री अमित मिश्रा ने इसी प्रकार का विचार रखते हुए बताया कि भारतीय गन्ना किसानों के रास्ते के एक बड़े व्यवधान को समाप्त कर टाईजोम फसल प्रबंधन को सरल कर पैदावार में वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होगा।

वहीं जापान के निसान केमिकल कारपोरेशन की ओर से निसान एग्रो टेक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक (मैनेजिंग डायरेक्टर) डॉ आर के यादव और निसान केमिकल कारपोरेशन के इंटरनेशनल बिजनेस हेड श्री यासुहिको टेराओका ने भारतीय किसानों की सहायता के लिए भविष्य में भी उच्च गुणवत्तापूर्ण उत्पाद उपलब्ध कराने के अपने संकल्प को दोहराया। कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में टाईजोम को किसानों के लिए लांच करने के बाद कंपनी जल्द ही इस खरपतवारनाशक को अन्य राज्यों में भी उपलब्ध करायेगी।

आबकारी नीति मामला: उच्चतम न्यायालय ने सिसोदिया की जमानत याचिका पर सुनवाई चार अक्टूबर तक टाली

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

- उपमुख्यमंत्री और आबकारी मंत्री होने के नाते वह एक हाई-प्रोफाइल व्यक्ति हैं जो गवाहों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली आबकारी नीति से जुड़े दो मामलों में आम आदमी पार्टी (आप) नेता मनीष सिसोदिया की जमानत याचिकाओं पर सुनवाई चार अक्टूबर के लिए टाल दी। इस दो मामलों की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) कर रहे हैं।

न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी की पीठ ने मामले को तब स्थगित कर दिया जब सिसोदिया की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक सिंघवी ने कहा कि उन्हें मामले पर बहस करने के लिए दो से तीन घंटे का समय चाहिए।

सिंघवी ने कहा, मैं जेल में हूं। हम (दोनों पक्ष) सहमत हैं। मेरी तरफ से सुनवाई में कम से कम 2-3 घंटे लगेंगे। इस मामले पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है।

अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू उनकी बात से सहमत हुए। सिंघवी ने यह भी आरोप लगाया कि जब भी यह मामला या सत्येन्द्र जैन का मामला सामने आता है तो मामले के गुण-दोष को लेकर अखबार में लेख छपते हैं।

पीठ ने कहा कि उसने समाचार पत्र नहीं पढ़ा है और कहा, हमें इसकी आदत डालनी होगी।

शीर्ष अदालत ने 14 जुलाई को मामलों में सिसोदिया की अंतरिम जमानत याचिका पर सीबीआई और ईडी से जवाब मांगा था।

उपमुख्यमंत्री के तौर पर सिसोदिया के पास कई विभागों का जिम्मा था जिसमें आबकारी विभाग भी शामिल था। सीबीआई ने 26 फरवरी को सिसोदिया को घोटाले में उनकी कथित भूमिका के लिए गिरफ्तार किया था। तब से वह हिरासत में हैं।

ईडी ने तिहाड़ जेल में उनसे पूछताछ के बाद नौ मार्च को सीबीआई की प्राथमिकी से जुड़े धन शोधन के मामले में उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

सिसोदिया ने 28 फरवरी को दिल्ली कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया था।

उच्च न्यायालय ने 30 मई को सीबीआई मामले में उन्हें जमानत देने से इनकार कर दिया था और कहा था कि उपमुख्यमंत्री और आबकारी मंत्री होने के नाते वह एक हाई-प्रोफाइल व्यक्ति हैं जो गवाहों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

उच्च न्यायालय ने तीन जुलाई को दिल्ली सरकार की आबकारी नीति में कथित अनियमितताओं से जुड़े धन शोधन मामले में उन्हें जमानत देने से इनकार कर दिया था और कहा था कि उनके खिलाफ आरोप बहुत गंभीर प्रकृति के हैं।

उच्च न्यायालय ने 30 मई के अपने आदेश में कहा था कि कथित घोटाला होने के समय सिसोदिया विभाग के प्रमुख थे, इसलिए वह यह नहीं कह सकते कि उनकी कोई भूमिका नहीं थी। उच्च न्यायालय ने कहा था कि राष्ट्रीय राजधानी में उनकी पार्टी अब भी सत्ता में है और उनका प्रभाव अब भी कायम है जो कभी 18 विभाग संभालते थे। अदालत ने कहा कि गवाह ज्यादातर लोक सेवक हैं, इसलिए उनके प्रभावित होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है।

दो संघीय जांच एजेंसियों के अनुसार, आबकारी नीति को संशोधित करते समय अनियमितताएं की गईं और लाइसेंस धारकों को अनुचित लाभ पहुंचाया गया। दिल्ली सरकार ने 17 नवंबर, 2021 को नीति लागू की थी, लेकिन भ्रष्टाचार के आरोपों के बीच सितंबर 2022 के अंत में इसे रद्द कर दिया था।

संक्षिप्त खबरें

बिहार राज्य जल श्रमिक संघ का अंचल सम्मेलन

विभूतिपुर/समस्तीपुर बिहार राज्य जल श्रमिक संघ अंचल कमेटी विभूतिपूर की बैठक खोकसाहा चौक हुई। अध्यक्षता संघ के प्रखंड अध्यक्ष रंजीत कुमार साहनी एवं संचालन अजय कुमार साहनी कर रहे थे। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि अंचल सम्मेलन 08 अक्टूबर 2023 को जेपीएनएस हाई स्कूल नरहन में होगी।सम्मेलन से पहले विभिन्न पंचायत का सम्मेलन सितंबर माह के अंत तक पूरा करने का निर्णय लिया।वही सदस्यता का लक्ष्य 2000 प्रखंड से रखा गया।बैठक में संघ के प्रदेश महासचिव रामबालक साहनी,संघ के अंचल मंत्री छोटन कुमार साहनी,अंचल अध्यक्ष रंजीत कुमार साहनी, अजय कुमार साहनी,हरिन्द्र सहनी,मनीष कुमार,रवि कुमार, मणिकांत कुमार,शशिकांत कुमार आदि मौजूद थे।

निशुल्क आंख जांच शिविर का आयोजन

बरहट जमुई नव भारत जागृति केंद्र और एसबीआई फाउंडेशन की ओर से पंचायत सरकार भवन में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन मुखिया कपिलदेव प्रसाद ने फीता काटकर किया। उद्घाटन के उपरांत सभी आगत अतिथि का अंग वस्त्र व फूल माला से स्वागत किया गया। इस अवसर पर 60 पुरूष-महिलाओं के आंखों की जांच की गई। मौके पर विमला रामकृष्ण बजाज अस्पताल देवघर (झारखंड) से आए चिकित्सक डा.हिमांशु कुमार ने बताया कि जांच व आपरेशन कार्य विमला रामकृष्ण बजाज ट्रस्ट के द्वारा किया जा रहा है। मोतियाबिद के मरीजों को ट्रस्ट के द्वारा अपने खर्च पर नेत्र अस्पताल देवघर ले जाकर निःशुल्क आपरेशन एवं लेंस लगाया जाएगा।मुखिया कपिलदेव प्रसाद ने इस शिविर की सराहना की।उन्होंने कहा कि 25 लोगों का आंख का ऑपरेशन रविवार को देवघर में किया जाएगा।इस शिविर से गरीब परिवार के लोगों को काफी सहूलियत होगी। मौके पर शिविर के आयोजनकर्ता अजीत ठाकुर,सलाहकार बलराम यादव सहित दर्जनों ग्रामीण उपस्थित थे।

हमलावरों ने एक युवक को गोली मार कर किया घायल

मधुबनी जयनगर थाना क्षेत्र से सटे इंडो नेपाल बॉर्डर के समीप बलडीहा बलुआटोल गांव के पास हमलावरों ने नेपाली युवक को गोली मार कर घायल कर दिया। घटना गुरुवार की रात की है गोली से घायल युवक को लोगो ने जयनगर अनुमंडल अस्पताल पहुंचाया जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए रेफर कर दिया गया घायल युवक नेपाल के धनुषा जिले के इनरवा गांव निवासी प्रदीप गोईत का पुत्र अमित कुमार गोईत 30 वर्ष के रुप मे हुआ है। घटना के विषय में बताया जाता है कि आप सी विवाद के कारण गोली चलाने की घटना हुयी है। दुसरी ओर चर्चा है कि शराब कारोबारी से जुड़े लोगो की आपसी विवाद बतायी जा रही है। हालांकि इस बिन्दु पर जयनगर थाना पुलिस जांच कर रही है अपर थानेदार गोपाल कृष्ण ने बताया कि प्रथम दृष्टया में बलडीहा से बलुआटोल रास्ते में आपसी कारोबार के रंजिश के कारण नेपाली युवक को गोली मार कर घायल किया गया है। घायल युवक का बयान के बाद स्पष्ट होगा कि घटना का कारण क्या है और क्या हुआ था खबार लिखे जाने तक एफआईआर की कारवाई चल रही थी।

अंकेक्षक पद पर चयनित सपना को मुखिया ने किया सम्मानित

विभूतिपुर/समस्तीपुर प्रखंड के पतैलिया पंचायत के मुखिया राजकुमार ने पतैलिया निवासी सह बेगूसराय में वरीय उपसमाहर्ता सह खेल पदाधिकारी प्रभाकर कुमार एवं बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा ऑडिटर के पद पर च चयनित उनकी पत्नी सपना को चादर, पाग,माला आदि भेंट कर सम्मानित किया। मुखिया ने बताया कि पंचायत के लिए बड़े ही गर्व की बात है कि एक ही परिवार से पति जहां उपसमाहर्ता है वहीं पत्नी अंकेक्षक पद पर चयनित होकर समाज के साथ-साथ पूरे प्रखंड का मान को बढ़ाया है। मौके पर पूर्व मुखिया ऋषिकेश प्रसाद सिंह,राजीव सिंह,निशु कुमार,जदयू के पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार सहित अन्य लोग मौजूद थे।

सर्वोत्तम शिक्षार्थी सेवा एवं सामाजिक गतिविधियों में संपूर्ण भारतवर्ष में इस क्षेत्रीय केन्द्र का अव्वल स्थान: डॉ अभिलाष

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक कक्ष में प्रेस प्रतिनिधियों की बैठक का आयोजन किया गया। इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अभिलाष नायक, संजया पटेल एवं राजेश कुमार शर्मा, उप-कुलसचिव तथा डॉ शालिनी, डॉ शैलिनी दीक्षित, डॉ आसिफ इकबाल सभी सहायक क्षेत्रीय निदेशक एवं आनंद कुमार सहायक कुलसचिव मीडिया से बातचीत की और उन्हें क्षेत्रीय केन्द्र के साथ-साथ विश्वविद्यालय की पहल, गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी।

बैठक की शुरूआत में क्षेत्रीय निदेशक ने सर्वप्रथम इस वर्ष के लिए सर्वोत्तम शिक्षार्थी सेवा एवं सामाजिक गतिविधियों में सफलतापूर्वक योगदान हेतु संपूर्ण भारतवर्ष में इस क्षेत्रीय केन्द्र को अव्वल स्थान प्राप्त होने की जानकारी दिये। जिसके परिणामस्वरूप नामांकन में निरंतर वृद्धि हो रही है। नामांकन संख्या जो पिछले वर्ष 70 हजार से अधिक थी वह अभी 80 हजार पार कर गयी है। इस दौरान विश्वविद्यालय ने अनेक उपलब्धिया प्राप्त की है जिनमें भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के साथ समझौता, अप्रचलित सामग्रियों की नीलामी के लिए इग्नू और मेटल एंड स्कार्प ट्रेड कारपोरेशन, इस्पात मंत्रालय के साथ समझौता, 29 देशों में अंतराष्ट्रीय छात्रों के लिए हिन्दी में बुनियादी जागरूकता पाठ्यक्रम की पेशकश के लिए इग्नू, आईसीसीआर और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के बीच त्रिपक्षीय समझौता, विदेश मंत्रालय की ई-विद्याभारती योजनाओं के तहत विदेशी देशों में ऑनलाइन कार्यक्रमों की पेशकश, अग्निवीरों के लिए 5 कौशल-आधारित स्नातक कार्यक्रम हेतु समझौता प्रमुख है। इसके उपरांत प्रत्येक शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों में विकलांगता वाले शिक्षार्थियों के लिए विकलांगता सेल एवं वर्चुअल केन्द्र की स्थापना।

बैठक में इग्नू के छात्रों को दी जा रही सुविधाओं का विस्तार के संदर्भ में क्षेत्रीय निदेशक ने बताया कि इस विश्वविद्यालय के अनुसूचितजाति/जनजाति के छात्रों को तीन कार्यक्रमों में निःशुल्क नामांकन की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है साथ ही महिला स्नातकों को बिहार सरकार की मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना के तहत 50 हजार रूपया का वित्तीय प्रोत्साहन राशि के अलावे यहाँ के छात्र भारत सरकार एवं बिहार सरकार द्वारा प्रदत्त विभिन्न प्रकार के छात्रव्ति योजनाओं का लाभ भी उठा सकते है। इसके अलावे दो सौ से कम नामांकन वाले कार्यक्रमों के लिए क्षेत्रीय केन्द्र परिसर में परामर्श सत्र की सुविधा प्रदान की जायेगी। इसके अलावे आइसीएआर, पटना एवं मगध शैक्षिक विकास संस्थान, पटना में प्रैक्टिकल हेतु प्रयोगशाला केन्द्र बनाये गये है। सुधा डेयरी में भी प्रैक्टिकल कार्य हेतु एक प्रयोगशाला केन्द्र की स्थापना की जा रही है। पर्यावरण योद्वा, पटना के सहयोग से क्षेत्रीय केन्द्र परिसर में औषधी वाटिका बनायी गयी है। उन्होंने बताया गया कि यूजीसी के मानदंडो के अनुसार किसी भी नियमित विश्वविद्यालय या मुक्त और दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय के शिक्षार्थि अपने कैरियर को आगे बढ़ाने और अपनी रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए एक साथ दो कार्यक्रम अपना सकते है। उन्होंने बताया कि क्षेत्रीय केन्द्र परिसर में अवस्थित केन्द्र में अनेक नये कार्यक्रम बढाये गये है।

बरैठा गांव के चारों मजदूरों के परिजनों से मिलने पहुंचे राजद के जांच दल

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर/समस्तीपुर विभूतिपुर प्रखंड में राष्ट्रीय जनता दल प्रदेश कार्यालय द्वारा गुरुवार को विभूतिपुर प्रखंड के किशनपुर टभका और नरहन स्टेट में एक जांच दल का गठन कर भेजा गया।जिसमें समस्तीपुर विधायक सह उप मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन,विधान पार्षद जनाब,मो. कारी सोहेब,पंचायती राज प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र प्रसाद विद्यार्थी,पूर्व विधान पार्षद सह जिला अध्यक्ष रोमा भारती, एससी एसटी जिला अध्यक्ष सत्यविंद पासवान शामिल थे।महाराष्ट्र के ठाणे अंतर्गत बालकुम इलाके में निमार्णाधीन 40 मंजिला इमारत की लिफ्ट गिरने से रविवार को किशनपुर टभका के चार मजदूरों की मौत हो गई थी ।इसी क्रम में जांच दल की टीम ने मृतक के परिवार से मिलकर सांत्वना दिया और हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। साथ ही बिहार सरकार के द्वारा पूर्व में दो-दो लाख रुपए का लाभ मृतक परिवार को मिल गया है।दूसरी ओर नरहन स्टेट में 28 अगस्त को दीप नारायण के पुत्र रंजीत राय उर्फ विद्या राय का हत्या हो गया था।जांच टीम नरहन पहुंचकर मृतक के परिवार को सांत्वना एवं हर संभव मदद का भरोसा दिलाया।मृतक के भावुक माता को जिला अध्यक्ष रोमा भारती जी ने गले लगाकर ढांढस बढ़ाया।मौके पर विभूतिपुर प्रखंड अध्यक्ष रविन्द्र कुमार यादव,प्रदेश सचिव श्याम किशोर कुशवाहा,मीडिया प्रभारी राकेश ठाकुर,समस्तीपुर विधायक प्रतिनिधि मन्नु पासवान,प्रधान महासचिव मुकेश कुमार पूर्वे, चिकित्सा प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष विक्रम गिरी,अतिपिछड़ा उपाध्यक्ष पप्पू महतो,कार्यालय सचिव रौशन यादव,कक्कू यादव,पूर्व मुखिया शिवदानी प्रसाद सिंह, पंचायत समिति सदस्य दिलीप नारायण सिंह उर्फ पप्पू ,पंचायत समिति सदस्य मुकेश कुमार उर्फ निरंजन पंचायत समिति मंटून यादव,पूर्व मुखिया सह अतिपिछड़ा प्रखंड अध्यक्ष राजेंद्र ठाकुर,चिकित्सा प्रकोष्ठ प्रखंड अध्यक्ष डॉ प्रमोद कुमार,मीडिया प्रभारी मनोज कुशवाहा,तिलो यादव,शिशूपाल यादव,गोविंद कुमार,मुकेश कुमार आदि मौजूद थे।

शिक्षक के निधन पर बीआरसी मे शोक

प्रात : किरण संवाददाता

अलीगंज इस्लामनगर अलीगंज प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत बीआरसी के प्रांगण मे बिहार राज्य प्रारंभिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष जवाहर प्रसाद यादव की अध्यक्षता मे शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमे दो मिनट का मौन रखकर मृत आत्मा की शान्ति तथा शोकाकुल परिजनो को इस दुख सहन शक्ति प्रदान करने के लिए भगवान से प्रार्थना किया गया। जिलाध्यक्ष जवाहर प्रसाद यादव ने कहा कि वे काफी मृदुल व सरल स्वभाव के शिक्षक थे , वे कुछ दिनो से बुखार से पीड़ित थे,जिनका इलाज झारखंड राज्य के दुगार्पुर के मिशन अस्पताल मे गुरूवार की सुबह अचानक निधन हो गया दा।

वे अलीगंज प्रखंड के प्राथमिक विद्यालय मकतब पलसा बुजूर्ग मे शिक्षक के रूप मे शशिकांत कुमार पदस्थापित थे। उनके निधन से प्रखंड व जिले के तमाम शिक्षको ने गहरा शोक संवेदना प्रकट किया है। मौके पर शिक्षक संजय कुमार,विश्वनाथ ठाकुर,भुवनेश्वर प्रसाद उर्फ भोला जी,सतीश कुमार,श्रवण कुमार,ईश्वरी प्रसाद,गया प्रसाद,भरत यादव,अजय पासवान,नीलम कुमारी स्वाति राज,मृदुला कुमारी,प्रियंका कुमारी के अलावे प्रखंड क्षेत्र के कई शिक्षक व शिक्षिकाए मौजूद थे।

भाकपा माले का कलुआही प्रखंड कार्यकर्ता कनवेंशन में प्रखंड लिडीम टीम का हुआ गठन

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी भाकपा-माले का कलुआही प्रखंड स्तरीय पार्टी सदस्यों और कार्यकताओं का कंवेंशन बेलाही में हुआ कंवेंशन को संबोधित करते हुए भाकपा-माले के जिला स्थायी समिति सदस्य सह बेनीपट्टी प्रखंड माले सचिव श्याम पंडित ने कहां कि पार्टी मधुबनी जिला में बर्ष 2012 से ही गरीब जगाओ गरीब बसाओ आंदोलन चला रही है परंतु इधर बर्ष 2023 में ही महागठबंधन की सरकार भाकपा माले की मांग पर राजस्व एवं भूमिसुधार बिभाग के अपर मुख्य सचिव ने दिनांक 04 मई 2023 को अभियान बसेरा 2 चलाकर गांव गांव में भूमिहिनों का सर्वे कर भूमिहिनों को बसने लायक 5 डिसमल बास भूमि उपलब्ध कराने का आदेश बिहार के सभी जिला समाहर्ता को दिया. साथ ही जो गरीब भूमि हिन जहां बसे है उस जमीन का बासगीत पर्चा देने का आदेश जारी किया हैं.इसी प्रकार बर्ष 2017 में भूह दबंदी की धारा 45 बी समाप्त करते हुए पर्चा के दखल कब्जा पर रोक को हटाते हुए पचार्धारियों को दखल कब्जा दिलाने का आदेश जारी कर चूकी हैं.

परंतु अधिकारियों और कर्मचारियों के सामंती चरित्र के कारण यह दलित गरीबों के पक्ष में हुए सरकारी आदेश को लागू नहीं कर रही है भाकपा माले खेग्रामस एवं ऐपवा इस सरकारी आदेश को लागू कराने के लिए आर पार की लड़ाई लड़ेगी कंवेंशन को शांति सहनी श्रवण राम एवं मोहम्मद जुमराती ने भी संबोधित किया कंवेंशन के अंत में 17 सदस्यों बाली प्रखंड लिडिंग टीम का गठन किया गया. जिसके सचिव पद पर शांति सहनी चुने गये. लिडिग टीम में मुहम्मद जुमराती अनिता पासवान मालती देवी ललिता देवी वगैरह चुने गए।

आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में सेना के वीर सपूतों की शहादत से पूरा देश गमगीन

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद : शुक्रवार को जुम्मे की नमाज में शहर के पठान टोली मस्जिद में मुस्लिम समाज की ओर से विशेष दुआ किया गया। जम्म-कश्मीर के अनंतनाग जिले के कोकोरेनाग इलाके के ऊंचे इलाकों में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में सेना के हमारे वीर सपूतों की शहादत से पूरा देश गमगीन है. अनंतनाग में सर्च ऑपरेशन के दौरान आतंकियों ने सुरक्षाबलों पर गोली चला दी.ह्वइस दौरान मुस्लिम समाज द्वारा दुआ के दौरान शहीदों की आत्मा के शांति के लिए दुआ की गई है। दुआ मांगती समय अल्लाह ताला से शहीद हुए उनके स्वजनों को शक्ति और हिम्मत देने की मांग किया गया। जुमे कि नमाज अदा करते हुए मो. शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान ने कहा कि पूरा देश उन बहादुर कर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित करता है जिन्हें हमने खो दिया, उनके बलिदान को हमेशा याद किया जाएगा, उनका बलिदान कभी देश नहीं भूलेगा।आतंक और हिंसा के खिलाफ पूरा देश एकजुट है। शहीद हुए जवानों एवं उनके परिवार का श्रेणी रहेगा। ज़िला में सभी जगह इसका सोक संदेश होना चाइए शोकाकुल स्वजनों के प्रति मुस्लिम समाज गहरी संवेदना प्रकट करती है।

सीमा पर तैनात जवानों की सलामती की दुआ की गई। पठान टोली मस्जिद के इमाम मो. रसूल कादरी ने कहा कि फौज है तो हम है। बताया कि अल्लाह या तय करता है कि आप किस मुल्क में पैदा होते हो, इसलिए मुल्क के लिए कुबार्नी देना अल्लाह की खिदमत करना। मस्जिद के उप इमाम मो. सलीम अख्तर, मोजायिम शोएब अख्तर, सेक्रेटरी सैयद सोनू, भोलू खान मोहम्मद नईम, अन्ना खान, मोहम्मद नदीम, मोहम्मद शाहनवाज हाशमी, मोहम्मद अरमान, अमन खान, मोहम्मद हसीब, मोहम्मद भोलू खान, मोहम्मद जुनेद, मोहम्मद सद्दाम, मोहम्मद शमशाद मोहम्मद मजहर लोगों ने कहा कि देश के लिए हमेशा कुबार्नी देने के लिए हम लोग तैयार हैं। जो जवान शहीद हुए हैं उनकी शहादत हम सभी कभी नहीं भूल सकते। शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। नमाजी लोग उपस्थित रहे। जिनकी आंखें कुछ देर के लिए नम हो गई।

सड़क जर्जर होने पर यात्री वाहनों व राहगीरों को सड़क से आवागमन में हो रही परेशानी

स्थानीय लोग कर रहें हैं सड़क के मरम्मति की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

सरकार के एनबीसीसी सड़क योजना अंतर्गत लाखों की लागत से 06 किलोमीटर की दुरी तक क्षेत्र के लोगों के आवागमन के लिये बनाया गया गिद्धौर मौरा भाया मांगोबंदर बायपास सड़क के जर्जर हो जाने से इस इलाके के सैकड़ों राहगीरों, यात्रीयों दोपहिया, चारपहिया वाहन चालकों सड़क से सफर करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

बताते चलें कि सड़क पर जगह जगह गड्ढे बन जाने के कारण आम दिन हो या बरसात का मौसम लोग सड़क से सफर के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो चोट चपेट के शिकार हो घायल हो जाते हैं। यह सड़क गिद्धौर मुख्यालय से, मौरा, धनियाठिका, भलूआही, धोबघट मांगोंबंदर सहित कई महत्वपूर्ण गांवों को प्रखंड व जिला मुख्यालय से मुख्यालय से जोड़ने का काम करती है। इस सड़क के ताजा हालात पर गौर करें तो इस सड़क के निर्माण हूए एक अरसा बीत गया है। सड़क पूरी तरह से जगह जगह टूटकर बड़े बड़े गड्ढे में तब्दील हो चुकी है। लेकिन एक लंबे अंतराल के बीत जाने के बावजूद भी विभागीय स्तर से सड़क के मरम्मति को ले आज तक कोई कारगर प्रयास नही किया गया है। क्षेत्र के ग्रामीणों का कहना है कि सड़क निर्माण के कुछ ही महीनों बाद सड़क जगह जगह से टूटकर गड्ढे में तब्दील हो गयी, अगर विभागीय स्तर से इस सड़क की मरम्मति के कार्य पर ध्यान दिया जाय तो इस इलाके के लोगों को मुख्यालय आने जाने में सुविधा होगी वहीं वाहनों को इस सड़क से आवागमन में भी कठिनाइयों का समाना नही करना पड़ेगा। इसके साथ ही लोग सड़क पर बने गड्ढे के कारण होनेवाले दुर्घटना के भी शिकार होने से बच जाएंगे। क्षेत्र के ग्रामीणों ने जिले के वरीय अधिकारियों से जनहित से जुड़ी इस समस्या के निदान को ले जर्जर हो चुके इस सड़क के मरम्मति की मांग की है।

पारस एचएमआरआई ने पोषण माह मनाया और लोगों को किया जागरूक

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। पारस एचएमआरआई में शुक्रवार को पोषण माह मनाया गया और लोगों को पोषक आहार का सेवन करने के लिए जागरूक किया इस अवसर पर स्थानीय मौसमी अनाज व खाद्य पदार्थों से बने पोषक आहार की प्रदर्शनी लगाई गई जिसका हॉस्पिटल के विभिन्न विभागों के कर्मचारी और अधिकारी ने लजीज पोषक आहार का खूब लुत्फ उठाया। इस एक्टिविटी का उद्देश्य पोषण के प्रति जागरूकता लाने का था। हॉस्पिटल के डाइटीशियन टीम द्वारा तैयार विभिन्न तरह के पोषण आहार को लोगों ने खूब सराहा। इस बार पोषण माह का खास आकर्षण मोटे अनाज के विभिन्न तरह के अच्छे व स्वादिष्ट पोषक आहार थे। मडुआ, रागी, सामा, कोदो, ज्वार, बाजार जैसे स्थानीय खाद्य पदार्थों से एक दर्जन से ज्यादा फूड आइटम बनाए गए थे। मडुआ और ज्वार से जहां केक बनाए गए थे तो वहीं तिल का लड्डू और बाजरा का हलवा भी पेश किया गया था। पारस एचएमआरआई की मुख्य आहार विशेषज्ञ (चीफ डाइटीशियन) सुकृति कुमारी ने बताया कि मडुआ या रागी से बनाए केक में कैल्शियम, आयरन, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, एंटी ऑक्सीडेंट, फिटो केमिकल्स प्रचुर मात्रा में हैं। इसी तरह ज्वार के हलवा में ताकत देनेवाले पोषक तत्व, प्रोटीन, फाइबर, आयरन आदि काफी होता है। इस अवेयरनेस प्रोग्राम की एक खास बात और थी। इस कार्यक्रम के माध्यम से बताया गया कि विभिन्न उम्र वर्ग के लिए आहार से संबंधित जरूरतें और चुनौतियां क्या हैं और वो किस विधि से अपना पोषण आहार प्राप्त कर सकते हैं। सुकृति कुमारी ने बताया कि इस बार सेलिब्रेशन का मुख्य फोकस हॉस्पिटल के ही कर्मी थे। यदि देश के अस्पताल कर्मी पोषक आहार के अच्छे जानकार होंगे तो जानकारी समाज के अंतिम पायदान तक जाएगा। आम आदमी तक संदेश मजबूती से जाएगा।

जान मारने की नीयत से हमला कर सिर फोड़ा, प्राथमिकी दर्ज

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर/समस्तीपुर थाना क्षेत्र के कल्याणपुर वार्ड 04 निवासी रामदयाल महतो के पुत्र अशोक कुमार ने जान मारने की नीयत से हमला कर सिर फाड़ने की प्राथमिकी दर्ज करायी है।जिसमें कल्याणपुर के ही रौशन चौधरी,प्रियांशु चौधरी,लल्ला व दीपक कुमार को नामजद एवं चार-पांच अज्ञात को आरोपित किया है। दर्ज प्राथमिकी के माध्यम से पीड़ित ने बताया कि 5 सितंबर को कल्याणपुर चौक स्थित मां कालिका कृषि केंद्र नामक दुकान पर मेरे पिता राम दयाल महतो बैठे थे। तभी उपर्युक्त नामित एवं अज्ञात दुकान पर आया एवं गाली गलौज करते हुए 50000 रंगदारी मांगा। तथा कनपटी में पिस्तौल सटाकर पिस्तौल से वार कर मेरे पिता के सिर एवं नाक मुंह फोड़ दिया। अगल-बगल के दुकानदार को आते देख गले से 30000 निकाल कर सभी मोटरसाइकिल से फरार हो गया। सूचना मिलने पर मैं अपने पिता को सीएचसी विभूतिपुर में भर्ती कराया जहां प्राथमिक उपचार के बाद सदर अस्पताल समस्तीपुर रेफर कर दिया गया। होश में आने पर पिता ने बताया कि वे लोग बोला दुकान चलाना है तो 50000 रंगदारी प्रत्येक महीना देना पड़ेगा नहीं तो जान से मार देंगे। सदर अस्पताल में पिता की स्थिति गंभीर होने के कारण पीएमसीएच रेफर किया गया। जहां इलाज जारी है। किसी भी समय मेरे पिता की मृत्यु हो सकती है।

हत्या के जुर्म में दो अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे प्रथम पंकज मिश्रा ने जम्होर थाना कांड संख्या -32/20 में सजा के बिन्दु पर सुनवाई करते हुए भादंवि धारा 302 ओर 201 में 05/09/23 को दोषी ठहराए गए अभियुक्तों को सजा सुनाई है, स्पेशल पीपी रविंद्र कुमार ने बताया कि अभियुक्त कपिल पासवान मखरा जम्होर, सुनील पासवान मगरहीया बारूण को भादंवि धारा 302 में आजीवन कारावास और पचास हजार जुमार्ना लगाया है वही भादंवि धारा 201 में तीन साल की सजा और बीस हजार जुमार्ना लगाया है,इस अवसर पर अधिवक्ता रामनरेश प्रसाद और शिवपूजन पासवान उपस्थित थे अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि प्राथमिकी सूचक रुदल पासवान मखरा जम्होर ने 12/06/20 को प्राथमिकी में कहा था कि उनका बारह साल का लड़का सुरज कुमार क्रिकेट देखने गया था सुबह में उसकी लाश पास के खेत में मिली, उसके गर्दन पर काले निशान थे उसका पोस्टमार्टम कराया गया था ,संदेह के आधार पर गांव के कुछ लड़के को नामजद किया था, थानाध्यक्ष जम्होर शमीम अहमद ने अनुसंधान के क्रम में घटनास्थल से गैर नामजद कपिल पासवान का वोटर कार्ड जप्त कर नये सिरे से जांच कर कपिल पासवान और सुनील पासवान पर आरोप पत्र 31/07/20 को न्यायालय में पेश किया था दोनों अभियुक्त आपस में सार बहनोई है।

अति पिछड़ा आरक्षण बचाओ कपूर्री रथ आज रवाना

प्रात : किरण संवाददाता

पटना/ अति पिछड़ा आरक्षण बचाओ संघर्ष मोर्चा, बिहार के तत्वाधान में अंबेडकर शोध संस्थान, पटना में पदयात्रा की तैयारी एवं कपूर्री रथ के रवानगी पर पूर्व मंत्री रामाश्रय सहनी की अध्यक्षता में बैठक हुई । संचालन मोर्चा के प्रदेश संजोजक प्रो डा रामबली सिंह चंद्रवंशी, एमएलसी किया। बैठक में तेली ,तमोली, दांगी को अति पिछड़ा से हटाने, पंचायत एवं निकायों में अति पिछड़ा को 33% आरक्षण देने ,एससी ,एसटी की तरह अति पिछड़ा अत्याचार निवारण कानून बनाने, रोहिणी आयोग की अनुशंसा लागू करने, तथा जननायक कपूर्री ठाकुर, अब्दुल कयूम अंसारी एवं दशरथ मांझी को भारत रत्न देने के मुद्दे पर दिनांक 2 से 7 अक्टूबर तक कपूर्री ग्राम समस्तीपुर से मिलर हाई स्कूल पटना तक आयोजित पदयात्रा की सफलता की तैयारी की समीक्षा की गई। बैठक में सभी जिलों के उपस्थित संयोजक, एवं प्रभारी ने सर्व समिति से पदयात्रा को सफल बनाने का संकल्प लिया। बैठक में बताया गया कि कल 16 सितंबर को जन जागरण अभियान के तहत जननायक कपूर्री ठाकुर संग्रहालय ,पटना से सुबह 9 बजे हरी झंडी दिखाकर जननायक के पुत्र डॉ वीरेंद्र कुमार ठाकुर एवं मोर्चा संयोजक प्रो डॉ रामबली सिंह चंद्रवंशी रवाना करेंगे। रथ पटना ,जहानाबाद, औरंगाबाद ,गया ,नवादा, सीतामढ़ी ,दरभंगा, मधुबनी, सहित बिहार के सभी जिलों का भ्रमण कर 1 अक्टूबर को कपूर्री ग्राम पहुंचेगी। बैठक में विजय चौधरी ,महेंद्र भारती ,अजय कानू ,हिसामुद्दीन अंसारी, सुरेश सिंह निषाद, दानी प्रजापति ,नीतू सिंह निषाद, अनिल साहनी ,राजेंद्र चंद्रवंशी, महेंद्र भारती, प्रमोद चंद्रवंशी, अयोध्या निषाद ,रमेश चंद्रवंशी, इं आशीष नारायण ,उपेंद्र धनवंशी, उपेंद्र महतो, वीरेंद्र चंद्रवंशी, अभिषेक चंद्रवंशी, बबीता देवी, अरुण कामत सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

नई पहल किट के जरिए परिवार नियोजन पर नव दंपितियों को आकर्षित कर रहा स्वास्थ्य विभाग

प्रात : किरण संवाददाता

परिवार नियोजन की सफलता के लिए स्वास्थ्य विभाग नव विवाहितों के बीच विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम और परामर्श दे रही है। इसमें नई पहल किट नव विवाहितों को काफी आकर्षित कर रही है। इस किट में बिंदी, तौलिया और श्रृंगार के सामान के साथ साथ निरोध, कौंटासेप्टिक गोली और गर्भ जांच किट भी दी जा रही है। इस किट को आशा के माध्यम से नव विवाहितों को दिया जा रहा है। नवविवाहित जोड़ों में वित्तीय वर्ष 2022-23 में कुल 60279 नई पहल किट का वितरण किया गया है। इस संबंध में परिवार नियोजन के राज्य कार्यक्रम प्रबंधक डॉ ए.के. शाही ने बताया कि इस किट के माध्यम से नव विवाहितों में परिवार नियोजन के फायदों के बारे में बताया जाता है। इसके साथ ही सही समय एवं सही अंतराल पर गर्भधारण के फायदों के बारे में बताया जाता है। स्वास्थ्य कार्यकताओं से प्राप्त फीडबैक के अनुसार यह किट नवविवाहितों के बीच काफी पसंद किया जाता है। सही समय में पहला बच्चा और दूसरे में अंतराल जरूरी डॉ शाही ने कहा कि नई पहल किट का मकसद नवविवाहितों में परिवार नियोजन के प्रति जागरूक करने के साथ सही उम्र व अंतराल पर बच्चों को जन्म देने से भी है ताकि कम बच्चे एवं दो बच्चों के जन्म में सही अंतराल, स्वस्थ शिशु के साथ स्वस्थ मां समाज को मिल सके। राष्ट्रीय हेल्थ फैमिली सर्वे 5 के अनुसार राज्य में 15 से 19 वर्ष तक की 11 प्रतिशत महिलाएं पहले से ही एक बच्चे की मां होती हैं। वहीं राज्य में 17 वर्ष की आयु में 17 प्रतिशत तथा 18 की आयु में 37 प्रतिशत महिला मां बन जाती है। कम उम्र में मां बनने के साथ माताओं के स्वास्थ्य एवं शिशु के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव बढ़ने की सम्भावना प्रबल होती है। डॉ शाही ने कहा कि इस वर्ष से जीविका को इस किट को बनाने हेतु आग्रह किया गया है।

सम्पादकीय

फुटबाल टीम ज्योतिष भरोसे?

चूंकि ऐसी खबर पहली बार आई है, इसलिए फिलहाल इसने ध्यान खींचा है। खबर यह है कि एशिया कप फुटबॉल के क्वालीफाइंग मैचों के लिए टीम का चयन भारतीय टीम के कोच ने एक ज्योतिषी की सलाह पर किया। देश में जिस तरह के माहौल और सोच को प्रोत्साहित किया जा रहा है, उसके बीच यह होना ही है। चूंकि ऐसी खबर पहली बार आई है, इसलिए फिलहाल इसने ध्यान खींचा है। खबर यह है कि एशिया कप फुटबॉल के क्वालीफाइंग मैचों के लिए टीम का चयन भारतीय टीम के कोच ने एक ज्योतिषी की सलाह पर किया। इसके लिए उस ज्योतिषी को भारतीय फुटबॉल संघ ने बकायदा करीब 15 लाख रुपयों का भुगतान किया। कोच इगोर स्टिमैक सर्बियाई हैं। लेकिन उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि विदेशी खिलाड़ी या कोच भी कोई कम अंधविश्वासी नहीं होते। वैसे भी खेलना या कोचिंग उनके लिए नौकरी है। और अगर उनका बॉस ज्योतिषी का सलाह लेने के लिए कहे, तो वे उसकी हुक्म-उदूली नहीं कर सकते। अब सामने यह आया है कि स्टिमैक को ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन के तत्कालीन महासचिव कुशल दास ने ज्योतिषी की सलाह लेने को कहा था। तो हर मैच के पहले कोच संभावित टीम के खिलाड़ियों के नाम, उनकी जन्म तिथि, मैच का समय आदि ज्योतिषी को भेज देते थे।ज्योतिषी सितारों का आकलन कर जिन खिलाड़ियों के बारे में बताता था कि उस रोज उसका अच्छा दिन है, उन्हें ही टीम में रखा गया। ये दीगर बात है कि इसके बावजूद भारतीय टीम जॉर्डन से मैच हार गई। एशिया में फुटबॉल में मजबूत बहुत देश हैं। भारत के लिए हाल में इसे एक बड़ी सफलता समझा गया है कि भारतीय टीम फीफा की रैंकिंग में टॉप 100 देशों में शामिल हो गई है। टीम अब एशिया कप के लिए क्वालीफाई भी कर चुकी है। अब मुद्दा यह है कि हाल की ये सफलताएं खिलाड़ियों की मेहनत या किसी उभर रहे सिस्टम का नतीजा हैं, या फिर सारा खेल सितारों का या सितारों के मुताबिक चलने का है? बहरहाल, जब वैज्ञानिकों को खुद पर भरोसा ना रहे और अंतरिक्ष यान छोडे से पहले कर्मकांड का सहारा लेते हों, तो आखिर खेल प्रशासकों या कोच को ही अकेले क्यों कठघरे में खड़ा क्यों किया जाए। जब वैज्ञानिक सोच के प्रति लेकर एक विरोध भाव का माहौल है, तो ऐसी बातें होना स्वाभाविक ही है।

जी-20 और भारत का विपक्ष

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

जी-20 की अध्यक्षता भारत को एक साल पहले मिली थी और सितम्बर 2023 को उसका समापन कार्यक्रम दिल्ली में तय हो चुका था जिसमें सभी देशों के राज्याध्यक्षों को आना था। जिस तरह से देश में वर्ष भर जी-20 की उपयोगिता, उसकी महत्ता और पूरे विश्व के एकात्म भविष्य का रास्ता खोजने के लिए चिन्तन होता रहा, उससे यह स्पष्ट होने लगा था कि भारत एक बार फिर से विश्व में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए तैयार हो रहा है। जी-20 के लोगो वसुधैव कुटुम्बकम से ही संकेत मिलने लगे थे कि अब भारत अपनी संस्कृति, धरोहर व दर्शन को लेकर एपोलोजेटिक नहीं है, बल्कि उस पर गर्व कर रहा है। जिस प्रकार भारत मंडपम का निर्माण कार्य चल रहा था और वह भारत की सनातन धरोहर के रूप में उभर रहा था, उससे भारत के राज परिवार को यह संकेत तो मिलने शुरू हो ही गए थे कि भविष्य का भारत अपने सनातन धरातल पर खड़ा होने जा रहा है। पिछले हजार साल से अरबों, तुर्कों, मुगलों (यानी एटीएम), पुर्तगालियों, डचों, फ्रांसीसियों व अंग्रेजों यानी एंग्लो सैक्सनों ने (यह संयोग है कि इसमें इटली शामिल नहीं था) इसी सनातन भारत को नष्ट करने का प्रयास किया था। भारत फिर से उठ रहा था। जी-20 में उसे पूरा विश्व देखने वाला था। लेकिन भारत के विपक्ष को भी भारत के इस अभ्युदय को रोकने का हर प्रयास करना था। विपक्ष अभी भी उसी इंडिया से चिपका रहना चाहता है जो एटीएम और पुर्तगाल, इंग्लैंड और फ्रांस (यानी पीईएफ) छोड़ कर गए थे। एटीएम और पीईएफ का दुर्भाग्य है कि किसी देश पर कब्जा करने के पुराने तौर तरीके खत्म हो गए हैं।

आज का युग हाईब्रिड वार का है। इसमें सेनाएं भेजने की जरूरत नहीं होती, बल्कि नैरेटिव गढ़े जाते हैं। वे नैरेटिव इंडिया में स्थापित किए जाते हैं। इंडिया के ही कुछ लोग उसे अपने चिन्तन का आधार बना लेते हैं और इन विदेशी नैरेटिवों या आख्यानों से सनातन भारत के नैरेटिव को ध्वस्त करने का प्रयास करते हैं। यह भारत में एटीएम और पीईएफ के अधूरे एजेंडे को इंडिया द्वारा ही पूरा करने की हाईब्रिड रणनीति कही जा सकती है। कांग्रेस के राजपरिवार के लिए लाजिमी था कि इस रणनीति पर जी-20 के समापन से पहले ही अमल करना शुरू कर दिया जाए, ताकि जब देश जी-20 के महासम्मेलन के अवसर पर दुनिया की राजनीति में भारत का नव उदय देख रहा हो तो इंडिया के आवरण तले सनातन भारत को चुनौती दी जा सके। समय व दिन तय थे। जी-20 का महासम्मेलन सितम्बर 2023 में होने वाला था। नया महाभारत होने वाला था। हजारों हजारों साल पहले धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा था, मेरे और पांडु पुत्रों ने क्या किया? भारत के पांडुपुत्र तो महासम्मेलन की तैयारी कर रहे थे। उधर पटना, बेंगलुरू में इंडिया भी तैयारी में जुट गया था। पटना व बेंगलुरू में स्वयं को भारत की सत्ता का वंशों के आधार पर दावेदार मानने वाले राजपरिवार तो जुलाई 2023 को जुटने शुरू हुए थे, लेकिन अपने एजेंडे पर इस इंडिया के अलग-अलग घटकों ने अपने एजेंडे पर काम इससे भी कई महीने पहले ही काम शुरू कर दिया था। तमिलनाडु में प्रोग्रेसिव लेखकों के बैनर तले सनातन भारतीय संस्कृति उन्मूलन सम्मेलन की तैयारियां तो मार्च अप्रैल में ही शुरू हो गई थी। तमिलनाडु में सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान भी शुरू हो गया था। डीएमके का राजपरिवार सनातन के उन्मूलन के लिए लड़ी जाने वाली इस लड़ाई में किन शब्दों को हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जाए, इसकी खोज में जुट गया था। शायद इसके लिए इंडिया का पूरा थिंक टैंक ही जुट गया हो। हो सकता है इसके लिए इंडिया के आवरण के नीचे जुटने वाले अन्य घटकों या राजपरिवारों से भी सलाह मशविरा किया गया हो। यही कारण है कि सनातन भारतीय धरोहर को कोरोना, डेंगू, मलेरिया के समकक्ष स्थापित किया गया।

इंडिया के आवरण तले करुणानिधि का राजपरिवार इस नैरेटिव को आगे बढ़ाते हुए यहां तक पहुंच गया कि सनातन का केवल विरोध ही नहीं करना है, बल्कि उसका समूल नाश तक करना है। इंडिया के बाकी घटकों ने सनातन के समूल नाश के नैरेटिव को बहुत ही चालाकी से देश भर में आगे बढ़ाया। उन्होंने तमिलनाडु के इस राजपरिवार के इस नैरेटिव को मजहब से जोड़ कर लोगों को भ्रमित करने का प्रयास किया। उनकी व्याख्या थी कि राजपरिवार के प्रतिनिधि उदयनिधि भारतीय/हिन्दु समाज के भीतर की कुरीतियों को नष्ट करने की बात कह रहे थे। लेकिन इंडिया राजपरिवार जिसे नेहरु-गान्धी के ब्रांड नाम से जाना जाता है, वह भारत की सनातन धरोहर से इतना दूर जा चुका है कि उसे शायद हिन्दु समाज की कुरीतियों का पता भी नहीं है। सनातन उन्मूलन आन्दोलन की व्याख्या भी की जा रही है। कहा जा रहा है कि सनातन धर्म और हिन्दु धर्म दोनों अलग-अलग हैं। राहुल गान्धी सनातन धर्म और हिन्दु धर्म को अलग-अलग समझें, यह बात समझ में आती है। उनसे इस प्रकार की गहरी बातों की समझ की आशा भी नहीं की जा सकती। धर्म तो होता ही सनातन है। न्यायाधीश का धर्म बिना लालच और भय के न्याय करना है। यह धर्म समय के अनुसार बदल थोड़ा जाएगा। माता-पिता का धर्म अपने बच्चों का पालन करना है और बच्चों का धर्म बुढ़ापे में अपने माता-पिता की सेवा करना है। यह धर्म तो सनातन ही है। अन्याय का विरोध करना चाहिए, यह सभी का धर्म है। यह धर्म तो सनातन ही है। कर्मकांड या रिचुइलज का धर्म से कोई ताल्लुक नहीं है। कर्मकांड का संबंध मजहब से है। जब कर्मकांड रूढ़ हो जाते हैं तो वे कुरीतियों में बदल जाते हैं। कुरीतियों को दूर करना ही चाहिए। जाति-पांति भारत के एक हिस्से के लोगों की सामाजिक संरचना है। लेकिन यह सारे भारतीय/हिन्दु समाज का हिस्सा नहीं है। लेकिन सामाजिक संरचना का धर्म से कुछ लेना देना नहीं है। लेकिन धर्म है ही सनातन। इसी सनातन धर्म को भारत में हिन्दु धर्म कहा जाता है। धर्म का किसी सम्प्रदाय या मजहब से कोई संबंध नहीं है। इंडिया गठबन्धन के घटक सनातन के उन्मूलन को अपना एजेंडा घोषित कर रहे हैं। दूसरा मुद्दा भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कांग्रेस को पता ही था कि जी-20 का महासम्मेलन किस तिथि को होने वाला है। इस महासम्मेलन में भारत का गौरव बढ़ेगा। कांग्रेस को पता था कि देश के भीतर वह इसका मुकाबला नहीं कर सकती। इसलिए इंडिया गठबंधन की रणनीति यह बनी कि इसका मुकाबला देश से बाहर जाकर किया जाए। राहुल गान्धी ने इसी रणनीति के तहत जी-20 के महासम्मेलन के दौरान विदेशों में जाकर मोर्चा सम्भाला। यही कारण था कि जब दुनिया के बाकी देश दिल्ली में आकर भारत की प्रशंसा कर रहे थे, इंग्लैंड के प्रधानमंत्री अपने सनातनी हिन्दु होने पर गर्व कर रहे थे, तब राहुल गान्धी इंडिया गठबन्धन के प्रतिनिधि के तौर पर विदेशों में जाकर बता रहे थे कि यदि भारत में इसी प्रकार चलता रहा तो देश का पतन हो जाएगा। उनको वही भारत चाहिए था जो अंग्रेज छोड़ कर गए थे। राहुल गान्धी का कहना है कि उन्होंने वेद, उपनिषद और गीता इत्यादि सब पढ़ लिए हैं।

भारतीय संस्कृति वैश्विक अर्थव्यवस्था का केंद्र बिंदु बनने की ओर अग्रसर

भारत में आर्थिक विकास के साथ ही सांस्कृतिक विकास पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। जिसके चलते अन्य देशों की तुलना में भारत की आर्थिक विकास दर मजबूत बनी हुई है। बल्कि अब तो अन्य कई देश, विकसित देशों सहित, भी अपने आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के हल हेतु एवं अपने आर्थिक विकास को गति देने के उद्देश्य से भारतीय सनातन संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं। भारत ने राजनैतिक स्वतंत्रता 75 वर्ष पूर्व ही प्राप्त कर ली थी, परंतु भारत की सनातन संस्कृति आदि काल से चली आ रही है एवं लाखों वर्ष पुरानी है। भारत को सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाता रहा है और भारतीय सनातन संस्कृति का लोहा पूरे विश्व ने माना है। धर्म, दर्शन, विरासत, तीज, त्यौहार, जायका और अनेकता में एकता के दर्शन करने को पूरी दुनिया भारत की ओर आकर्षित होती रही है। भारत को देव भूमि भी कहा गया है, यह अर्पण की भूमि है, यह तर्पण की भूमि है और यह समर्पण की भूमि है। हाल ही के समय में भारत की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने, संवारने और उसकी संवृद्धि के लिए विशेष रूप से पिछले दशक के दौरान अथक प्रयास किए गए हैं। हजारों वर्षों की भारतीय सभ्यता और संस्कृति का आकर्षण ही कुछ ऐसा है कि कितने ही झंझावात क्यों न आए परंतु भारतीय सनातन संस्कृति अटूट रही।

प्रहलाद सबनानी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

भारत आदि काल से ही एक जीता जागता राष्ट्र पुरुष है, यह मात्र एक जमीन का टुकड़ा नहीं है। भारत के कंकड़ कंकड़ में शंकर का वास बताया जाता है। हाल ही के कुछ वर्षों में भारत के आर्थिक विकास में विरासत पर भी पूरा ध्यान दिया जा रहा है और भारत में आर्थिक विकास के साथ ही सांस्कृतिक विकास पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। जिसके चलते अन्य देशों की तुलना में भारत की आर्थिक विकास दर मजबूत बनी हुई है। बल्कि अब तो अन्य कई देश, विकसित देशों सहित, भी अपने आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के हल हेतु एवं अपने आर्थिक विकास को गति देने के उद्देश्य से भारतीय सनातन संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं। भारत ने राजनैतिक स्वतंत्रता 75 वर्ष पूर्व ही प्राप्त कर ली थी, परंतु भारत की सनातन संस्कृति आदि काल से चली आ रही है एवं लाखों वर्ष पुरानी है। भारत को सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाता रहा है और भारतीय सनातन संस्कृति का लोहा पूरे विश्व ने माना है। धर्म, दर्शन, विरासत, तीज, त्यौहार, जायका और अनेकता में एकता के दर्शन करने को पूरी दुनिया भारत की ओर आकर्षित होती रही है। भारत को देव भूमि भी कहा गया है, यह अर्पण की भूमि है, यह तर्पण की भूमि है और यह समर्पण की भूमि है। हाल ही के समय में भारत की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने, संवारने और उसकी संवृद्धि के लिए विशेष रूप से पिछले दशक के दौरान अथक प्रयास किए गए हैं। हजारों वर्षों की भारतीय सभ्यता और संस्कृति का आकर्षण ही कुछ ऐसा है कि कितने ही झंझावात क्यों न आए परंतु भारतीय सनातन संस्कृति अटूट रही। हालांकि कुछ देशों, जैसे ग्रीक, यूनान, ईरान आदि, की तो सभ्यताएं ही समूल नष्ट हो गईं। भारतीय सनातन संस्कृति ने न केवल भारत को एकता के सूत्र में पिरोया है बल्कि पूरे विश्व को ही भारत के साथ जोड़ा है। अब तो भारत में ह्यएक भारत - श्रेष्ठ भारत के रूप में एक महत्वपूर्ण अध्याय लिखा जा रहा है। भारत ने जी-20 समूह के देशों की अपनी अध्यक्षता के दौरान कई अतुलनीय कार्य किए है। पिछले लगभग एक वर्ष के अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर सदस्य देशों की 200 से अधिक बैठकों का भारत के विभिन्न शहरों में आयोजन कर भारत ने पूरी दुनिया के समस्त देशों को चौंका दिया है। इस दौरान, भारत ने पूरी दुनिया को ही अपनी महान गौरवशाली सनातन संस्कृति, वैभवशाली विरासत, आध्यात्मिक क्षेत्र, आर्थिक विकास, आदि का परिचय देने में सफलता हासिल की है। भारत ने हाल ही के वर्षों में अपनी आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को हल करने एवं अपनी आर्थिक विकास दर को तेज करने में जो सफलता पाई है वह मुख्य रूप से भारत की सनातन संस्कृति एवं परम्पराओं का पालन करते हुए ही प्राप्त की जा सकी है। इसके ठीक विपरीत विशेष रूप से कोरोना महामारी के बाद से विश्व के कई विकसित देश अभी तक कई प्रकार की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं से जूझ रहे हैं। पूंजीवाद पर आधारित आर्थिक नीतियों के पालन से पश्चिमी देशों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं रही है। विकसित देशों में आज परिवार की प्रधानता एक तरह से समाप्त हो चुकी है। इस संदर्भ में यहां विशेष रूप से अमेरिका की स्थिति का उदाहरण दिया जा सकता है। अमेरिका में आज सामाजिक तानाबाना छिन्न भिन्न हो चुका है। दंपतियों में तलाक की दर बहुत अधिक हो गई है जिसके चलते बच्चे केवल अपनी मां के पास रह जाते हैं एवं बड़ी संख्या में बच्चों को अपने पिता के बारे में जानकारी ही नहीं है। अमेरिका में प्रत्येक 100 नागरिकों पर बंदूकों के 120 लायसेंस जारी किए गए हैं, अर्थात कुछ नागरिकों के पास एक से अधिक बंदूक उपलब्ध है। बंदूक की सहज उपलब्धता के कारण आज अमेरिका में हिंसा की दर बहुत अधिक हो गई है। अमेरिका में प्रति एक लाख की जनसंख्या पर पुलिस के 978 कर्मचारी तैनात है। इसके बावजूद, वर्ष 2020 में अमेरिका में मास शूटिंग (जिसमें 4 अथवा इससे अधिक नागरिकों की मृत्यु हो गई थी) की 610 घटनाएं हुईं। वर्ष 2021 में 690, वर्ष 2022 में 647 एवं इस वर्ष 9 मई 2023 तक 203 मास शूटिंग की घटनाएं हो चुकी हैं। वर्ष 2017 में जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका में प्रति एक लाख की जनसंख्या पर 17.2 हत्या की घटनाएं हुईं थी, जबकि अफ्रीका में 13, एशिया में 2.6 एवं पूरे विश्व में औसत 6 हत्या की घटनाएं हुईं थी।

विकसित देशों में पारिवारिक व्यवस्था के छिन्न भिन्न होने के कारण बुजुर्गों को सरकार की मदद पर निर्भर रहना होता है। अतः इन देशों की सरकारों को सामाजिक सुविधाओं पर भारी भरकम राशि खर्च करनी होती है। कई विकसित देशों में तो बुजुर्गों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है जिसके चलते इन देशों को अपने बजट का बहुत बड़ा भाग सामाजिक सुविधाओं पर खर्च करना पड़ रहा है। फ्रान्स अपने कुल बजट का 31 प्रतिशत हिस्सा सामाजिक सुविधाओं पर खर्च कर रहा है, इसी प्रकार इटली 28 प्रतिशत, जर्मनी 26 प्रतिशत एवं अमेरिका 19 प्रतिशत हिस्सा सामाजिक सुविधाओं पर खर्च कर रहा है। सामाजिक सुविधाओं पर भारी भरकम खर्च के कारण इन देशों की आर्थिक स्थिति चरमरा गई है एवं इन देशों में प्रति व्यक्ति औसत ऋण बहुत अधिक हो गए हैं। अमेरिका में तो कुल सकल घरेलू उत्पाद का 136 प्रतिशत कर्ज लिया जा चुका है। आज ऋण पर ब्याज के भुगतान हेतु भी कुछ देशों को कर्ज लेना पड़ता है।

अमेरिका में विश्व की लगभग 4 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती हैं परंतु पूरे विश्व में उत्पादित की जा रही बिजली के लगभग 30 प्रतिशत भाग का उपयोग अमेरिकी नागरिकों द्वारा किया जा रहा है। इसी प्रकार पूरे विश्व के पेट्रोल एवं डीजल के 36 प्रतिशत भाग का उपयोग अमेरिका में होता है। इस प्रकार पूरे विश्व के पर्यावरण को विकसित देश विपरीत रूप से प्रभावित कर रहे हैं। उक्त वर्णित कारणों से अमेरिका का बजटीय घाटा भी बहुत दयनीय स्थिति में पहुंच गया है। साथ ही निर्यात की तुलना में आयात बहुत अधिक हो गया है, इससे कुल विदेशी व्यापार भी ऋणात्मणक हो गया है। अतः कुल मिलाकर पूंजीवाद पर आधारित पश्चिमी आर्थिक दर्शन पूर्णतया असफल हो चुका है।

पश्चिमी दर्शन की विचारधारा के ठीक विपरीत, भारतीय संस्कृति के अनुसार, व्यक्तिवाद के ऊपर परिवार, समाज, राष्ट्र, सृष्टि एवं परमेशटी को क्रमशः माना गया है। संयुक्त परिवार के प्रचलन के कारण बुजुर्गों की देखभाल परिवार में ही होती है एवं सरकार के बजट पर इस संदर्भ में बहुत अधिक बोझ नहीं आता है। भारतीय सनातन संस्कृति का पालन करते हुए भारत के आर्थिक विकास को देखकर अब विकसित देश भी भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ मानते हुए इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं ताकि वे अपनी आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को हल कर सकें। कुल मिलाकर अब भारतीय आर्थिक दर्शन ही पूरे विश्व को बचा सकता है, क्योंकि वह कर्म आधारित है और एकात्म मानवता पर केंद्रित है।

ओजोन परत के बिना समाप्त हो जाएगा पृथ्वी पर जीवन

ओजोन परत कैसे बनती है, यह कितनी तेजी से कम हो रही है और इस कमी को रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं, इसी संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए 1994 से प्रतिवर्ष विश्व ओजोन दिवस मनाया जा रहा है किन्तु चिन्ता की बात यह है कि पिछले कई वर्षों से ओजोन दिवस मनाए जाते रहने के बावजूद ओजोन परत की मोटाई कम हो रही है। प्रतिवर्ष एक विशेष थीम के साथ यह महत्वपूर्ण दिवस मनाया जाता है और इस वर्ष विश्व ओजोन दिवस थीम है ह्यमॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल : फिक्सिंग द ओजोन लेयर एंड रिड्यूसिंग क्लाइमेट चेंज अर्थात मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल : ओजोन परत को ठीक करना और जलवायु परिवर्तन को कम करना। आईपीसीसी की एक रिपोर्ट में तापमान में डेढ़ तथा दो डिग्री वृद्धि की स्थितियों का आकलन किए जाने के बाद से इसे डेढ़ डिग्री तक सीमित रखने की आवश्यकता महसूस की जा रही है और इसके लिए दुनियाभर के देशों से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती के नए लक्ष्य निर्धारित करने की अपेक्षा की जा रही है।जहां तक भारत की बात है तो भारत ने 2030 तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की तीव्रता में 35 फीसदी तक कमी लाने का लक्ष्य रखा है

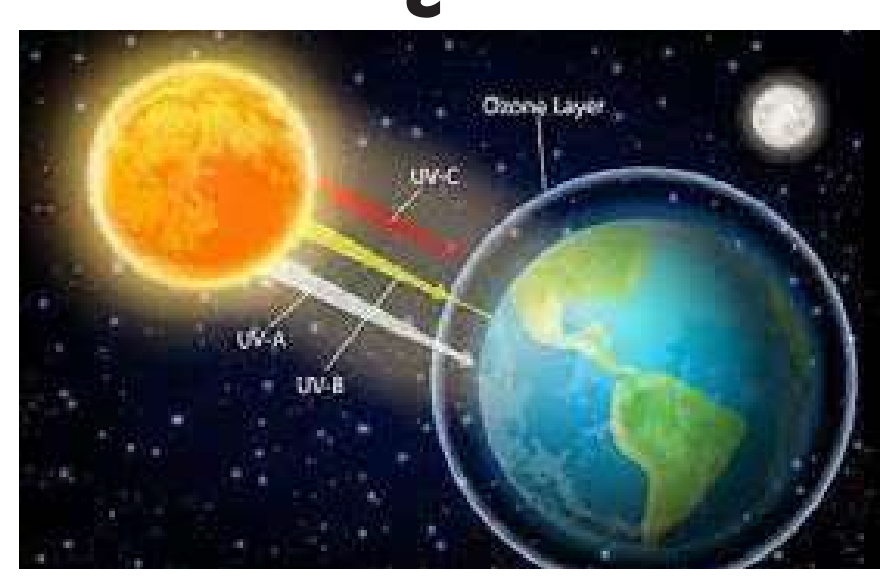

योगेश कुमार गोयल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार

16 सितम्बर 1987 को मॉन्ट्रियल में ओजोन परत के क्षय को रोकने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता हुआ था, जिसमें उन रसायनों के प्रयोग को रोकने से संबंधित एक बेहद महत्वपूर्ण समझौता किया गया था, जो ओजोन परत में छिद्र के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं। ओजोन परत कैसे बनती है, यह कितनी तेजी से कम हो रही है और इस कमी को रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं, इसी संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए 1994 से प्रतिवर्ष विश्व ओजोन दिवस मनाया जा रहा है किन्तु चिन्ता की बात यह है कि पिछले कई वर्षों से ओजोन दिवस मनाए जाते रहने के बावजूद ओजोन परत की मोटाई कम हो रही है। प्रतिवर्ष एक विशेष थीम के साथ यह महत्वपूर्ण दिवस मनाया जाता है और इस वर्ष विश्व ओजोन दिवस थीम है ह्यमॉन्ट्रियल प्रोटोकॉलः फिक्सिंग द ओजोन लेयर एंड रिड्यूसिंग क्लाइमेट चेंज अर्थात मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉलः ओजोन परत को ठीक करना और जलवायु परिवर्तन को कम करना।

आईपीसीसी की एक रिपोर्ट में तापमान में डेढ़ तथा दो डिग्री वृद्धि की स्थितियों का आकलन किए जाने के बाद से इसे डेढ़ डिग्री तक सीमित रखने की आवश्यकता महसूस की जा रही है और इसके लिए दुनियाभर के देशों से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती के नए लक्ष्य निर्धारित करने की अपेक्षा की जा रही है। जहां तक भारत की बात है तो भारत ने 2030 तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की तीव्रता में 35 फीसदी तक कमी लाने का लक्ष्य रखा है किन्तु जी-20 देशों पर जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों की समीक्षा पर आधारित एक रिपोर्ट में पिछले साल कहा गया था कि भारत सहित जी-20 देशों ने ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती के जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं, वे तापमान वृद्धि को डेढ़ डिग्री तक सीमित करने के दृष्टिगत पर्याप्त नहीं हैं। रिपोर्ट के मुताबिक अपेक्षित परिणाम हासिल करने के लिए इन देशों को अपने उत्सर्जन को आधा करना होगा। रिपोर्ट में इस बात पर भी चिंता व्यक्त की गई थी कि जी-20 देशों की जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम नहीं हो रही है, जहां अभी भी करीब 82 फीसदी जीवाश्म ईंधन ही इस्तेमाल हो रहा है और चिंताजनक बात यह मानी गई थी कि कुछ देशों में जीवाश्म ईंधन पर सब्सिडी भी दी जा रही है। भारत ने हरित ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य 2027 तक 47 फीसदी रखा है और 2030 तक सौ फीसदी इलैक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन का भी लक्ष्य है। हालांकि नवीन ऊर्जा के इन लक्ष्यों के लिए रिपोर्ट में भारत की सराहना भी की गई थी।

विश्व के अधिकांश क्षेत्रों में आज जलवायु परिवर्तन के चलते विनाश का जो दौर देखा जा रहा है, उसके लिए काफी हद तक ओजोन परत की कमी मुख्य रूप से जिम्मेदार है और हमें अब यह भी भली-भांति समझ लेना चाहिए कि हमारी लापरवाही और पर्यावरण से बड़े पैमाने पर खिलवाड़ ही पर्यावरण विनाश की सबसे बड़ी जड़ है। कुछ समय पूर्व एक रिपोर्ट में कहा गया था कि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के चलते दुनियाभर में करीब 12 करोड़ लोग विस्थापित होंगे। ओजोन परत के सुरक्षित न होने से मनुष्यों, पशुओं और यहां तक की वनस्पतियों के जीवन पर भी बेहद प्रतिकूल प्रभाव पड़ना तय है। यही नहीं, अधिकांश वैज्ञानिकों का मानना है कि ओजोन परत के बिना पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा और पानी के नीचे का जीवन भी नहीं बचेगा। हिन्दी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से पर्यावरण पर छपी चर्चित पुस्तक प्रदूषण मुक्त सांसें के मुताबिक ओजोन परत की कमी से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है, सर्दियां अनियमित रूप से आती हैं, हिमखंड गलना शुरू हो जाते हैं और सर्दी की तुलना में गर्मी अधिक पड़ती है, पर्यावरण का यही हाल पिछले कुछ वर्षों से हम देख और भुगत भी रहे हैं। दरअसल ओजोन परत में कमी और मोटे होते जा रहे छिद्र के कारण पृथ्वी तक पहुंचने वाली पराबैंगनी किरणें हमारे स्वास्थ्य तथा पारिस्थितिकी तंत्र पर बहुत हानिकारक प्रभाव डालती हैं। ओजोन परत की कमी से हमारे स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरे उत्पन्न हो रहे हैं।

ओजोन परत वातावरण में बनती है। जब सूर्य से पराबैंगनी किरणें ऑक्सीजन परमाणुओं को तोड़ती है और ये परमाणु ऑक्सीजन के साथ मिल जाते हैं तो ओजोन अणु बनते हैं। ओजोन परत पृथ्वी के धरातल से 20-30 किमी की ऊंचाई पर वायुमण्डल के समताप मंडल क्षेत्र में ओजोन गैस का एक झीना सा आवरण है। यह परत पर्यावरण की रक्षक मानी गई है क्योंकि यही वह परत है, जो पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी पर आने से रोकती है। हमारे ऊपर के वातावरण में विभिन्न परतें शामिल हैं, जिनमें एक परत स्ट्रैटोस्फियर है, जिसे ओजोन परत भी कहा जाता है। ओजोन गैस प्राकृतिक रूप से बनती है। निचले वातावरण में पृथ्वी के निकट ओजोन की उपस्थिति प्रदूषण बढ़ाने वाली और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक लेकिन ऊपरी वायुमंडल में ओजोन परत की उपस्थिति पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए अत्यावश्यक है। जब सूर्य की किरणें वायुमंडल में ऊपरी सतह पर ऑक्सीजन से टकराती हैं तो उच्च ऊर्जा विकिरण के कारण इसका कुछ हिस्सा ओजोन में परिवर्तित हो जाता है। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों के लिए एक अच्छे फिल्टर के रूप में कार्य करती है। सूर्य विकिरण के साथ आने वाली पराबैगनी किरणों का लगभग 99 फीसदी भाग ओजोन मंडल द्वारा सोख लिया जाता है, जिससे पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी एवं वनस्पति सूर्य के तेज ताप और विकिरण से सुरक्षित हैं और इसी कारण ओजोन परत को सुरक्षा कवच भी कहा जाता है। यही कारण है कि प्रायः कहा जाता है कि ओजोन परत के बिना पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

सनातन धर्म का कोढ़ है जाति प्रथा

राम पुनियानी

हिन्दू धर्म का कोई पैगम्बर नहीं है और ना ही उसकी कोई एक किताब है। यहां तक कि हिन्दू शब्द का इस्तेमाल हिन्दू धर्मग्रंथों में कहीं नहीं किया गया है। यही कारण है कि विभिन्न टीकाकारों और सुधारकों ने हिन्दू धर्म और उसके सिद्धांतों की अपने-अपने ढंग से व्याख्या की है। यहां तक कि कुछ लोग इसे धर्म न बताते हुए जीवन पद्धति की संज्ञा देते हैं। सच यह है कि हिन्दू धर्म कई विविध और कुछ मामलों में विरोधाभासी सिद्धांतों का मिश्रण है, जिन्हें मोटे तौर पर दो भागों में बांटा जा सकता है - ब्राम्हणवादी (जिसका आधार हैं वेद, मनुस्मृति और जातिगत व लैंगिक पदक्रम) और श्रमण (नाथ, तंत्र, भक्ति, शैव व सिद्धांत परंपराएं)।

सनातन धर्म से आशय है कोई ऐसा धर्म जो शाश्वत है अर्थात जो हमेशा से था। धर्म शब्द को भी परिभाषित करना सहज नहीं है। इस शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं, जैसे धर्म द्वारा निर्धारित कर्तव्य या आध्यात्मिक व्यवस्था अथवा पवित्र आचार-विचार या फिर सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का संकलन। शशि थरूर अपनी पुस्तक वाय आई एम ए हिन्दू में लिखते हैं कि धर्म वह है जिसका हम पालन करते हैं। इन जटिलताओं को परे रख कर हम इतना तो कह ही सकते हैं कि सनातन धर्म शब्द का प्रयोग हिन्दू धर्म, विशेषकर लैंगिक व जातिगत ऊंच-नीच पर आधारित उसके ब्राम्हणवादी संस्करण, के लिए किया जाता रहा है। यही कारण है कि अंबेडकर का मानना था कि हिन्दू धर्म दरअसल ब्राम्हणवादी धर्मशास्त्र है। हिन्दू धर्म हिन्दुत्व या हिन्दू राष्ट्रवादी राजनीति, जो मनुस्मृति और तदानुसार जातिगत ऊँच-नीच को मान्यता देती है, का मूलाधार है। एक तरह से आज सनातन धर्म को जातिगत ऊँच-नीच का पर्याय मान लिया गया है।

हमें उदयनिधि स्टालिन (स्टालिन जूनियर या एसजे) के सनातन धर्म के उन्मूलन के आव्हान को इस पृष्ठभूमि में समझना होगा। एसजे, पेरियार की परंपरा में रचे-बसे हैं। पेरियार ने आत्मसम्मान आंदोलन शुरू किया था जो जातिगत समानता और पितृसत्तात्मकता के उन्मूलन पर केन्द्रित था। पेरियार ब्राम्हणवादी नियमों और प्रथाओं, जिनका समाज में जबरदस्त बोलबाला था, के कटु आलोचक थे। पेरियार के पहले अंबेडकर की मौजूदगी में उनके साथी सहस्त्रबुद्धे ने मनुस्मृति का दहन किया था। अंबेडकर का मानना था कि मनुस्मृति जातिगत असमानता को वैधता प्रदान करती है। ब्राम्हणवाद, जिसे सनातन धार्मिक मूल्यों का संकलन बताया जाता है, की प्रभुता से उद्वेलित हो अंबेडकर ने घोषणा की थी कि, मैं एक हिन्दू के रूप में पैदा हुआ था। यह मेरे हाथ में नहीं था। परंतु मैं एक हिन्दू के रूप में मरूंगा नहीं। एसजे ने कहा कि सनातन धर्म वह सिद्धांत है जो लोगों को जाति और धर्म के नाम पर बांटता है... (द टाईम्स ऑफ इंडिया, 4 सितंबर 2023)।

एसजे ने केवल वही दुहराया है जो पेरियार और अंबेडकर ने अलग शब्दों में कहा था। सनातन धर्म शब्द के इस्तेमाल के चलते एसजे के वक्तव्य को किस तरह तोड़ा-मरोड़ा गया यह भाजपा के प्रवक्ता अमित मालवीय की ट्वीट से जाहिर है। मालवीय ने एक्स पर लिखा, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के पुत्र और डीएमके सरकार में मंत्री उदयनिधि स्टालिन ने सनातन धर्म की तुलना मलेरिया और डेंगू से की है.... संक्

संक्षिप्त खबरें

संपूर्ण समाधान दिवस तहसील सहसवान में आज

बदायूँ : 15 सितम्बर। जिलाधिकारी कार्यालय से प्राप्त सूचना के अनुसार दिनांक 16 सितम्बर 2023 को तहसील सहसवान में जिलाधिकारी मनोज कुमार की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन प्रातः 10:00 बजे से किया जाएगा। इस अवसर पर जनपद स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहेंगे व आमजन शिकायतां का निस्तारण प्राथमिकता पर सुनिश्चित कराया जाएगा।

श्रद्धालुओं को लेकर हरिद्वार जा रही बस नदी के बहाव में फंसी, यात्री सुरक्षित

नेपाल से श्रद्धालुओं को हरिद्वार ले जा रही यात्री बस कोटावाली नदी के तेज बहाव मे फंस गयी। पुलिस ने इसकी जानकारी दी। जिले के मंडावली थाना प्रभारी रविन्द्र सिंह ने बताया कि जेसीबी और अन्य मशीनों की सहायता से बस और यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया, किसी भी यात्री को किसी तरह की चोट नहीं पहुंची है और सभी सुरक्षित हैं। सिंह ने बताया कि शुक्रवार सुबह नेपाल से तीर्थयात्रियों को लेकर हरिद्वार जा रही यात्री बस बिजनौर-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-74 पर कोटावाली नदी के तेज बहाव मे फंस गयी।

उप्रः कई मामलों में वांछित अपराधी पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले में थाना हलियापुर पुलिस ने कई मामलों में वांछित एक अपराधी को शुक्रवार सुबह मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। अपर पुलिस अधीक्षक विपुल कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि पुलिस को जानकारी मिली थी कि एक शातिर अपराधी अपने साथी के साथ किसी बड़ी घटना को अंजाम देने वाला है। उन्होंने बताया कि पुलिस दल ने इस जानकारी के आधार पर जब हलियापुर थाना क्षेत्र के आमघाट के पास घेराबंदी की तो बदमाशों ने उस पर गोलियां चला दीं। उन्होंने बताया कि इसके बाद पुलिस की जवाबी कार्रवाई में अपराधी राहुल विश्वकर्मा (30) के पैर में गोली लग गई और एक अन्य अपराधी फरार हो गया। श्रीवास्तव ने बताया कि विश्वकर्मा के खिलाफ हत्या एवं लूटपाट समेत कई आपराधिक घटनाओं से जुड़े लगभग डेढ़ दर्जन मामले दर्ज हैं। उन्होंने बताया कि विश्वकर्मा आदतन अपराधी है। उन्होंने बताया कि विश्वकर्मा को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसके पास से 315 बोर का देशी तमंचा व एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया है, लेकिन उसका साथी रामबहादुर निषाद फरार हो गया। श्रीवास्तव ने बताया कि विश्वकर्मा को सुलतानपुर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत चला स्वच्छता अभियान

उघैती।।क्षेत्र के सिद्ध बाबा इंटर कॉलेज शरह बरौलिया में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयं सेवकों ने स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत स्वच्छता अभियान चलाया। छात्रों ने स्कूल प्रांगण की साफ सफाई की। प्रधानाचार्य डॉ नरेश चन्द ने सार्वजनिक स्थानों पर तंबाकू, गुटका, पान की गंदगी न करने के बारे में छात्र छात्राओं को समझाया। कार्यक्रम अधिकारी राजकुमार शर्मा ने कहा कि अपने आसपास की सफाई रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। साफ सफाई से सभी रोगों से दूर रहा जा सकता है।छात्रों ने विद्यालय के मैदान को मिट्टी डालकर समतल किया। इस मौके पर पूर्व कार्यक्रम अधिकारी शहादत बख्श,विपलब भारती अमित कुमार,राहुल सिंह,वंशिका ,वर्तिका शर्मा,रिहान सैफी आदि स्वयं सेवक उपस्थित रहे।

सड़क हादसे में मां-बेटे की मौत, पति गंभीर रूप से घायल

उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में शुक्रवार सुबह एक सड़क हादसे में मां-बेटे की मौत हो गई, जबकि महिला का पति गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। कौड़िया के थाना प्रभारी योगेश प्रताप सिंह ने बताया कि स्थानीय थाना क्षेत्र के मौहरिया गांव निवासी मोहम्मद नसीम अपनी पत्नी और बेटे के साथ शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे दवा लेने के लिए मोटर साइकिल से कटरा बाजार जा रहे थे। रामापुर चौराहे से पहले बाजार डीहा मोड़ पर कटरा बाजार की तरफ से आ रहे एक डंपर ने उनकी मोटर साइकिल को टक्कर मार दी। उन्होंने बताया कि घटना में मोटर साइकिल पर पीछे बैठी नसीम की पत्नी इशरत (30) और बेटे अरकान (छह) की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी, जबकि नसीम गंभीर रूप से जख्मी हो गया। उन्हें उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया है। उन्होंने बताया कि मौके पर पहुंची पुलिस ने डंपर को कब्जे में ले लिया है। परिजनों की शिकायत पर भारतीय दंड संहिता और मोटर वाहन अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

शहर में टूटी नाले नालियां जर्जर सड़के जल भराव एवं गंदगी के लगे ढेर आवारा पशुओं से डेंगू मलेरिया जैसी बीमारी फैल रही हैं : वफाती मिया

शहर की समस्याओं के निराकरण को जिलाधिकारी को सौंफा ज्ञापन

प्रात : किरण, संवाददाता

बदायूं शहर की समस्याओं को लेकर आज शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चौधरी वफाती मिया के नेतृत्व में 6 सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी बदायूं को सोफा ज्ञापन में जिलाधिकारी को अवगत कराते हुए शहर अध्यक्ष चौधरी वफाती मियां ने कहा कि पिछले 5 वर्षों से शहर के मोहल्ले बस्तियों कीसड़के पूरी तरह जर्जर हालत में हैं नालिया चोक है या टूटी हुई है बड़े नाले खुले हुए हैं और जगह-जगह नालों पर बने मैनहोल खुले हुए हैं कई मोहल्ले में जल भराव की समस्या बनी रहती है जिससे डेंगू मलेरिया जैसी खतरनाक बीमारियां पनप रही हैं इन बीमारियों की वजह सेकई लोगों की जान भी जा चुकी है इस समय प्राइवेट हो या सरकारी अस्पतालों में बेशुमार बीमारो की भीड़ लगी हुई है और इन समस्याओं का कारण शहर में लगे गंदगी के ढेर जल भराव एवं टूटे नाली नालियां हैं ज्ञापन में यह भी बताया गया है कि शहर में प्रमुख समस्या आवारा पशु सांड व गायों से भी सारे शहर वासी काफी भयभीत ब परेशान है आए दिन यह छोटटा पशु कोई ना कोई घटना को अंजाम देते रहते हैं शासन के स्पष्ट आदेश है कि शहर में कहीं भी छोटा पशु नजर नहीं आए यदि आए तो उन्हें पड़कर पशु आश्रय केंद्र में भेजा जाए परंतु शहर में इन आदेशों का कोई मतलब नहीं है अगर छुट्टा पशुओं की गणना की जाए तो शहर में बड़ी संख्या में यह होंगे शासन द्वारा आदेश अनुसार 10 से 25 सितंबर तक इन छोटा पशुओं को पकड़ने का अभियान भी चल रहा है परंतु इस अभियान का असर शहर में रत्ती भर भी नहीं दिख रहा है उन्होंने जिलाधिकारी से मांग की है कि शहर को टूटे नाली नालियां एवं जर्जर सड़कों को तत्काल ठीक कराया जाए कराया जाए जल भराव की समस्या को दुरुस्त कराया जाय सफाई व्यवस्था को युद्ध स्तर पर कराया जाए शहर में जगह-जगह खुले नाले और नालियों को बंद कराया जाए शहर को आवारा पशुओं से तत्काल मुक्त कराया जाए और इस समय फैल रही डेंगू मलेरिया जैसी बीमारी की रोकथाम हेतु शहर के मोहल्ले मोहल्ले में स्वास्थ्य विभाग द्वाराकैंप लगवाय जाएं और बीमारी का मुख्य कारण बने मच्छरों को मारने हेतु गली मोहल्ले की घनी बस्तियों में कीटनाशक का छिड़काव एवं फॉगिंग कराई जाए उन्होंने कहा कि शहर में फाकिंग तो होती है लेकिन मेंन सड़कों पर फॉर्मेलिटी की जाती है घनी बस्तियों में कभी कोई फाकिंग या कीटनाशक छिड़काव नहीं होता है इस मौके पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व सदस्य मुन्नालाल सागर पीसीसी सदस्य सोहन पाल साहू जी जिला महासचिव सचिव सैयद गुलाम अब्बास अल्पसंख्यक विभाग के प्रदेश सचिव सैयद जाविर जयदीप जेडी शहर उपाध्यक्ष अहमद अमजदी जिला उपाध्यक्ष अल्पसंख्यक विभाग सलीम अंसारी जिला अध्यक्ष माइनॉरिटी डिपार्टमेंट हाजी नुसरत अली किसान कांग्रेस के अध्यक्ष बृजभूषण सिंह अल्पसंख्यक विभाग के जिला अध्यक्ष इकरार अली शहर उपाध्यक्ष मोहम्मद जाहिद हुसैन वार्ड अध्यक्ष नौशाद अली जमशेदतुर्क ठाकुर जय सिंह उपाध्यक्ष उपहार आजाद वार्ड अध्यक्ष रईस अहमद जमशेदपुर साहिदा हुसैन सलमानी शमशाद हुसैन भगवान सिंह यादव बृजभूषण जीशान नरेंद्र शर्मा महासचिव अमन खान आलोक जोशी यमन वसीम खान मोहम्मद मियां शिव कुमार यादव सुशांत सिंह कल्लू अंसारी पूर्व पीसीसी गौरव राठौर बने खान सेवा दल के अध्यक्ष हरीश कश्यप राकेश मौर्या कोषाध्यक्ष शहर हाजी नजीर शहर सचिव अकील अहमद जहीर हाजी इमरान खान अहमद और सोशल मीडिया के प्रदेश महासचिव शशांक राठौर जी सहित आदिलोग मौजूद रहे।

आप कार्यकताओं ने शहीदों को दी श्रदांजलि

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। आम आदमी पार्टी जिला अमरोहा इकाई ने आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के आदेश पर हसनपुर नगर पालिका में स्थित शहीद भगत सिंह स्मारक में जम्मू कश्मीर के अनंत नाग में आतंकवादियों से मुठभेड़ में चार मां भारती के लाल शहीद हो गए थे।उनकी शहादत में एक शोक सभा का आयोजन किया गया।जिसमें जिलाध्यक्ष रूपचंद चौहान, पूर्व प्रदेश सचिव मोहम्मद आमिर, अमर सिंह खागी, यशपाल सिंह राणा, राहुल शर्मा, डॉ जावेद,, कविता कांत, शाहनवाज एडवोकेट, वसीम सिद्दीकी, फैजल इदरीसी, हुकुम सिंह खागी, डॉक्टर नफीस, इंतजार गुर्जर, वकील अहमद, फरीद खान, हाजी सलामत, रफीक अहमद, मुरारी लाल मौर्य, महेश पाल, फिरोज मलिक, फैजान सिद्दीकी, मुशर्रफ अली, रोहतास इंतजार, आदि सम्मानित कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बड़े भाईयों ने छोटे भाई पर दरांती से किया हमला, कार्रवाई में जुटी पुलिस

प्रात : किरण संवाददाता

हसनपुर। क्षेत्र के एक गांव में धान उठाने को लेकर हुए विवाद में दो भाइयों ने अपने छोटे भाई को दरांती से हमला कर घायल कर दिया।जिसके बाद घायल अपने परिजनों के साथ कोतवाली पहुंचा और पुलिस को तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की।पुलिस ने घायल को नगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया है।बता दें कि पूरा मामला हसनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव ओसा माफी का है। यहां गांव निवासी युवक देवेंद्र पुत्र मुनेश शर्मा ने पुलिस को तहरीर देते हुए बताया कि शुक्रवार की सुबह वह अपने धान उठा रहा था।इसी दौरान उसके दोनों भाई धान उठाने को लेकर विवाद करने लगे।इसके बाद जमकर कहा सुनी होने लगी। आरोप है कि दोनों भाइयों ने उसके हाथ में दरांती से वार कर उसे घायल कर दिया।जिससे वह लहुलुहान हो गया। आरोप है कि दोनों भाई अपने माता-पिता के साथ भी जमकर मारपीट करते हैं। वही लहूलुहान हालत में युवक अपने माता-पिता के साथ कोतवाली पहुंचा और पुलिस को अपने दोनों आरोपी भाइयों के खिलाफ तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की।पुलिस ने घायल को नगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कर दिया। पुलिस मामले की अग्रिम कार्यवाही में जुटी है। कोतवाल विनय कुमार ने बताया कि तहरीर प्राप्त हुई है घायल को नगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। अग्रिम कार्यवाही की जा रही है

17 सितम्बर को मेला, 02 अक्टूबर को होगी आयुष्मान सभा

17 सितम्बर से चलेगा पखबाड़ा, पात्र लाभार्थियों को मिलेंगे आयुष्मान कार्ड

प्रात : किरण, संवाददाता

बदायूँ। भारत सरकार द्वारा यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु जनसमुदाय में विभिन्न स्वास्थ्य सेवाओं के बारे जागरूकता बढ़ाने और महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं से संतृप्त करने के उद्देश्य से आयुष्मान भवः अभियान का शुभारम्भ दिनांक 13.09.2023 को मा0 राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू द्वारा किया गया है। जनपद में अभियान के सफल संचालन व रूपरेखा के सम्बंध में जिलाधिकारी मनोज कुमार व मुख्य चिकित्साधिकारी प्रदीप कुमार वार्ष्णेय ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट स्थित सभागार में मीडियाबंधुओं से वार्ता की। डीएम ने कहा कि सभी लोग स्वस्थ्य व निरोग रहें। इस अभियान का यही मूल उद्देश्य है। जिलाधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि आयुष्मान भव अभियान के 05 प्रमुख घटक है सेवा पखवाड़ा, जिसके अन्तर्गत दिनांक 17 सितम्बर 2023 से संचालित करते हुये स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत जनपद के समस्त जनपद एवं ब्लाक स्तरीय चिकित्सालयों का कायाकल्प करते हुये अन्तरिक मूल्यांकन कराया जायेगा। उक्त पखवाड़ा दिनांक-02 अक्टूबर 2023 तक मनाया जायेगा। समस्त कर्मियों को संक्रमण से बचाव के उपाय की एस०ओ०पी० से अवगत कराया जायेगा। उन्होंने बताया कि समुदाय स्तर की संस्थाओं यथा समस्त रोगी कल्याण समिति, जन अरोग्य समिति, ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समितियों के माध्यम से स्वच्छता गतिविधियों का आयोजन कराया जायेगा। रक्तदान महादान अन्तर्गत जनपद के समस्त ब्लड बैंको द्वारा विभिन्न सहयोगी संस्थाओं के सहयोग से ब्लड डोनेशन कॅम्प का आयोजन करते हुये अधिक से अधिक मात्रा में ब्लड कलेक्शन कराया जायेगा। अंगदान शपथ अन्तर्गत जरूरतमंदों लोगों को अंगो एवं ऊतकों को उपलब्ध कराने हेतु समस्त जिला मुख्यालयों, चिकित्सा इकाईयों, ग्राम सभाओं, स्कूल, कालेजों, दफ्तरों आदि में अंगदान प्रेरित करना। मुख्य चिकित्साधिकारी प्रदीप कुमार वार्ष्णेय ने बताया कि अभियान का द्वितीय घटक आयुष्मान आपके द्वार 3.0 है, जिसके अन्तर्गत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अन्तर्गत समस्त छूटे हुए पात्र लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड उपलब्ध कराया जायेगा। तृतीय घटक आयुष्मान मेला है, जिसके अन्तर्गत 17 सितम्बर 2023 से प्रत्येक रविवार को समस्त 15 सामुदायिक स्वास्थ्य 50 प्रा० स्वा० केन्द्रों/शहरी प्रा० स्वा० केन्द्रों पर आयुष्मान मेला का आयोजन कर विशेषज्ञ चिकित्सको के माध्यम से उपचार तथा समस्त प्रकार की जांचो एवं औषधियों की सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी। तथा आगामी प्रत्येक शनिवार से समस्त 269 उपकेन्द्र स्तरीय हेल्थ एण्ड वेलनेस सेन्टरों पर आयुष्मान मेला का आयोजन कर उक्त मेले में प्रथम सप्ताह में गैर संचारी रोगो से सम्बन्धित मरीजों को द्वितीय सप्ताह में टी०बी० कुष्ठ एवं अन्य संचारी रोगों से सम्बन्धित तृतीय सप्ताह में मातृ एवं बाल स्वास्थ्य तथा पोषण से सम्बन्धित तथा चतुर्थ सप्ताह में राज्य/जनपद की स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप (जन जातीय क्षेत्रों में स्किल सेल तथा गैर जन जातीय क्षेत्रों में नेत्र देखभाल) स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जायेगी। उन्होंने बताया कि अभियान का चतुर्थ घटक आयुष्मान सभा है, जिसके अन्तर्गत ह्न दिनांक 02 अक्टूबर 2023 को प्रत्येक ग्राम एवं वार्ड स्तर पर आयुष्मान सभा का आयोजन कर विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं और सेवाओं के बारे में जागरूकता प्रदान की जायेगी। पंचम घटक आयुष्मान ग्राम के अन्तर्गत पात्र लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड का वितरण, शत प्रतिशत लाभार्थियों की आभा आई डी०, 30 वर्ष से उपर आयु के व्यक्तियों की गैर संचारी रोगों (मधुमेय व उच्च रक्तचाप) की शत प्रतिशत की जांच, क्षय रोगियों का 85 प्रतिशत से ऊपर उपलब्धि वाले ग्रामों को आयुष्मान ग्राम के रूप में चयनित कर सम्मानित किया जायेगा।

उर्दू अध्यापक डॉ आफताब अंसारी के इंतकाल पर किया रंज- ओ- गम का इजहार

प्रात : किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

स्योहारा। एम.क्यू. इंटर कालेज में उर्दू अध्यापक के पद पर तैनात रहे धामपुर निवासी 78 वर्षीय डॉ आफताब अंसारी के इंतकाल पर एमक्यू इंटर कॉलेज में उनके इंतकाल पर एक बैठक की गई।जिसमे मरहूम की कॉलेज में दी गई खिदमात को याद करते हुए खिराजे अकीदत पेश की गई। इस मौके पर कॉलेज के प्रधानाचार्य इशरत अली सिद्दीकी,उबैद अख्तर, बदर आलम,अथर जमाल,शरीफ अंसारी,साजिद अहमद,अतिउर्रह्मान, मौ. यूनुस चौधरी आदि सहित अन्य अध्यापकगण और स्टाफ मौजूद रहे। आपको बताते चले कि डॉ आफताब अंसारी उर्दू के माहिर उस्ताद थे वह अपने जीवन में कांग्रेस से भी जुड़े रहे वह धामपुर के वरिष्ठ कांग्रेसी कांग्रेसी नेता होने के साथ ही धामपुर के वरिष्ठ पत्रकार फैजान अंसारी के पिता भी थे। उनके इंतकाल पर अनेक बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों और गणमान्य लोगों में वरिष्ठ समाजसेवी एवं चिकित्सक डा.मनोज कुमार वर्मा, पूर्व लोकसभा प्रभारी बसपा मुरादाबाद हाजी मौहम्मद इलियास, स्योहारा नगर पालिका अध्यक्ष फैसल वारसी, पूर्व विधायक हाजी नईमुलहसन, चौधरी , प्रबंधक एम. क्यों. इंटर कालेज(गर्ल्स) चौधरी जकीउर्रहमान, वरिष्ठ समाजसेवी चौधरी फहीमुर्रहमान, बसपा नेता आदिल चौधरी, मा. हाजी अनवर जमाल, डा.दानिश कमाल, डा.जानिब हाशमी, पूर्व डीएसपी इकबालुज्ममा, असजद चौधरी, डा.नसीम हाशमी, हाजी जमील अहमद, युवा नेता नजीबुलहसन, हाफिज शमीम अंसारी, प्रधान ग्राम चकमहदूद सानी कासिम अंसारी, बसपा नगराध्यक्ष इफ्तेखार चौधरी, सभासद यूसुफ चौधरी, शमीम शब्बू, पप्पू मंसूरी, सरफराज अंसारी आदि तथा प्रेस क्लब स्योहारा की ओर से अध्यक्ष रियाज उर्फ.प्रिंस, डा.सुआलेह अहमद, धर्मेंद्र कुमार, चमन भारद्वाज, नादिर त्यागी, गय्यूर चौधरी, आकाश तोमर, अरशद चौधरी, विपिन शर्मा, फजल अंसारी, अश्वनी विश्नोई, राशिद पीटर, अंकुल प्रजापति, आदि ने मरहूम की जन्नतुल फिरदौस में आला मुकाम और मगफिरत के लिये दुआ की।

उदयगिरि गोस्वामी बने भाजपा जिला अध्यक्ष, भाजपाइयों ने बाँटी मिठाई

प्रात : किरण संवाददाता

हसनपुर।भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता उदयगिरि गोश्वामी को भारतीय जनता पार्टी का नया जिला अध्यक्ष बनाया गया है। उदयगिरि गोस्वामी के भाजपा जिलाध्यक्ष बनने पर भाजपा हसनपुर विधायक महेंद्र सिंह खडगवंशी एवं भाजपा के जिला महामंत्री अभिनव कौशिक ने बधाई दी है। शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी की ओर से पूरे प्रदेश के जिलाध्यक्षों के नामों की घोषणा की गई है। अमरोहा में उदयगिरि गोश्वामी को भाजपा के जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। भाजपा जिलाध्यक्ष बनाए जाने पर उन्हें बधाई संदेश प्राप्त हो रहे हैं, वही कार्यकताओं ने एक दूसरे को मिठाईयां खिलाकर खुशी का इजहार किया बताते चले की उदयगिरि गोस्वामी 2001 से 2004 तक जिला महामंत्री भाजपा रहे वही संगठन में उनके काम को देखते हुए इन्हें 2004 से 2008 तक जिला अध्यक्ष अमरोहा का दायित्व सोपा गया वही 2008 में प्रशिक्षण प्रकोष्ठ प्रभारी उत्तर प्रदेश डी सी डी एफ के अध्यक्ष रहे, वही इन्होंने विधानसभाओं के प्रभारी का भी दायित्व संभाला और मौजूदा समय में नमामि गंगे के प्रदेश सहसंयोजक के रूप में कार्य कर रहे थे वहीं संगठन ने इन पर दोबारा भरोसा जताते हुए इन्हें जिला अध्यक्ष अमरोहा की कमान सौंपी है। वही उनके जिला अध्यक्ष बनने से कार्यकताओं में खुशी का माहौल है।

उप्र में बीमा राशि को लेकर सगे भाइयों में झड़प, एक की मौत

उन्नाव, एजेंसी

उत्तर प्रदेश में उन्नाव जिले के पुरवा कोतवाली क्षेत्र में बीमा राशि के बंटवारे को लेकर बृहस्पतिवार की रात तीन सगे भाइयों के बीच हुई झड़प में एक की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस क्षेत्राधिकारी दीपक सिंह ने बताया कि इस घटना में मारे गये व्यक्ति के परिजनों के अनुसार पुरवा कस्बे के मोहल्ला पश्चिम टोला निवासी रजनू की पत्नी रामरानी की लगभग नौ महीने पहले एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। उन्होंने बताया कि रामरानी की मौत के बाद दुर्घटना बीमा के लगभग दो लाख रुपये बड़े बेटे राजबहादुर के खाते में अभी कुछ दिन पहले जमा हुए थे। उन्होंने बताया कि इसके बाद से ही दोनों छोटे भाई बड़े भाई पर बीमा राशि का बंटवारा करने का दबाव बना रहे थे। सिंह ने बताया कि इसी बात को लेकर बृहस्पतिवार रात भी तीनों भाइयों में विवाद हो गया। उन्होंने बताया कि इसी दौरान सभी ने एक दूसरे पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। उन्होंने बताया कि इस घटना में सबसे छोटा भाई राम आसरे (45) गंभीर रूप से घायल हो गया। उन्होंने बताया कि आसरे को पहले पुरवा के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया और इसके बाद जिला अस्पताल ले जाया गया। सिंह ने बताया कि आसरे की इलाज के दौरान मौत हो गई। उन्होंने बताया आसरे के परिजनों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

उप्रः जमीनी विवाद के चलते तीन लोगों की हत्या, नाराज ग्रामीणों ने कई झोपड़ियों में लगाई आग

कौशांबी, एजेंसी

उत्तर प्रदेश में कौशांबी जिले के संदीपन घाट थाना क्षेत्र में किसी जमीनी विवाद के चलते दलित परिवार के तीन लोगों की कथित रूप से हत्या किए जाने का मामला सामने आया है। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि इस मामले में चार आरोपियों की तलाश की जा रही है। उसने बताया कि इस घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने गांव की कई झोपड़ियों में आग लगा दी है। पुलिस ने बताया कि ककराबाद गांव निवासी शिवशरण (30) की संदीपन घाट थाना क्षेत्र के छबीले पुर गांव में ससुराल थी और उसने तीन वर्ष पूर्व अपनी ससुराल के निकट स्थित पंडा चौराहे के पास जमीन खरीदी थी, जहां वह अपनी पत्नी बृजकली (25)के साथ रहता था। उसने बताया कि अज्ञात बदमाशों ने बृहस्पतिवार रात अपने घर में सो रहे शिवशरण, उसकी पत्नी और उसके ससुर होरीलाल(60) की गोली मार कर हत्या कर दी। पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि ग्रामीण पुलिस को मृतकों के शव नहीं ले जाने दे रहे थे, लेकिन पुलिस अधिकारियों ने ग्रामीणों को समझा बुझाकर शव अपने कब्जे में लिए। उन्होंने बताया कि शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। श्रीवास्तव ने बताया कि घटना का कारण जमीनी विवाद है। उन्होंने बताया कि झोपड़ियों में लगाई गई आग को बुझा दिया गया है। उन्होंने बताया कि इस मामले में चार आरोपियों को पकड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इलाके में स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में है।

डीएम और एसपी से मिले मुस्लिम कमेटी के पदाधिकारी, रखी व्यवस्था दुरस्त कराने की माँग

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। पैगम्बर-ए-इस्लाम हजरत मौहम्मद के जन्म दिवस के अवसर पर अमरोहा में 17 दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। 28 सितंबर को नगर में ईद मिलादुन्नबी का विशाल जुलूस निकाला जाएगा। इसको लेकर मुस्लिम कमेटी के पदाधिकारियों ने पहले एक बैठक की इसके बाद डीएम -एसपी से व्यवस्थाओं को लेकर ज्ञापन सौपा। दोनों अधिकारियों ने कमेटी के लोगों को पूर्ण सहयोग करने का आश्वसान दिया। कमेटी के अध्यक्ष सरताज आलम मंसूरी ने बताया कि पैगम्बर-ए-इस्लाम हजरत मौहम्मद के जन्म दिवस के अवसर पर अमरोहा कमेटी द्वारा परम्परागत 17 दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम जिसमें कमेटी द्वारा नगर के विभिन्न स्थानो, मैरिज हालो, मस्जिदों, स्कूलो व निजी आवासों पर कार्यक्रम जलसा-ए-सीरते पाक, सेमीनार, कॉन्फ्रेस, महफिले-ए-नात कुल हिन्द नातिया मुशायरा आयोजित होते है। मुख्य कार्यक्रम विशाल जुलूस जश्ने -ए-ईद मिलादुन्नबी 28 सितंबर को जामा मस्जिद से दोपहर डेढ़ बजे बाद नमाजे जोहर शुरू होकर शहर के विभिन्न मोहल्लो से होता हुआ मौहल्ला कोट, बाजार कोट होता हुआ टाउन हाल के विशाल मैदान मे बाद दुआ के बाद समाप्त होता है। ज्ञापन में साफ सफाई, जर्जर विद्युत लाइन व पोल मुख्य रूप से रहे। अध्यक्ष सरताज आलम मंसूरी, हबीब अहमद एड., मंसूर अहमद एड., हाजी खुर्शीद अनवर, अली इमाम एड., यासिर अंसारी एड., कमर नकवी, जफर शाह खां, वहाब सैफी, इकराम जैदी, परवेज आलम, सरकार आलम आदि पदाधिकारी मौजूद रहे।

मोटे अनाज से शरीर ही नहीं मानसिक विकास भी होता है:जिलाधिकारी

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। डीएम राजेश कुमार त्यागी की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि शिक्षक विधायक हरि सिंह ढिल्लों की उपस्थिति में कलक्ट्रेट सभागार में उत्तर प्रदेश मिलेट्स पुनरोद्धार कार्यक्रम 2023-24 के अंतर्गत श्री अन्न /मिलेट्स पर अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर उपनिदेशक कृषि राम प्रवेश व कृषि विज्ञान केंद्र गजरौला प्रभारी मिश्रा जी व डॉक्टर प्राची पटेल द्वारा मोटे अनाजों के प्रकार एवं लाभ के बारे में गंभीरता से जानकारी दी गई। डीएम राजेश कुमार त्यागी ने श्री अन्न के लाभों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि मिलेट्स शरीर के स्वास्थ्य के लिए ही नहीं मानसिक विकास के लिए भी बहुत ही आवश्यक है। आज के जमाने में यह भोजन के रूप में ही नहीं यह दवा के रूप में भी प्रयोग किया जा रहा है।बीमारी से लड़ने की जितनी क्षमता मोटे में अनाज में होती है उतनी अन्य किसी अनाज में नहीं होती है। कहा कि आप लोग अपने किचन में मोटे अनाजों को सम्मिलित करें घर में लाएं और अपने भोजन के रूप में प्रयोग करें खेती में भी मोटे अनाज को स्थान दें मोटे अनाजों के प्रयोग के लिए एक अभियान चलाएं और इसको आंदोलन का रूप दें। कहा कि इतनी बीमारियां बढ़ रही हैं बच्चों का शारीरिक विकास व मानसिक विकास अवरुद्ध हो रहा है इस सबके लिए मोटे अनाज हमारे जीवन के लिए बहुत ही लाभदायक हैं । कहा की जल्द ही मार्केट भी इसके लिए तैयार की जाएगी ताकि लोग अधिक से अधिक मोटे अनाजों के प्रति जागरूक हो सके और अपने जीवन में प्रयोग कर सकें। आज हम इस कार्यक्रम में संकल्प लेते हैं कि हम अपने खान खानपान में मोटे अनाजों को प्राथमिकता देंगे। मोटे अनाज में फाइबर एंटीऑक्सीडेंट उच्च मात्रा में पाए जाते हैं जो पाचन क्रिया में अत्यधिक सहायक हैं। मोटे अनाज कंगनी में प्रोटीन फाइबर फैट कैल्शियम एवं लोहा पाया जाता है जो शरीर में शर्करा एवं कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित करता है। रागी में कैल्शियम गेहूं की तुलना में 10 गुना से ज्यादा होता है साथ ही विटामिन ए विटामिन बी फास्फोरस प्रोटीन एवं आहार फाइबर प्रचुर मात्रा में होता है जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक है। शिक्षक विधायक हरी सिंह ढिल्लो ने कहा कि आज दुनिया में मोटे अनाजों के प्रयोग करने के लिए आवाज उठ रही है भारत सरकार द्वारा 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित किया गया है। कहा कि पहले यह सब हम प्रयोग करते थे लेकिन आज बंद कर दिए हैं और यह सब फाइव स्टार होटल में देखने को मिल रहा है। भारत मोटे अनाजों की निर्यात में दूसरे नंबर पर है कहा कि हम सब मोटे अनाजों को प्रयोग करने के लिए जागरूक हो और अपने जीवन में थाली में मोटे अनाजों को प्रयोग करने के लिए प्राथमिकता दें। महिलाओं को भी प्रोत्साहित करें कहा कि बच्चे का शारीरिक विकास मानसिक विकास नहीं हो पा रहा है हड्डियां कमजोर हैं यह सब मोटे अनाजों की कमी के कारण हो रहा है । क्रांति के रूप में मोटे अनाजों का प्रयोग करें जिससे आपकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी और और उत्पादन में धन के भी प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं होगी। अपने स्वास्थ्य में सुधार के लिए हमें मोटे अनाजों को प्राथमिकता देने चाहिए । प्रशिक्षण के अवसर पर अपर जिलाधिकारी न्यायिक माया शंकर यादव, उपनिदेशक कृषि राम प्रवेश, जिला क

अवैध बालू व्यवसाय पर चला पुलिसिया कार्रवाई का डंडा

- बालू व्यवसाय का अवैध खनन अंधेरी रातों में चलता है गोरखधंधा- डीएसपी,
- विधि व्यवस्था डीएसपी डॉ. गौरव व उनकी पुलिस टीम ने 16 ट्रैक्टर ओवरलोड बालू के साथ किया जप्त

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिलेभर में अवैध बालू खनन व बालू माफियाओं पर नकेल कसने के लिए पुलिस प्रशासन कई तरह की हाथकंडे अपना रही हैं, लेकिन बालू माफिया अवैध रूप से बालू खनन करने से बाज नहीं आ रहे है, जैसे-जैसे रात गहरी होती चली जाती है तो अंधेरे का फायदा उठाकर बालू माफिया अपना बालू उठाव किये जाने का गोरखधंधा शुरू हो जाता है, और सुबह होने से पूर्व ही करोड़ों रुपए का बालू व्यवसाय को अंजाम दे दी जाती है। इसी कड़ी में बालू माफिया के बालू खनन के अवैध धंधे व कालाबाजारी की रोकथाम को लेकर जिला पुलिस प्रशासन व खनन विभाग की संयुक्त टीम द्वारा समय समय पर कई बार कार्रवाई भी की जाती रही है, और लगातार प्रशासन इस पर मुस्तैद हो उक्त गतिविधियों को लेकर कार्रवाई किये जाने की दिशा में कार्यरत है। इसी बाबत काजरैली थाना परिक्षेत्र इलाके से सटे नदी व आसपास के क्षेत्र में विधि व्यवस्था डीएसपी डॉ. गौरव कुमार व उनकी पुलिस टीम सहित अन्य पुलिस बल की तैनाती कर वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर देर रात एक टीम गठित कर अवैध बालू खनन मामले सहित खरीद बिक्री करने वाले माफियाओं पर नकेल कसने के लिए सर्च अभियान चलाया गया था। इस दौरान पुलिस ने 16 ट्रैक्टर को जप्त कर कानूनी प्रक्रिया के तहत मामला दर्ज किया है। इस दौरान पुलिस टीम ने ओवरलोड बालू लदे हुए कई ट्रैक्टर ट्राली को भी जब्त किया है, जो गाड़ियां जप्त की गई है उनके मालिक के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई किये जाने की कवायद शुरू कर दी है। वही मामले को लेकर डीएसपी डॉ. गौरव कुमार ने बताया कि अवैध रूप से पकड़े ट्रैक्टर के मालिक पर एफआईआर दर्ज करते हुए बालू माफियाओ के विरुद्ध अवैध बालू खनन पर रोकने की भी चेतावनी दी गई है, साथ ही उन्होंने कहा है अगर फिर भी अवैध रूप से बालू का व्यवसाय करने वाले लोग पकड़े जाते हैं, तो उन्हें विधि संवत कार्रवाई करते हुए कठोर से कठोर सजा दी जाएगी। अब सवाल खड़े हो रहे हैं कि बालू खनन के खिलाफ पुलिसिया कार्रवाई की भेंट चढ़ रहे हजारों गरीब परिवार के लोग सरकार द्वारा पारित आवासीय योजना का लाभ लेकर घर निर्माण कार्य पर ग्रहण लगता दिखाई दे रहा है, लोगों को अपने आसिया बसाने की सपने पर कही सरकार के नीतियों के विरुद्ध स्थानीय थाना पुलिस व विभाग की नजर ध्वस्त करने की मनसा तो नही है ये सबसे बड़ा सवाल लोग खड़े कर रहे हैं।

झपटमारों का आतंक से परेशान हैं महिलाएं, चैन की नींद में सो रही पुलिस

- शहर में दर्जनों सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं वावजूद अपराधी पुलिस के गिरफ्त से अबतक बाहर-प्रो. लक्ष्मी

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। अगर आप सोने की चेन पहनकर घर से बाहर निकलने की भूल कर रहे हैं तो हो जाइए सतर्क आपके खून-पसीने की मेहनत की कमाई से बने हुई इस चेन पर झपटमारों की नजर पड़ सकती है, और पलक झपकते ही लाखों रूपए मूल्य के सोने के आभूषण व चेन छिनतई कर बदमाश फरार हो सकते हैं, सतर्कता बरतने से परहेज न करे और आप पुलिस के भरोसे भी न रहें क्योंकि जो वर्तमान हालत जिले की पुलिस कर्मियों की दिख रही हैं, इससे ये साफ जाहिर होता दिख रहा है कि पुलिस भी भगवान भरोसे ही लोगों को छोड़ चुकी है, क्योंकि ये झपटमार अब इतने बेखौफ हो चुके हैं कि पुलिस थाने के सामने से गले की स्वर्ण चेन आभूषण को झपट्टा तो मार रहे हैं, आलम यह है कि डीआईजी कोठी के सामने भी महिला को शिकार बनाने से नहीं चूके हैं। पुलिस ऐसे मामलों में हाथ पर हाथ ही धरकर बैठी चल रही है। बेहतर है कि आप खुद सतर्क रहिए और चेन पहनकर बाहर निकलने से परहेज किजिए, आभूषणों की नुमाइश के जद्दोजहद में न रहे क्योंकि जिले भर में अभी तक के झपटमारी के मामलों में तो यही देखा जा रहा है की पुलिस की ओर से की जाने वाली विधिसम्मत कार्रवाई से आपकी चेन वापस नहीं मिलते दिख रही है। स्वर्ण आभूषण से निर्मित स्वर्ण चेन झपटमारी का एक और मामला बरारी थाना क्षेत्र के चाणक्य विहार कॉलोनी के रहने वाली एक एसएम कॉलेज की शिक्षिका प्रो. लक्ष्मी सिंह के साथ झपटमारी की वारदात घटित हुआ है। जिन्होंने मामले को लेकर बरारी थाना में लिखित आवेदन दे मामले से अवगत कराया है। वही उन्होंने लिखित आवेदन पत्र में आरोप लगाते हुए कहा है कि विगत 8 सितंबर को वह शाम करीब चार बजे अपने कार्यस्थल से ई-रिक्शा पर सवार हो अपने घर चाणक्य विहार कॉलोनी वापस लौट रही थी, इसी क्रम में कॉलोनी के मोड़ के समीप चंपारण मीट हाउस के पास रिक्शा से उतरकर पैदल ही अपने घर की ओर जाने लगी तो तभी उनके मकान से ठीक पहले सामने से आ रही एक बाइक पर सवार दो युवकों में से एक युवक ने उनके गले में पहने सोने की चेन जो लगभग डेढ़ भर का था उसे झपट्टा मार खींच लिया और तेजी से मुख्य सड़क की ओर फरार होने में सफल हो गया था।उन्होंने तुरंत थाने में पहुंच मामले की जानकारी दे रिपोर्ट दर्ज कराया था, लेकिन रिपोर्ट दर्ज किए हुए 5 दिन बीत जाने के बावजूद भी पुलिस उक्त मामले में अब तक कोई ध्यान नहीं दिया गया है और न ही पुलिस की पकड़ में कोई अपराधी आया हैं। वही मामले को लेकर प्रो. लक्ष्मी नें पुलिस से अपने आभूषणों की बरामदगी किये जाने की गुहार लगाई हैं कि अपराधी को पकड़ा जाए जिससे महिलाएं अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सके। अब सवाल खड़े हो रहे हैं कि इतनी बड़ी संख्या में झपटमार अपनी वारदात को अंजाम देने में डटे हुए हैं और पुलिस उनके गिरेबान तक इतने साक्ष्य मिलने के बावजूद क्यों नही पहुंच पा रही हैं। शहर में दर्जनों सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं वावजूद अपराधी पुलिस के गिरफ्त से अबतक बाहर है।

घर के कमरे में पंखे से फंदा लगा की खुदकुशी

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। सजौर थाना परिक्षेत्र के अंतर्गत हाजीपुर पंचायत के लखानी पोखर के समीप एक युवक ने फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर लिये जाने का मामला सामने आया है। घटना को लेकर बताया जा रहा है कि मृतक के पिता माता और पत्न ी ने सोचा कि कमरे में सो रहे हैं जब दरवाजा खटखटाया तो नहीं खोला झांक के देखा तो फंदे से लटका हुआ युवक दिखाई दिया, तभी परिजनों ने घर के कमरे का दरवाजा तोड़कर आनन फानन में युवक के बेहतर इलाज के लिए बाइक पर बैठाकर जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय सह अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कराया गया। जहां मौजूद चिकित्सक ने इलाज जांचोपरांत के साथ ही युवक को मृत घोषित कर दिया। मृतक युवक की पहचान अवधेश गोस्वामी के 22 वर्षीय पुत्र विशाल गोस्वामी उर्फ मंटू गोस्वामी के रूप में हुई है। वही घटना से आहत हुई मृतक की मां रूबी देवी ने बताया मृतक के पत्नी के बहनोई राम गोस्वामी की पत्नी कहीं बिना बताए चली गई, और विगत बुधवार के सुबह से गायब है। उसके बाद 11:00 बजे के बाद राम गोस्वामी आया और मेरा बेटा मंटू गोस्वामी को अपने साथ पत्न ी की खोजबीन हेतू अपने संग ले गया था। पूछने पर बताया कि कुलहरिया जा रहा हूं जो बांका जिला के समीप है, वही जब वापस अपने घर करीब 4:00 बजे शाम को लौटा तो उसके मुंह से शराब जैसी काफी दुर्गंध आ रही थी। रात्रि में जब वह नशे में अपनी पत्नी से रुपया मांग रहा था, तो मना करने पर वह पत्नी के साथ लड़ाई झगड़ा करने लगा और मां पिताजी के साथ भी लड़ाई झगड़ा करने लगा था, जिसके बाद हमने सजौर थाना के एक दरोगा को इस लड़ाई झगड़े की बात की सूचना दी, लेकिन सजौर थाना पुलिस के कोई रिस्पांस नहीं लिया गया, यदि समय से थाना आ जाती या थाना की कोई पुलिस पदाधिकारी व जवान में कोई मौके पर पहुंच जाती तो शायद आज हमारा बेटा जीवित रहता लेकिन मेरे पुत्र ने रुपया नहीं मिलने पर घर में सोने जाने की बात कह कर दरवाजा लगा लिया और यह घटना घटित हो सामने आ गई। हम लोगों ने सोचा कि यह सो रहा है, लेकिन जब दरवाजा खटखटाया तो पता चला कि वह फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया है। वही बरारी थाना पुलिस ने परिजनों ने बताये तथ्यों के तहत फर्द बयान दर्ज कर मृतक युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए नवलखा भेज दिया है।

गांधी विचार मंच के तत्वाधान में हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

शामपुर (मुंगेर)। जे.एन. मेमोरियल पब्लिक स्कूल शर्मा टोला हवेली खड़गपुर के परिसदन में गांधी विचार मंच संस्था के तत्वाधान में हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता पूर्व प्रधानाध्यापक श्यामा नंद झा ने की। इस अवसर पर मंच का संचालन विधालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक आदित्य कुमार ने किया। इस मौके पर अध्यक्ष भाषण देते हुए पूर्व प्रधानाध्यापक श्यामानंद झा ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी एक राष्ट्रभाषा है और हम सभी लोगों के लिए मातृभाषा के रूप में इसे प्रयोग करते हैं हिंदी सभी की बोलचाल की भाषा है इससे सभी कार्य आसानी से संपादित होता है।

विधालय के प्रधानाध्यापिका सुश्री अंशु भारती ने कहा कि हिन्दी भाषा को लोक भाषा के साथ अन्य सभी भाषाओं के लिए शब्द से निर्मित सहज भाषा है ।

हिंदी दिवस के मौके पर उपस्थित अतिथि कृष्ण मोहन झा अन्नू कुमारी गांधी विचार मंच के संस्थापक सह पत्रकार सह अधिवक्ता मुकेश कुमार लता अमरदीप कुमार अमर अधिवक्ता जितेंद्र कुमार आशुतोष शर्मा शैलेंद्र ठाकुर सीमा भारती आलोक कुमार ने अपना विचार व्यक्त किया। इस अवसर पर विधालय के छात्र पीहू कुमार, रिमझिम कुमारी, मयंक कुमार, ने हिन्दी काब्य पाठ किया। हिंदी दिवस के मौके पर कविता पाठ के प्रतिभागी को पुरस्कृत किया गया। हिंदी दिवस कार्यक्रम का समापन केन मेमोरियल पब्लिक स्कूल के प्रभारी प्रधानाध्यापक आदित्य कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हो गया ।

विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर दो दिवसीय भव्य मेला होगा आयोजित कि तैयारी पूरी

रूपौली(पूर्णिया) । टीकापट्टी थाना अंतर्गत कोयली सिमड़ा पश्चिम पंचायत में श्रीश्री 108 बाबा विश्वकर्मा पूजा के शुभ अवसर पर युवा नाट्य कला परिषद् पुरानी नंदगोला की ओर से भव्य मेला एवं रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। वहीं स्थानीय मेला पुरानी नंदगोला गांव में होनेवाले श्रीश्री 108 बाबा विश्वकर्मा मेला की तैयारी अंतिम चरण में पहुंच गई है। मेला मैदान में दुकान भी सजने लगी है। मनोरंजन के कई आइटम इस बार मेले में दीखेंगे जो लोगों को लुभाएगा। इस बार के मेले में बड़ी बड़ी झुला, थियेटर के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की दुकानें लगाई जा रही है। दूसरी ओर मेला को आकर्षक और मनोरंजन बनाने के लिए आयोजक कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। श्री श्री 108 बाबा विश्वकर्मा मेला अध्यक्ष जीवछ पासवान ने बताया कि यह मेला रूपौली प्रखण्ड की धरोहर है। मेला प्रतियोगिता में जिला स्तरीय कुश्ती, नौका दौर प्रतियोगिता, स्लाव मोटरसाइकिल रेश, स्लाव साइकिल रेश आदि प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया जाएगा। इसकी तैयारी में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। मेला को बेहतर और भव्य बनाया जाएगा ताकि अधिक से अधिक लोग मेला में आए और इसका आनंद उठाए। 17 एवं 18 सितम्बर यानि दो दिन का मेला लगेगा।मेला को लेकर लोगों में भी काफी उत्साह है। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस मेला को लेकर वे लोग काफी पहले से इंतजार करते हैं। 17 सितम्बर की शाम में इसका उद्घाटन होगा। इस युवा नाट्य कला परिषद् पुरानी नंदगोला गांव कि मेला का सदस्य सचिव दिलीप कुमार जायसवाल, उपसचिव पवन जायसवाल, कोषाध्यक्ष मयंक कुमार, उपकोषाध्यक्ष उमेश पासवान, लखन लाल मंडल उपाध्यक्ष, मेला कमिटी कि सदस्य राजेश मंगल, विकास कुमार, रविंद्र कुमार, गोंविद कुमार, चुन्ना रजक, अमित जायसवाल आदि सदस्य शामिल होंगे।

चावल बेचने के मामले को ले ग्रामीणों ने शिक्षक को रंगेहाथ पकड़ा, हंगामा

- बच्चे को खाना नहीं मिलने पर जमकर हुआ हंगामा
- प्रधानाध्यापक पर कानूनी कार्रवाई किये जाने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता।

शाहकुंड (भागलपुर)। सुलतानगंज प्रखंड परिक्षेत्र अंतर्गत कटहरा पंचायत के मध्य विघालय कुमारपुर कटहरा परिसर में स्कूल प्रधानाध्यापक प्रभाकर कुमार के द्वारा विघालय के मध्यान भोजन हेतू मिलने वाली चावल को छुपके से रसोईया के द्वारा बाजार में लेजाकर बेचे जाने पर आसपास के ग्रामीणों ने प्राध्यापक को रंगेहाथ पकड लिया है, साथ ही ग्रामीणों ने स्कूल प्रांगण में जमकर हंगामा सह विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया था। वही स्कूल के बच्चों को मध्यान्तर में मिलने वाली मिडडे योजना के तहत खाना पेट भर भी नहीं मिल पा रहा था। उक्त मामले को लेकर बच्चों ने भी खाने को लेकर स्कूल प्रांगण में जमकर हंगामा किया। वही स्कूल प्रांगण में ग्रामीण एंव बच्चों ने स्कूल के प्रधानाध्यापक प्रभाकर कुमार के द्वारा स्कूल के आवंटित किए चावल को चोरी छुपके से स्कूल की रसोईया गायत्री देवी के द्वारा गाँव के ही बाजार में व्यपारी को बेचने का आरोप लगाते हुए स्कूल प्रांगण में जमकर हंगामा कर स्कूल प्रधानाध्यापक प्रभाकर कुमार को कानूनी कार्रवाई की मांग की है। वही दूसरी तरफ सरकार के द्वारा चोरी मामले को लेकर स्कूल के प्रधानाध्यापक प्रभाकर कुमार ने बताया कि चावल बेचने का आरोप ग्रामीणों सहित स्कूल के बच्चों के द्वारा गलत आरोप लगाया जा रहा है। चावल को रिफ्रेश के लिए गाँव के ही लोगों के पास भेजा जा रहा था। ग्रामीणों के द्वारा एंव बच्चों के खाना नहीं देने का आरोप गलत बताया जा रहा है, जबकि चावल पुरी साफ है। स्कूल के नामांकित कई बच्चे को मिडडे के तहत खाना नहीं मिलने की बात कही जा रही है, जो आप साफ तौर पर तस्वीरों में देखा जा सकता हैं। इस घटना की जानकारी उपमुखिया सीता देवी एंव प्रतिनिधि संजय मंडल, वार्ड अध्यक्ष शबनम कुमारी के प्रतिनिधि तेजनारयण कुमार, को मिलने पर स्कूल प्रांगण में पहुंचकर मामले को शांत कराते हुए उच्च अधिकारी को सूचना दे कानूनी कार्रवाई की बात कही गई है। इस दौरान तमाम अभीवावक व बच्चे मौके पर मौजूद थे।

अपने अधिकार को ले किया धरना सह हल्ला बोल प्रदर्शन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। ऑल इंडिया कंस्ट्रक्शन वर्कर फेडरेशन के बैनर तले उपश्रमआयुक्त के कार्यालय के समक्ष अपनी मांगों को लेकर बेहतर मजदूरी, नियमित काम, सामाजिक सुरक्षा हक और सम्मान मजदूर वर्ग पर बढ़ते कॉर्पोरेट फासीवाद हमले को लेकर एक दिवसीय प्रदर्शन किया गया। गौरतलब हो की ऑल इंडिया कंस्ट्रक्शन वर्कर फेडरेशन मजदूरों का एक राष्ट्रीय स्तर का संगठन है एआईसीडब्लूएफ ने देशव्यापी आहवान किया है कि देश के हर जिला मुख्यालय में अपनी मांगों को ले केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन आयोजित किया गया है। इस बाबत भागलपुर में भी एक दिवसीय धरना सह हल्ला बोल प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें दर्जनों प्रदर्शन कर रहे एआईडीएसओ के कार्यकताओं ने अपने मौलिक अधिकार मजदूरी में वृद्धि योजना की पर्याप्त जानकारी होना जानकार कंप्यूटर ऑपरेटर आदि मांगों को लेकर प्रदर्शन किया साथ ही केंद्र में मोदी सरकार के कार्यों के विरुद्ध जमकर आलोचना करते हुए कहा कि नरेंद्र मोदी की सरकार पूंजीपतियों की सरकार है, वह मजदूरों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती है।वहीं उन्होंने कहा केंद्र की सरकार की उदासीनता साफ तौर पर मजदूरों पर दिखाई देती है, यह तानाशाही अब नहीं चलने वाली प्रदर्शनकारियों ने साफ तौर से कहा है कि आज के समय में मजदूर की यह स्थिति हो गई है कि मजदूर को अपने अधिकार के लिए प्रदर्शन करना पड़ रहा है, यह काफी शर्मनाक है। वहीं प्रदर्शनकारियों ने यह भी कहा कि मजदूर अधिकारों पर हमला बंद करने, सामाजिक सुरक्षा के अधिकार पर हनन करने, बेरोजगारी को रोजगार देने का काम हो श्रम का मूल्य घटाया जा रहा है उसे बढ़ाया जाए, आदि विषयों को लेकर प्रदर्शन किया है। वहीं उन लोगों का कहना है कि पहले केंद्र सरकार तो मजदूर को परेशान कर ही रही थी अब राज्य सरकार भी इसी नक्शे कदम पर चल रही है, जिसका हमलोग पूर्ण जोर विरोध करते हैं। इसी क्रम में मामले की जानकारी बिहार राज्य निर्माण मजदूर यूनियन के राज्य सह जिला सचिव मुकेश मुक्त ने दी है।

एसडीआरएफ टीम ने आपदा से बचाव की दी जानकारी

प्रात : किरण, संवाददाता

मुंगेर । बरियारपुर प्रखंड कार्यालय के अंबेडकर भवन में आपदा से बचाव हेतु जानकारी उपलब्ध कराने के लिए जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व एसडीआरएफ टीम के एसआई सच्चिदानंद राय के द्वारा किया गया। इस दौरान बीडीओ शशि भूषण कुमार, सीओ रवीना गुप्ता, डॉ अनिल कुमार सिन्हा मौजूद थे। बताया गया कि हमारे देश में अंधविश्वास के कारण सर्पदंश से सर्वाधिक मौतें होती है। जब भी सर्पदंश हो तो बिना देर किए समय रहते चिकित्सकों के पास जाएं। ताकि आपकी जान बच सके। भूकंप आने पर घर से बाहर चले जाए। अगर बाहर ना जा सके तो पलंग के नीचे या पिलर के कोना जैसे स्थान छुप जाए। अक्सर देखा जाता है नदी में क्षमता से अधिक लोग सवार हो जाते हैं। इससे बचे। सूर्यास्त के बाद नाव की सवारी न करें। पूरे प्रदेश में 76 प्रतिशत आबादी बाढ़ से प्रभावित है। जिसमें 17 जिले बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में आते हैं। बाढ़ के पूर्व कुछ जानकारियां सबों को होनी अति आवश्यक है। जिसमें प्रशासनिक स्तर पर किए गए ऊंचे स्थानों की शरण स्थली की जानकारी घर के सभी सदस्यों को होनी चाहिए। मिट्टी के बर्तन में खाने की सामग्री को सुरक्षित रख ले। बाढ़ आने पर कहीं भी जाने के पूर्व पानी की गहराई को जरूर माप ले। इसके लिए अपने साथ लाठी रखें। जल जमाव स्थल पर सुखे नीम के पत्ते का धुआं करें आदि जानकारियां उपलब्ध कराई गई। बीडीओ शशि भूषण कुमार ने कहा कि जो भी जानकारियां उपलब्ध कराई जाती है उसे हर पंचायत के गांव तक पहुंच कर लोगों को जागरूक करें। इस क्रम में टीम के प्रभु कुमार, संतोष कुमार गुप्ता, कृष्णकांत के साथ सोनू कुमार दीपक, सनी कुमार, दिनेश कुमार अजय कुमार ,दिगंबर कुमार, सनी कुमार उपस्थित थे

864 लीटर विदेशी शराब से भरा पिकअप वैन को पुलिस ने किया जब्त

केनगर । थाना पुलिस ने गुरूवार की देर रात्रि बड़ी कार्रवाई करते हुए भारी मात्रा में विदेशी शराब(बीयर) की बड़ी खेप जप्त कर लिया है। पुलिस ने बियर लदा पिकअप वैन को भी जप्त किया है। केनगर थानाध्यक्ष मुकेश कुमार मिश्रा ने बताया गुप्त सूचना मिली कि शराब माफिया द्वारा विदेशी शराब की एक बड़ी खेप थानाक्षेत्र के चूनापुर बनभाग में डीलेभरी दिया जाना है। इस शराब माफिया को पकड़ने तथा शराब को जप्त करने के लिए स्थानीय गुप्तचर को लगाया गया तथा पल-पल की जानकारी गुप्तचर से लेता रहा। सूचना मिली कि अनानास लदा हुआ एक पिकअप वैन चूनापुर होकर जा रही है। गश्ती दल का नेतृत्व करते हुए थानाध्यक्ष मुकेश कुमार मिश्रा ने पिक अप का पिछा किया तो गोआसी विद्यूत पावर सब स्टेशन के पास अनानास लदा पिक अप वैन चालक पिक अप वैन को खड़ी कर अंधेरे का फायदा उठाते हुए भाग गया। थानाध्यक्ष ने बताया बिना नम्बर वाले पिकअप वैन को जप्त कर जांच की गई तो अनानास के बीच में कई कार्टून थे

आरएसएम नर्सिंग होम संग्रामपुर को एसडीओ ने किया सील

नर्सिंग होम में भर्ती मरीज को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र संग्रामपुर में कराया भर्ती

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर(मुंगेर)। अवैध तरीके से चलाए जा रहे आरएसएम नर्सिंग होम को एसडीओ तारापुर राकेश रंजन कुमार के द्वारा सील किया गया। आरएसएम नर्सिंग होम में भर्ती मरीजों को अनुमंडल पदाधिकारी के देखरेख एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी उपेंद्र प्रसाद एवं स्वास्थ्य प्रबंधक सत्येन्द्र कुमार के नेतृत्व में सभी को एम्बुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ केंद्र सरकारी अस्पताल संग्रामपुर में भर्ती कराया गया। जिसमें कुल पांच मरीज थे एसडीओ श्री कुमार ने बताया कि आरएसएम नर्सिंग होम के बारे में तारापुर प्रखंड के खुदिया महेशपुर गांव के पिंटू कुमार ने अपनी बहन करिश्मा देवी के आपरेशन के दौरान मौत होने की बात कही थी। पिन्टू के बहन की शादी संग्रामपुर प्रखंड के चन्दनियां गांव निवासी आशीष कुमार के साथ हुआ था । करिश्मा गर्भवती थी जिसे एक ग्रामीण चिकित्सक के सलाह पर नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया था। उसी आलोक में एसडीओ ने नर्सिंग होम पहुंच कर वहां मौजूद चिकित्सक संजीव कुमार श्रीवास्तव से पूछताछ किया। उनके द्वारा आरएसएम नर्सिंग होम का रजिस्ट्रेशन नही दिखाया गया,एवं उनके द्वारा जो डिग्री दिया गया था वह संदेहास्पद लगा। नर्सिंग होम के डाक्टर श्रीवास्तव से बायोलोजी लिखने एवं अन्य शब्द लिखने कहा तो वह भी नही लिख पाये जिससे और शक हुआ। यही नही पांच गर्भवती महिला का जो विभिन्न क्षेत्र से आया हुआ था, उनका भी ओपरेशन किया गया था। यह ओप्रेशन किन के द्वारा किया गया यह भी स्पष्ट नही बताया गया ।जब नर्सिंग होम में भर्ती मरीज रेशमी देवी ग्राम मुर्गियां टोला संग्रामपुर से पुछा तो कहा कि आशा हमें यहां लेकर आयी था और ओप्रेशन दवाई आदि का बहुत पैसा लिया गया। जबकि कहुआ गांव की पुजा कुमारी ने बताया कि आज पांच दिन पहले ओप्रेशन हुआ है,बच्चा का ईलाज भागलपुर में रहा है और हमें भी खांसी एवं दर्द रहता है इलाज के नाम पर 30 हजार रुपया लिया गया है। हमें भी यहां पर आशा लेकर आया था। हम इस क्लिनिक को जानते तक नही थे वही अन्य मरीजों ने भी यही बताया जिसकारण से नर्सिंग होम को सील किया गया।

चलाया गया सघन वाहन चेकिंग अभियान

पूर्णिया/ धमदाहा । धमदाहा थानाध्यक्ष कुमार अभिनव के द्वारा क्राइम कंट्रोल करने के लिए थाना क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। ढोकवा मोड, लोहिया चौक, सिंधडा पट्टी दमगड़ा सहित जगह-जगह पर वाहनों की जांच किया गया। दो पहिया और चार पहिया वाहन को रोककर सघन तलासी कर हजारों रुपये के जुमार्ने की वसूली की गई। धमदाहा थानाध्यक्ष कुमार अभिनव ने बताया कि क्षेत्र में लगातार वाहन चेकिंग किया जा रहा है जिसमें वाहन के कागजात, ड्राईवरी लाइसेंस, हेलमेट आदि नहीं पाए जाने पर वाहन चालकों का चालान काटा जाता है। उन्होंने कहा कि इस तरह का छापामारी अभियान अभी लगातार जारी रहेगा। छापामारी अभियान से लोगों में हड़कंप मचा रहा।

सड़क मार्ग पर जल जमाव का निरीक्षण करने पहुंचे वीडियो एवं अंचल अधिकारी

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। बीते 11 अगस्त को प्रखंड के ददरीजाला पंचायत अंतर्गत वार्ड संख्या 02 एवं 03 में सड़कों पर जल जमाव की समस्या को लेकर संबंधित वार्ड के सैकड़ों ग्रामीणों ने प्रखंड सह अंचल कार्यालय पहुँच कर बीडीओ एवं सीओ के समक्ष आक्रोश व्यक्त करते हुए लिखित आवेदन देकर नाला निर्माण और जलजमाव की समस्या से निजात दिलाने का आग्रह किया था। इसको लेकर बीडीओ अजेश कुमार संग्रामपुर थाना एसआई शेखर सौरभ स्थल पर पहुँच कर सड़क पर जमे पानी की निकासी का रास्ता देखा और जल्द नाले का निर्माण कराने की बात कहा। बीडीओ श्री कुमार ने कहा कि वार्ड संख्या 02 और 03 के बीच सड़क पर जल की समस्या से निजात दिलाने हेतु नए सिरे से नाले का निर्माण कराया जाएगा जो बेलहरणी तक जाकर समाप्त होगी। मौके पर मौजूद संबंधित पंचायत के मुखिया पिंटू मंडल ने कहा कि पूर्व में वार्ड संख्या दो एवं तीन के जर्जर हो चुके नाल की पानी किसी निजी व्यक्ति के जमीन में जाकर गिरते थे जो पिछले दो वर्षों से पानी को अपने निजी जमीन में गिरने से मना कर दिया था और नाले के किनारे छोर पर मिट्टी से नाले के पानी को बंद कर दिया गया था जिस कारण सड़कों पर जल जमाव की समस्या उत्पन्न हुई।

शिक्षा के अधिकार से वंचित स्लाम श्रेत्र के दो बच्चियों का नामांकन विद्यालय में कराया गया

प्रात : किरण ब्यूरो, मुंगेर

मुंगेर। जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के प्रजेश कुमार के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के सचिव राजीव नयन जिला शिक्षा पदाधिकारी अश्वनी कुमार जिला विधिक सेवा प्राधिकार के पैनल अधिवक्ता शिव शंकर बनर्जी द्वारा स्लाम क्षेत्र के वासंती टोला मुसहरी बस्ती का भ्रमण किये। भ्रमण के क्रम में पाया गया कि दो बच्चे सुगी कुमारी उम्र 06 वर्ष पिता मनु मलिक एवं आरती कुमारी उमर 09 वर्ष पिता स्वर्गीय पप्पू मलिक वर्तमान में शिक्षा के अधिकार से वंचित है। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव के द्वारा स्वयं दोनों बच्चों को उनके अभिभावक के साथ जाकर अभ्यास मध्य विद्यालय पूरब सराय मुंगेर में जिला शिक्षा पदाधिकारी के सहयोग से नामांकन कराया। इसके अलावे जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के द्वारा एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी के सहयोग से पूर्व में पैनल अधिवक्ता एवं परा विधिक स्वयंसेवक के माध्यम से स्लाम क्षेत्र के 14 वर्ष तक के शिक्षा के अधिकार से वंचित वैसे चिन्हित बच्चे का नामांकन विद्यालय में कराया गया है। शुक्रवार के दिन सभी पदाधिकारी के द्वारा विद्यालय जाकर निरीक्षण किया गया और उन बच्चों को निशुल्क पुस्तक कॉपी बैग स्कूल यूनिफॉर्म विद्यालय के द्वारा उपलब्ध कराई गई है अथवा नहीं, इसकी जांच की गई। विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के सचिव द्वारा उन बच्चों से मुलाकात किया गया , साथ ही उनके बीच कॉपी पेंसिल इत्यादि का वितरण भी किया गया । विद्यालय प्रधानाध्यापक एवं टोला सेवक को निर्देश दिया है कि सभी नामांकित बच्चों की उपस्थिति विद्यालय में सुनिश्चित रखा जाए और उन्हें योग्य बनाने के लिए सभी शिक्षक प्रयासत रहेंगे। विद्यालय प्रधानाध्यापक और अध्यापिका को यह भी निर्देश दिया गया है कि सभी बच्चों को सरकार द्वारा प्राप्त होने वाले सभी सुविधाएं यथा शीघ्र उपलब्ध कराया जाना सुनिश्त किया जाए। पदाधिकारी द्वय ने कहा कि अगर इसमें किसी प्रकार की कोताही बरती गई तो नियमाकुल विद्यालय प्रभारी विद्यालय प्रधानाध्यापक के विरुद्ध विधिवत कार्रवाई किया जाएगा।

पुलिस की दबंगई व बर्बरता का शिकार बना चाय दुकानदार

- चाय दुकानदार को बुरी तरह से पीटा, ग्राहक के साथ भी पुलिस ने किया अभर्द व्यवहार व गाली गलौज,
- घटना से जुड़ी सारी जानकारी हुई सीसीटीवी कैमरे में कैद,
- न्याय की गुहार ले वरीय पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचा पीड़ित दुकानदार और उसके परिवार

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। जिले भर के क्षेत्र इलाके में पुलिस की बर्बरता व गुंडागर्दी का मामला सामने आना कोई नई बात नहीं है, आए दिन पुलिसिया कार्रवाई के नाम पर क्षेत्र में बेगुनाहों व आम लोगों को इसका शिकार होना पड़ता है। इसी कड़ी में एक और मामला बरारी थाना क्षेत्र के सुर्किकल इलाके के एक चाय दुकान में बरारी थाना के थानेदार ने घुसकर चाय दुकानदार को जमकर गाली गलौज करते हुए बेरहमी से पिटाई कर दी, इतना ही नहीं दुकान पर चाय पी रहे ग्राहक को भी नहीं छोड़ा उन्होंने सभी के साथ बदसलूकी की। वही इस मामले को लेकर चाय दुकानदार सागर कुमार उर्फ राज आर्यन

संजय लीला भंसाली की बैजू बावरा से वापसी कर सकती हैं रिया चक्रवर्ती

संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज हीरा मंडी जल्द ही रिलीज होने वाली हैं। वहीं फिल्ममेकर इन दिनों अपनी फिल्म 'बैजू बावरा' की लीड एक्ट्रेस की तलाश कर रहे हैं। इस बीच खबरें सामने आई हैं कि एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती ने इस फिल्म के लिए ऑडिशन दिया है।

रिया ने बैजू बावरा के लिए दिया ऑडिशन

फिल्मफेयर की एक रिपोर्ट के मुताबिक संजय लीला भंसाली ने बैजू बावरा में फीमेल लीड रोल के लिए रिया का ऑडिशन लिया है। हालांकि, अभी तक यह कंफर्म नहीं हुआ है कि रिया इस फिल्म की हीरोइन होंगी या नहीं। हालांकि, खबरों की मानें तो एक्ट्रेस ने इस ऑडिशन के जरिए दोबारा बॉलीवुड में वापसी करने की कोशिश की है।

फिल्म में लीड रोल निभाएंगे रणवीर सिंह

बता दें कि बैजू बावरा में रणवीर सिंह लीड रोल में नजर आएंगे। इससे पहले रणवीर भंसाली के साथ तीन फिल्मों में काम कर चुके हैं। इस फिल्म के जरिए वह चौथी बार फिल्म में साथ काम करेंगे। बीते दिनों खबरें आई थीं कि आलिया-रणवीर को फिल्म बैजू बावरा के लिए फाइनल किया गया है। कहा जा रहा था कि फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में रणवीर और आलिया की जोड़ी को बेहद पसंद किया गया। ऐसे मेकर्स ने दोनों को इस फिल्म में कास्ट करने का फैसला किया है। हालांकि मेकर्स की तरफ से अभी तक लीड एक्ट्रेस को लेकर कोई अपडेट सामने नहीं आया है।

आखिरी बार फिल्म चेहरे में नजर आई थी रिया

एक्स बॉयफ्रेंड सुशांत के निधन के बाद से रिया ने महज एक फिल्म में काम किया है। एक्ट्रेस ने 2023 में ही रियलिटी शो एमटीवी रोडीज- कर्म या कांड से छोटे पर्दे पर वापसी की है। इसके अलावा 2021 में रिया की फिल्म चेहरे आई थी। हालांकि, यह फिल्म कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी। ऐसे में रिया एक अच्छे प्रजेक्ट की तलाश में हैं।

पर्दे पर टाइगर श्रॉफ संग रोमांस फरमाएंगी जान्हवी कपूर

सिद्धार्थ आनंद की आगामी एक्शन फिल्म रैम्बो इन दिनों सुर्खियों में है। यह फिल्म सिल्वेस्टर स्टेलोन अभिनीत हॉलीवुड क्लासिक का भारतीय रूपांतरण है, और पिछले छह वर्षों से विकास में है। भव्य पैमाने के एक्शन ड्रामा की आधिकारिक घोषणा 2017 में टाइगर श्रॉफ की मुख्य भूमिका के साथ की गई थी। हालांकि, कुछ कारणों से फिल्म को बनाने में देरी हुई। वहीं, अब इसकी मुख्य अभिनेत्री को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। हसीना का नाम रिवील होने से साफ हो गया है कि रैम्बो में सिनेप्रेमियों को एक फ्रेश जोड़ी देखने को मिलेगी।

रैम्बो फिल्म का निर्माण सिद्धार्थ आनंद कर रहे हैं। वहीं, शहजादा के निर्देशक रोहित धवन इसका निर्देशन करने के लिए तैयार हैं। नवीनतम मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, जान्हवी कपूर को रैम्बो रूपांतरण में टाइगर श्रॉफ के साथ अभिनय करने के लिए चुना गया है। जान्हवी. रोहित धवन द्वारा निर्देशित इस एक्शन ड्रामा में मुख्य महिला की भूमिका निभाती नजर आएंगी, जो टाइगर के साथ उनका पहला ऑन-स्क्रीन सहयोग होगा। एक मीडिया रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से कहा गया है, टाइगर और जान्हवी अतीत में कई प्रयासों के बाद आखिरकार एक साथ काम कर रहे हैं। रैम्बो में जान्हवी के चरित्र का विवरण फिलहाल गुप्त रखा गया है, लेकिन वह कहानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

मैंने किसी ब्रांड का प्रमोशन नहीं किया

हर्षवर्धन कपूर लोगों से कॉपी की बजाय ओरिजिनल स्नीकर्स पहनने की अपील करने के बाद से चर्चा में हैं। अब उन्होंने अपने पोस्ट पर सफाई देते हुए कहा है कि उन्होंने ये पोस्ट अपनी बहन सोनम कपूर के पति आनंद आहूजा के नए डिजाइनर स्टोर को प्रमोट करने के लिए नहीं किया था।

किसी को प्रमोट करने के लिए नहीं किया था पोस्ट

दरअसल, सोनम कपूर के पति आनंद आहूजा मल्टी-ब्रैंड स्नीकर्स स्टोर के फाउंडर हैं। सोशल मीडिया पर एक यूजर ने उनसे ये तक कह दिया कि मैं सोनम कपूर के पति के ब्रांड के जूते नहीं खरीदूंगा। एक्टर ने इसके जवाब में लिखा है- मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने किसी को प्रमोट करने के लिए ये नहीं कहा है। हर्षवर्धन के इस पोस्ट पर उन्हें लोगों के सोशल स्टेटस का मजाक बनाने को लेकर ट्रोल भी किया गया। बीते दिन हर्षवर्धन ने अपने पोस्ट पर सफाई भी दी। उन्होंने कहा है कि उन्हें पता है कि वो जब भी सोशल मीडिया पर कुछ कहेंगे, हमेशा ऐसे लोग होंगे ही जो भले ही फुटवियर के बारे में कुछ न जानते हों, लेकिन उनकी बातें उन्हें गलत ही लगेगी। हर्षवर्धन ने कहा था- मेरे बहुत सारे फॉलोअर्स स्नीकर्स का शौक रखते हैं और मेरा मैसेज उन लोगों के लिए था। मुझे पता है कि मैं अपनी ऑडियंस से बात कर रहा हूं। हर्षवर्धन ने कहा था कि वो कॉपी की जगह ओरिजिनल स्नीकर्स ही पहने ताकि नकली प्रोडक्ट्स को बढ़ावा न मिले। उन्होंने ये भी कहा कि अगर उन्हें कोई कॉपी प्रोडक्ट गिफ्ट करता है तो उसे किसी और को दे दें। उन्होंने कहा था- अगर आपका बजट लो या मॉडरेट भी है, तो भी आपके पास ढेरों ऑप्शंस हैं। इसके बाद उन्होंने कुछ ब्रांड्स के सुझाव भी दिए। हर्षवर्धन कपूर जल्द ही ओलंपिक गोल्ड मेडलिस्ट शूटर अभिनव बिंद्रा की बायोपिक में नजर आएंगे। ये फिल्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी।

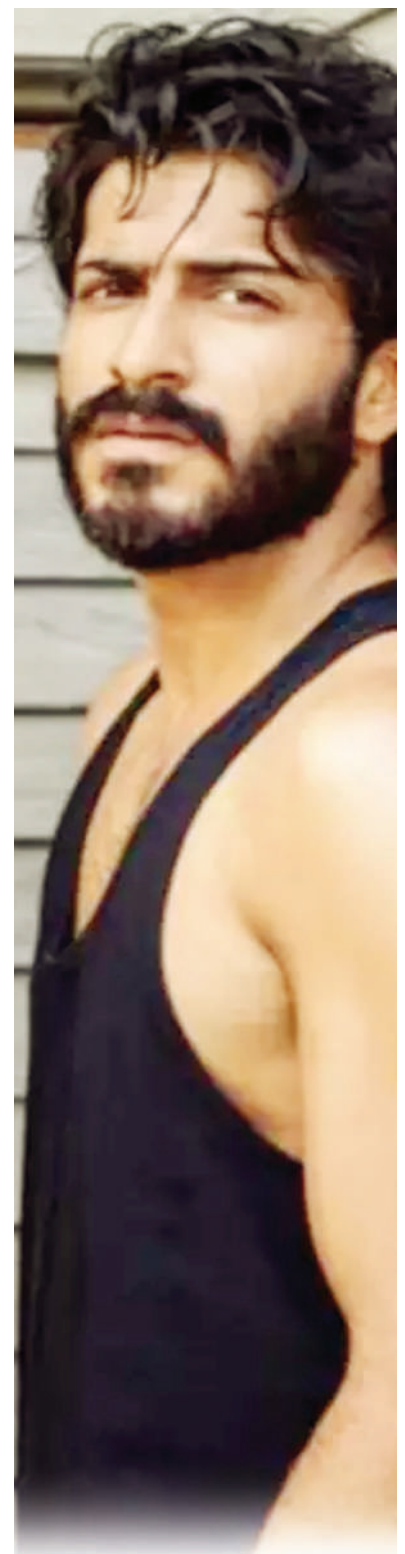

रोमांचित हूं कि लोगों को द ग्रेट इंडियन फैमिली का ट्रेलर पसंद आ रहा है!

बॉलीवुड स्टार विक्की कौशल उनकी अगली फिल्म द ग्रेट इंडियन फैमिली का ट्रेलर कल रिलीज होने के बाद से लोगों से मिल रही प्रतिक्रिया से बेहद खुश हैं!विक्की कहते हैं, मैं रोमांचित हूं कि लोग द ग्रेट इंडियन फैमिली के ट्रेलर को पसंद कर रहे हैं और इसे इतनी गर्मजोशी और सराहना दे रहे हैं। शानदार अभिनेता विजय कृष्ण आचार्य द्वारा निर्देशित इस पारिवारिक मनोरंजन फिल्म के साथ लोगों को मुस्कुराने और हंसाने की उम्मीद कर रहे हैं। वह कहते हैं, इस तरह के प्रोत्साहन के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। यह ज़बरदस्त है और मुझे उम्मीद है कि हम अपने जीवन पर आधारित, साधारण पारिवारिक फिल्म के साथ दर्शकों के चेहरे पर मुस्कान ला सकते हैं। द ग्रेट इंडियन फैमिली का निर्देशन विजय कृष्ण आचार्य ने किया है और इसमें मनोज पाहवा, कुमुद मिश्रा, यशपाल शर्मा, सादिया सिद्दीकी, अलका अमीन, सृष्टि दीक्षित, भुवन अरोड़ा, आसिफ खान, आशुतोष उज्ज्वल जैसे बेहद प्रशंसित कलाकार शामिल हैं। भारती पेरवानी. इसमें मानुषी छिल्लर भी हैं जिन्हें विक्की कौशल के साथ जोड़ा गया है। यह फिल्म 22 सितंबर को रिलीज होने वाली है।

संजय लीला भंसाली की मसाला एंटरटेनर में नजर आएंगे शाहिद

शाहिद कपूर की एक्टिंग अब हर प्रोजेक्ट के साथ निखरती जा रही है। वह बड़े पर्दे के साथ-साथ ओटीटी की दुनिया में भी अलग-अलग प्रोजेक्ट्स में काम कर समीक्षकों और दर्शकों के दिल में छाप छोड़ रहे हैं। शाहिद इन दिनों लीक से हटकर किरदार कर रहे हैं। फिर चाहे वह फर्जी हो या फिर ब्लडी डैडी अभिनेता अपनी लव बॉय की छवि को तोड़ने में सफल होते नजर आ रहे हैं। अपने करियर के सबसे शानदार दिनों का मजा ले रहे शाहिद की प्रोफेशनल लाइफ को लेकर बड़ी खबर आ रही है। रिपोर्ट्स आ रही हैं कि अभिनेता जल्द ही संजय लीला भंसाली के साथ एक फिल्म साइन करने वाले हैं। संजय लीला भंसाली ने पहली बार साल 2018 में शाहिद कपूर के साथ काम किया था। शाहिद कपूर ने संजय लीला भंसाली की फिल्म पद्मावत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसमें रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण भी मुख्य भूमिका में थे। लेकिन अभिनेता ने एक इंटरव्यू में खुलासा किया था कि उन्हें अफसोस है कि उन्होंने इस फिल्म में काम क्यों किया। लेकिन अब खबर आ रही है कि पद्मावत की रिलीज के पांच साल बाद अभिनेता प्रसिद्ध फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली के साथ फिर से जुड़ सकते हैं। इस आगामी प्रोजेक्ट से जुड़े एक करीबी सूत्र ने मीडिया संस्थान को बताया, शाहिद और संजय लीला भंसाली एक-दूसरे के लिए सम्मान रखते हैं और एक स्पेशल प्रोजेक्ट पर सहयोग करने के विचार पर चर्चा कर रहे हैं। यह एक पूरी तरह से मसाला एंटरटेनर फिल्म होगी। फिल्म की स्क्रिप्ट पूरी तरह से भंसाली के लेखकों की टीम द्वारा लिखी गई है। फिल्म निर्माता पिछले कुछ महीनों से फिल्म की कास्टिंग पर काम कर रहे हैं और वह शाहिद के साथ बातचीत कर रहे हैं।

एक्स हसबैंड आमिर के साथ रिश्ते पर बोलीं किरण राव

फिल्म मेकर किरण राव ने हाल ही में एक्स हसबैंड आमिर खान के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि आमिर के साथ उनके रिश्ते आज भी बहुत अच्छे हैं। इतनी ही किरण ने कहा कि तलाक के बाद उनके परिवार और आमिर ने हमेशा उन्हें सपोर्ट किया है। दरअसल किरण हाल ही में अपनी फिल्म 'लापता लेडीज' से सालों बाद कम कमबैक करने जा रही हैं। वहीं हाल ही में उनकी फिल्म का प्रीमियर टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में हुआ था, जिसे अगले साल सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा। हाल ही में फिल्म कंपेनियन को दिए इंटरव्यू में किरण ने कहा - 'यह फिल्म आमिर खान के बिना मुमकिन नहीं होती। उन्होंने ही स्क्रिप्ट खोजी और इसे प्रोड्यूस करने का जिम्मा उठाया। यह उनकी तरफ से बहुत बड़ा सपोर्ट है। उनके बिना हम यह फिल्म नहीं बना पाते। जब उन्हें यह स्क्रिप्ट मिली, तो उन्होंने मुझे इस फिल्म का डायरेक्शन करने के ऑफर दिया। वाकई यह मेरे लिए एक बेहतरीन मौका रहा।'

शादी के बाद हम बंध कर रहे, यह जरूरी नहीं है

अपनी फिल्म लापता लेडीज के बारे में बात करते हुए किरण ने कहा- 'फिल्म के जरिए हमने यह दिखाने की कोशिश की है कि कैसे शादी के बंधन में बंधने के बाद भी आप अपनी फ्रीडम पा सकते हैं। आप अभी भी अपनी तलाश कर सकते हैं। आप यकीनन उस चीज को हासिल कर सकते हैं, जिसे डिजर्व करते हैं। मैंने यह खुद भी रियलाइज किया है।'

रिश्तों ने कभी भी मुझे तकलीफ नहीं पहुंचाई

किरण ने आगे कहा- 'हमने फिल्म में बहुत सारे मुद्दों को उठाया है, जिनसे हम अक्सर जूझते हैं। हालांकि, मैं बहुत लकी रही हूं, क्योंकि मेरे रिश्तों ने कभी भी मुझे तकलीफ नहीं पहुंचाई है। मेरी जिंदगी में बहुत प्यारे रिश्ते रहे हैं और आज भी हैं।'

मेरे एक्स हसबैंड के साथ अब भी मेरे बहुत अच्छे रिश्ते हैं

आमिर के बारे में बात करते हुए किरण ने कहा- मेरे प्रोड्यूसर और मेरे एक्स हसबैंड के साथ अब भी मेरे बहुत अच्छे रिश्ते हैं। मुझे मेरे परिवार और आमिर दोनों ने ही हमेशा सपोर्ट किया है।

वेलकम 3 की कास्टिंग पर अनीस बज्मी ने तोड़ी चुप्पी

अक्षय कुमार के जन्मदिन पर उनकी आगामी फिल्म वेलकम बैक टू द जंगल की घोषणा की गई थी। मेकर्स ने इस फिल्म का एक अनाउंसमेंट वीडियो जारी किया था, जिसमें कई बड़े सितारे नजर आए थे। हालांकि, नाना पाटेकर और अनिल कपूर को न देखकर फैंस काफी निराश दिखे थे। इस वीडियो के बाद सोशल मीडिया पर दोनों कलाकारों के मीम्स भी जमकर वायरल हुए थे। अब अनीस बज्मी ने इस मामले पर अपनी चुप्पी तोड़ी है। जब अनीस से इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने इंडिया टुडे को बताया कि वह खुद वेलकम 3 का हिस्सा नहीं हैं। उन्होंने फिल्म की कास्टिंग के बारे में नाना द्वारा कही गई बात को स्वीकार किया और कहा कि वेलकम 3 की कास्टिंग में उनका कोई योगदान नहीं है। उन्होंने कहा, अगर निर्माताओं ने कोई निर्णय लिया है, तो बहुत सोच-समझकर लिया होगा। इसके बाद अनीस ने कहा कि अगर वह फिल्म का निर्देशन कर रहे होते, तो नाना पाटेकर और अनिल कपूर के बिना उनके लिए यह फिल्म बनाना संभव नहीं होता। उन्होंने कहा कि दोनों ही किरदार आइकॉनिक रहे हैं और आज भी उनके वीडियो सोशल मीडिया पर देखे जाते हैं। हालांकि, अनीस ने नई कास्टिंग को लेकर अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा कि उनके अच्छे दोस्त संजय दत्त और अरशद वारसी को वेलकम फ्रेंचाइजी में शामिल होते देखना दिलचस्प होगा। उन्होंने कहा कि यह पूरी तरह से रचनात्मक कॉल है और वे इसे कैसे करते हैं यह उन पर निर्भर है।

शादी के बंधन में बंधने जा रही हैं आमिर खान की बेटी इरा

बॉलीवुड सुपरस्टार आमिर खान की बेटी इरा खान अपने मंगेतर नुपुर शिखरे के साथ विवाह बंधन में बंधने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। जनवरी 2024 में यह शादी उदयपुर में होगी। शादी का उत्सव तीन दिनों तक चलेगा। इस शादी में केवल परिवार के सदस्य ही शामिल होंगे। एक सूत्र के अनुसार, इरा और नुपुर शिखरे सबसे पहले दिसंबर के अंत में मुंबई की अदालत में विवाह पंजीकरण कराएंगे। जिसके बाद वे जनवरी के पहले सप्ताह में अपने विवाह समारोह के लिए उदयपुर जाएंगे। सूत्र ने आगे बताया कि यह निजी समारोह होगा और इसमें केवल परिवार के सदस्य ही शामिल होंगे जैसा कि हाल ही में बी-टाउन शादियों में चलन रहा है। आमिर खान और रीना दत्ता की बेटी इरा ने 18 नवंबर, 2022 को फिटनेस ट्रेनर नुपुर शिखरे से सगाई की थी। सगाई समारोह में आमिर, रीना दत्ता, किरण राव, अभिनेता इमरान खान और परिवार के अन्य सदस्य शामिल हुए। पार्टी के लिए जहां इरा ने स्वीटहार्ट नेकलाइन स्ट्रैपलेस रेड गाउन चुना था, वहीं नुपुर ब्लैक पैंटसूट में बेहद खूबसूरत लग रहे थे। इरा और नुपुर सोशल मीडिया पर एक-दूसरे के प्रति अपने प्यार का इजहार करने से कभी नहीं कतराते हैं। नुपुर ने सितंबर 2022 में इटली में एक ट्रायथलॉन के दौरान इरा को प्रपोज किया था।

दोस्त रूस के पास फंसे हैं भारतीय कंपनियों के 5,000 करोड़

नई दिल्ली, एजेंसी। रूस में भारत की सरकारी तेल कंपनियों के 60 करोड़ डॉलर यानी करीब 49,84,23,00,000 रुपये फंसे हैं। ऑयल इंडिया , इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन , बीपीसीएल और ओएनजीसी ने रूस में कई तेल और गैस परियोजनाओं में निवेश किया है। इससे उन्हें समय-समय पर डिविडेंड मिलता है। लेकिन फरवरी, 2022 के बाद से वे डिविडेंड का पैसा भारत ट्रांसफर नही कर पा रही हैं। इसकी वजह यह है कि यूक्रेन युद्ध के कारण पश्चिमी देशों ने रूस पर कई तरह की बैंकिंग पाबंदियां लगाई हैं। रूस को स्विफ्ट से बाहर कर दिया गया है। इस कारण पैसा भारत ट्रांसफर नहीं हो पा रहा है। भारतीय कंपनियां अब इन पैसों से रूसी तेल खरीदने के विकल्प पर विचार कर रही है। साथ ही इन पैसों को स्वदेश लाने के लिए लीगल और डिप्लोमैटिक तरीके भी अपनाए जा रहे हैं। ऑयल इंडिया के रूस में 1.5 करोड़ डॉलर पड़े हैं। इसी तरह इंडियन ऑयल और बीपीसीएल के भी इतने ही पैसे रूस में अटके हैं। ऑयल इंडिया के चेयरमैन रंजीत रथ ने कहा कि कंपनी रूस में फंसे अपने पैसों के ट्रांसफर के लिए कानूनी, बैंकिंग और राजनयिक तरीकों का इस्तेमाल कर रही है। उन्होंने कहा कि यह एक टेम्परारी समस्या है और कंपनी रूस में अपने निवेश को लेकर पॉजिटिव सोच रखती है। ओपेक प्लस देशों ने कच्चे तेल के उत्पादन में कटौती का फैसला किया है। इससे वे ऑयल फील्ड भी प्रभावित हुए हैं जिनमें ऑयल इंडिया का निवेश है।

इस बीच ओपेक प्लस देशों के तेल उत्पादन में कटौती के फैसले से कच्चे तेल की कीमत 93 डॉलर प्रति बैरल के ऊपर पहुंच गई। यह इसका एक साल का उच्चतम स्तर है। ब्रेंट क्रूड गुरुवार को क्रूड की कीमत 1.7 डॉलर की तेजी के साथ 93.7 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गई। यह पिछले साल नंवबर के बाद इसका उच्चतम स्तर है। यूएस वेस्ट टेक्सस भी 10 महीने के टॉप पहुंच गया। बुधवार को इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी ने कहा कि सऊदी अरब और रूस ने तेल उत्पादन में कटौती को आगे बढ़ाने का फैसला किया है। भारत में पिछले साल मई से पेट्रोल और डीजल की कीमत में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

खूब नोट छाप रही एविएशन इंडस्ट्री, 30 प्रतिशत बढ़ी यात्रियों की संख्या, साथ ही आ रही शिकायतें

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में डोमेस्टिक फ्लाइट से सफर करने वाले यात्रियों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। जुलाई के बाद अब अगस्त महीने में भी हवाई यात्रा करने वालों की संख्या में करीब 23 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज हुई है। एक्सपर्ट इसे एविएशन इंडस्ट्री के लिए अच्छे संकेत बता रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर यात्रियों को हवाई जहाजों में लगातार आ रही तकनीकी खराबियों की वजह से परेशान होना पड़ रहा है।

10 करोड़ यात्रियों ने किया सफर

नागर विमानन मंत्रालय की ओर से हवाई जहाज से घरेलू यात्रा करने वालों के जारी किए गए आंकड़ों पर गौर किया जाए तो पिछले साल जनवरी से अगस्त तक तमाम डोमेस्टिक फ्लाइट में देशभर में करीब आठ करोड़ यात्रियों ने सफर किया था। यात्रियों की यह संख्या इस साल जनवरी से अगस्त के बीच 30 फीसदी से भी अधिक बढ़ी और इस दौरान 10 करोड़ से भी अधिक यात्रियों ने डोमेस्टिक फ्लाइट में बोर्ड किया। अगस्त 2022 में एक करोड़ एक लाख से ज्यादा और अगस्त 2023 में एक करोड़ 24 लाख घरेलू यात्रियों ने सफर किया। यह बढ़ोतरी करीब 23 फीसदी रही।

इंडिगो में सबसे ज्यादा

सबसे ज्यादा 78 लाख यात्रियों को इंडिगो ने उनके गंत्वय स्थान तक पहुंचाया। इस तरह से इंडिगो का मार्केट शेयर 63 फीसदी से भी अधिक रहा। इसके बाद 12 लाख 17 हजार विस्तारा और 12 लाख 12 हजार यात्रियों को एयर इंडिया ने बोर्ड कराया। बाकी आकासा, एयर एशिया और अन्य एयरलाइंस रहीं।

हवाई जहाजों में आ रहीं तकनीकी खामियां

आंकड़ों से यह भी पता लगता है कि बीते अगस्त महीने में जितनी भी डोमेस्टिक फ्लाइट कैंसल हुई। उनमें 50 फीसदी से भी अधिक कारण हवाई जहाजों में आई तकनीकी खराबी रहे। यानी देश के अंदर यात्रियों को अपनी सेवाएं देने वाली विभिन्न एयरलाइंस के हवाई जहाजों में आई खराबी की वजह से यात्रियों को सबसे अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा। दूसरे नंबर पर खराब मौसम रहा। जिसमें खराब मौसम की वजह से 23 फीसदी से भी अधिक फ्लाइट को कैंसल करना पड़ा।

ये आ रहीं समस्याएं

शिकायत के मामले में देखा जाए तो 41 फीसदी से अधिक शिकायतें हवाई जहाजों में आई किसी ना किसी तरह की समस्याओं की वजह से आई। जिसमें हवाई जहाजों के एसी खराब होने या फिर अन्य किसी तरह की समस्याओं से यात्रियों को दो-चार होना पड़ा। बैगेज की समस्या अभी भी दुरूस्त नहीं हो पा रही है। यात्रियों की शिकायतों में दूसरे नंबर पर खराब बैगेज मैनेजमेंट सिस्टम रहा। जिसमें कितने ही यात्रियों के बैग टूट भी गए। 18 फीसदी से अधिक शिकायतें बैगेज से संबंधित आई। 16 प्रतिशत यात्रियों ने रिफंड को लेकर भी शिकायतें की। जबकि विभिन्न एयरलाइंस की खराब कस्टमर सर्विस की वजह से भी यात्रियों को परेशानी उठानी पड़ी। गंभीर बात यह भी सामने आई है कि जुलाई की तुलना में अगस्त महीने में दिव्यांग यात्रियों को अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा।

यात्रियों की कसौटी पर भी खरा उतरना होगा

जिस तरह से देश में घरेलू हवाई यात्रियों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। यह एविएशन इंडस्ट्री के लिए शुभ संकेत हैं। इसके साथ ही एविएशन इंडस्ट्री को भी अपने आपको यात्रियों की कसौटी पर खरा उतरना होगा। खराब मौसम की बात छोड़ दें तो अभी भी डोमेस्टिक फ्लाइटस के कैंसल होने के कारण हवाई जहाजों में आ रहीं तकनीकी खराबी रहे। इसमें सुधार करने की जरूरत है। जबकि हवाई जहाजों में लोड किए जाने वाले रजिस्टर्ड लगेज को लेकर भी यात्री लगातार शिकायतें कर रहे हैं। यात्रियों की अक्सर यह शिकायत सामने आती है कि लैंड करने के बाद जब उन्हें उनका लगेज मिला तो वह कहीं ना कहीं से टूटा हुआ था। ऐसे में एयरलाइंस को यह सुनिश्चित करना होगा कि वह अपने ग्रांउड हैंडलिंग स्टाफ को रजिस्टर्ड लगेज को हवाई जहाज में चढ़ाने और उतारने के लिए आधुनिक सिस्टम देने के साथ ही उनकी समय-समय पर ट्रेनिंग भी करे। ताकि यात्रियों को इस तरह की समस्याओं से दो-चार ना होना पड़े।

जी-सोनी मर्जर पर आ गई बड़ी खबर, अब एक्सिस फाइनेंस ने एनसीएलएटी का किया रुख

नई दिल्ली, एजेंसी। सोनी पिक्चर्स नेटवर्क इंडिया और जी एंटरटेनमेंट के मर्जर की डील को हरी झंडी दिखाने के नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल के फैसले को एक्सिस फाइनेंस ने चुनौती दी है। इस फैसले के खिलाफ एक्सिस फाइनेंस ने नेशनल कंपनी लॉ अपीलेट ट्रिब्यूनल का दरवाजा खटखटाया है। कंपनी ने गुरुवार को यह जानकारी दी है। बता दें कि एक्सिस फाइनैंस का यह कदम एनसीएलटी की मुंबई बेंच के उस आदेश के एक महीने बाद आया है जिसमें एनसीएलटी ने 10 अगस्त को जी-सोनी मर्जर को हरी झंडी दे दी और इसके खिलाफ दायर सभी आवेदनों को खारिज कर दिया था। एक्सिस फाइनेंस की याचिका पर एनसीएलएटी ने अब कंपनी को नोटिस जारी किया है। बता दें कि जी

एंटरटेनमेंट और सोनी का मर्जर मीडिया और एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री का एक बड़ा सौदा है।

इससे पहले आईडीबीआई बैंक ने भी एनसीएलटी से जी-सोनी के मर्जर को मिली मंजूरी को अपीलेट ट्रिब्यूनल में चुनौती दी थी। स्टॉक एक्सचेंजों को भेजे गए एक खुलासे में जी ने 6 सितंबर को बताया कि आईडीबीआई बैंक ने एनसीएलएटी के सामने एक अपील दायर की है, जिसपर कंपनी को नोटिस मिले हैं।

2021 में हुआ था ऐलान

बता दें कि 10 अरब डॉलर के इस मर्जर की घोषणा मूल रूप से वर्ष 2021 में की गई थी। मगर इस मर्जर की योजना को तब झटका लगा जब भारतीय प्रतिभूति और विनमय बोर्ड ने जी के सीइओ पुनित गोयनका पर प्रतिबंध लगा दिया। पुनित गोयनका की अपील पर प्रतिबंध हटाने में विफल रहने के बाद ज़ी ने बाद में कंपनी का संचालन जारी रखने के लिए अपने बोर्ड की देखरेख में एक अंतरिम समिति का गठन किया। एनसीएलटी ने जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड और सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया के विलय को मंजूरी दी थी।

शेयरों में आई गिरावट

बता दें कि जी एंटरटेनमेंट के शेयरों में गुरुवार यानी 14 सितंबर को एक फीसदी से ज्यादा की गिरावट देखी गई है। कंपनी के शेयर आज 272.90 रुपये के भाव पर बंद हुए हैं। वहीं पिछले एक महीने में कंपनी के शेयरों में 1.12 फीसदी की गिरावट देखने को मिली है।

गौतम अडानी को मिल गया पुराना दोस्त, 6,000 करोड़ का चेक थमाने की तैयारी, शेयर बनेंगे रॉकेट!

नई दिल्ली, एजेंसी। गौतम अडानी की अगुवाई वाले अडानी ग्रुप को जल्दी ही करीब 6,000 करोड़ रुपये का चेक मिल सकता है। फ्रांस की कंपनी टोटलएनर्जीज एक बार फिर अडानी ग्रुप में निवेश की तैयारी में है। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के मुताबिक अडानी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड के रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट्स में टोटलएनर्जीज कर सकती है। जनवरी में हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट आने के बाद अडानी ग्रुप और फ्रांसीसी कंपनी के बीच यह पहली बड़ी होगी। पिछले साल फ्रेंच कंपनी ने अडानी ग्रुप की ग्रीन एनर्जी बिजनस कंपनी हढ्ढरु में निवेश करने की घोषणा की थी। लेकिन हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट के कारण इस निवेश को रोक दिया था। इस रिपोर्ट में अडानी ग्रुप पर कई गंभीर आरोप लगाए गए थे लेकिन

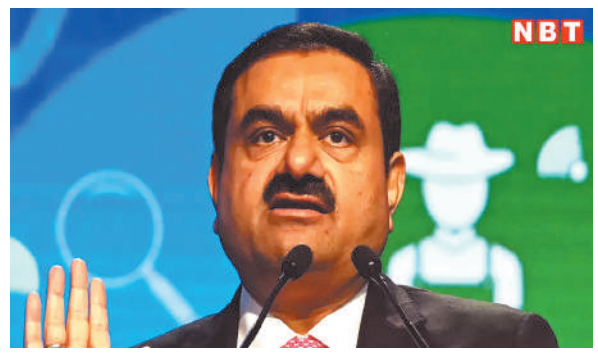

ग्रुप ने इन आरोपों को खारिज किया है। इस रिपोर्ट के कारण अडानी ग्रुप के शेयरों में भारी गिरावट आई थी। हालांकि हाल के दिनों में कुछ हद तक इसकी भरपाई हो चुकी है।

सूत्रों के मुताबिक टोटल अपने क्लीन एनर्जी के पोर्टफोलियो को बढ़ाना चाहती है। इसके लिए वह अडानी ग्रीन के प्रोजेक्ट्स में निवेश कर सकती है। फ्रेंच कंपनी अडानी ग्रुप में करीब 70 करोड़ डॉलर यानी करीब 58,14,13,35,000 रुपये का निवेश कर सकती है। सूत्रों के मुताबिक अभी इस बारे में बातचीत चल रही है। अडानी ग्रुप और टोटल के प्रतिनिधियों ने इस पर टिप्पणी करने से इन्कार कर दिया। अगर यह डील होती है तो इससे टोटल को भारतीय बाजार में अपनी मौजूदगी बढ़ाने का मौका मिलेगा जबकि अडानी ग्रुप को और प्रोजेक्ट्स बनाने के लिए फंड मिलेगा। इससे अडानी ग्रीन में टोटल की हिस्सेदारी बढ़ जाएगी। अभी उसकी कंपनी में 19.75 प्रतिशत हिस्सेदारी है। साल 2019 में टोटल ने 60 करोड़ डॉलर में अडानी गैस लिमिटेड में 37.4 परसेंट हिस्सेदारी खरीदी थी। इसी तरह साल 2021 में कंपनी ने अडानी ग्रीन में 20 परसेंट हिस्सेदारी खरीदी थी। साथ ही उसने अडानी ग्रीन के कुछ सोलर फार्म्स में 50 परसेंट तक हिस्सेदारी खरीदी दी। यह डील करीब 2.5 अरब डॉलर में हुई थी जो भारत में सबसे बड़े विदेशी निवेश में से एक है। 2022 में अडानी ग्रीन में टोटल के निवेश की वैल्यू 10 अरब डॉलर पहुंच गई थी।

एलेक्सा-अनुकूल उत्पादों और स्मार्ट होम कॉम्बो पर पायें 60 प्रतिशत तक की छूट

बेंगलुरू, एजेंसी। एमेज़ॉन ने 'स्मार्ट होम डेज़' की घोषणा की है, जिसमें ग्राहक आश्चर्यजनक छूट पर एमेजॉन इको स्मार्ट स्पीकर और कुछ सर्वश्रेष्ठ एलेक्सा-अनुकूल स्मार्ट होम उत्पाद प्राप्त कर सकते हैं। अपनी सहजता के कारण यह वॉयस कमांड अनुकूल स्मार्ट होम उपकरणों को नियंत्रित करने में बेहत आसान है। बस इतना कहिये - एलेक्सा, 10 मिनट के बाद गीज़र ऑन कर दो, एलेक्सा, बेडरूम लाइट्स डिम करो, एलेक्सा, एसी ऑफ करो। 'स्मार्ट होम डेज़' के दौरान, ग्राहक एलेक्सा स्मार्ट होम कॉम्बो पर खास डील्स और ऑफर्स के साथ हैंड-फ्री नियंत्रण का जादुई अनुभव अपने घर ला सकते हैं। इसमें है ईको स्मार्ट स्पीकर्स, स्मार्ट बल्ब, स्मार्ट प्लग, स्मार्ट कैमरा और भी बहुत कुछ! इसके अलावा, ग्राहक विप्रो, फिलिप्स, होम मेट, टीपी लिंक, एमआई, रियलमी और हैवल्स जैसे टॉप ब्रांड्स से स्मार्ट होम के कुछ चुनिंदा प्रोडक्ट्स की भी खरीदारी कर सकते हैं। एलेक्सा स्मार्ट होम कॉम्बो पर सीधा 60 प्रतिशत की छूट - ईको डॉट (थर्ड जेनरेशन) + विप्रो स्मार्ट बल्ब। इसे पाएं 2,099 में। एलेक्सा स्मार्ट होम कॉम्बो पर सीधा 55 प्रतिशत की छूट - ईको डॉट (फोर्थ जेनरेशन) + विप्रो स्मार्ट बल्ब, इसे पाएं 2,899 में। एलेक्सा स्मार्ट होम कॉम्बो पर सीधा 55 प्रतिशत की छूट - ईको डॉट विद क्लॉक (फोर्थ जेनरेशन) + विप्रो स्मार्ट बल्ब। इसे पाएं 2,899 में। एलेक्सा स्मार्ट होम कॉम्बो पर सीधा 24 प्रतिशत की छूट - ईको डॉट (फिफ्थ जेनरेशन) + विप्रो स्मार्ट बल्ब। इसे पाएं 5,799 में। एलेक्सा स्मार्ट होम कॉम्बो पर सीधा 17 प्रतिशत की छूट - ईको (फोर्थ जेनरेशन) + विप्रो स्मार्ट बल्ब। इसे पाएं 10,349 में।

एंटेरो हेल्थकेयर सॉल्यूशंस लिमिटेड ने सेबी के समक्ष दाखिल किया डीआरएचपी

मुंबई एजेंसी। वित्त वर्ष 2012 में राजस्व के मामले में भारत के शीर्ष तीन हेल्थकेयर प्रोडक्ट्स डिस्ट्रीब्यूटर्स में से एक, एंटरो हेल्थकेयर सॉल्यूशंस लिमिटेड ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के समक्ष अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दायर किया है। कंपनी की आरंभिक सार्वजनिक पेशकश में 10,000 मिलियन तक का फ्रेश इश्यू और सेलिंग शेयरधारकों द्वारा 8,557,597 इक्विटी शेयरों तक की बिक्री का प्रस्ताव शामिल है।बिक्री के प्रस्ताव में प्रभात अग्रवाल द्वारा 534,082 इक्विटी शेयर, ऑर्बीमेड एशिया थ्री मॉरीशस लिमिटेड द्वारा 7,500,000 इक्विटी शेयर, प्रेमसेठी द्वारा 353,302 इक्विटी शेयर, चेतन एम.पी. द्वारा 4,401 इक्विटी शेयर, दीपेश टी. गाला द्वारा 1,320 इक्विटी शेयर, हेमंत जोस बैरोस द्वारा 8,802 इक्विटी शेयर तक, हेमंत जग्गी द्वारा 4,401 इक्विटी शेयर तक, के.आर.वी.एस. वरप्रसाद द्वारा 2,201 इक्विटी शेयर तक, के.ई. प्रकाश द्वारा 39,610 इक्विटी शेयर तक और लवु सहदेव द्वारा 1,320 इक्विटी शेयर तक शामिल हैं।

द बिग बिलियन डेज से पहले फ्लिपकार्ट के सेलर्स की संख्या 14 लाख के पार पहुंची

मुंबई, एजेंसी। अपने सालाना फ्लैगशिप इवेंट द बिग बिलियन डेज के 10वें संस्करण से पहले फ्लिपकार्ट ने अपने प्लेटफॉर्म पर 14 लाख से अधिक सेलर्स को जोड़ने की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। पिछले साल की तुलना में प्लेटफॉर्म पर विक्रेताओं की संख्या में 27 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि के साथ यह उपलब्धि देश में विक्रेताओं एवं एमएसएमई के मजबूत हो रहे इकोसिस्टम को दर्शाता है। यह उस भरोसे का प्रमाण है जो अपने व्यवसाय को डिजिटल एवं आधुनिक बनाने बाजार में पहुंच का विस्तार करने और आय में सुधार के लिए ई-कॉमर्स की ताकत का लाभ उठाने के लिए विश्वसनीय भागीदार के रूप में शॉप्सी एवं फ्लिपकार्ट पर भारतीय एमएसएमई, छोटे कारोबारियों एवं उद्यमियों ने जताया है। विक्रेताओं की संख्या को लेकर इस उपलब्धि पर फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफकॉर्पोरेट ऑफिसर रजनीश कुमार ने कहा फ्लिपकार्ट में हम भारतीय कारोबारियों विशेष रूप से एमएसएमई के लिए ई-कॉमर्स के माध्यम से अवसर सृजित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हमने कारीगरों, शिल्पकारों, महिलाओं और दिव्यांगों समेत सेलर्स के विस्तृत वर्ग के लिए ई-कॉमर्स को अधिक समावेशी बनाने में मदद के लिए अपने फ्लिपकार्ट समर्थ कार्यक्रम के माध्यम से कई कदम उठाए हैं। हम लाखों नई नौकरियाँ पैदा करते हुए डिजिटल अर्थव्यवस्था द्वारा मिलने वाले अवसरों में देशभर के विक्रेताओं की भागीदारी से प्रोत्साहित हैं। हमें इस सफर में योगदान देने पर बेहद गर्व है। इस उपलब्धि पर फ्लिपकार्ट के वाइस-प्रेसिडेंट एवं हेड मार्केटप्लेस राकेश कृष्णन ने कहा फ्लिपकार्ट भारतीय एमएसएमई के लिए एक अत्याधुनिक ई-कॉमर्स इकोसिस्टम बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। त्योहारी सीजन की ओर बढ़ते हुए हम इनोवेटिव टूल्स और इनीशिएटिव के माध्यम से सेलर्स को सफलता दिलाने के अपने मिशन के लिए प्रतिबद्ध हैं 14 लाख विक्रेताओं को जोड़ना हमारी सेलर कम्युनिटी में समावेश एवं सहूलियत को बढ़ाने के लिए फ्लिपकार्ट के समर्पण को रेखांकित करता है। सेलर्स का सहयोग करने और सशक्त बनाने की फ्लिपकार्ट की प्रतिबद्धता के तहत ही हमने हाल ही मे ऑल इंडिया सेलर्स कॉन्क्लेव की एक सीरीज का समापन किया है, जिसमें 4,500 से अधिक सेलर्स की भागीदारी देखी गई।'

इंडियाफर्स्ट लाइफ इंश्योरेंस ने गारंटीड सिंगल प्रीमियम प्लान लांच किया

मुंबई एजेंसी। इंडियाफर्स्ट लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (इंडियाफर्स्ट लाइफ) ने एक अनूठी पेशकश - इंडियाफर्स्ट लाइफ गारंटीड सिंगल प्रीमियम प्लान पेश की है। यह अनूठी योजना व्यक्तियों को वित्तीय सुरक्षा और बचत का एक सहज कांबिनेशन प्रदान करने के लिए डिज़ाइन की गई है। यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए विरासत और धन योजना में मदद करते हुए उनकी दीर्घकालिक सुरक्षा जरूरतों को पूरा करता है।

इंडियाफर्स्ट लाइफ गारंटीड सिंगल प्रीमियम प्लान (जीएसपीपी) एक नॉन-लिंक्ड, नॉन-पार्टिसिपेटिंग, व्यक्तिगत,

सिंगल प्रीमियम बचत योजना है, जो लंबी पॉलिसी अवधि में ग्राहक को गारंटीशुदा रिटर्न प्रदान करती है। पॉलिसी शुरू होने से पहले एकमुश्त प्रीमियम भुगतान के साथ, ग्राहक एक ही पॉलिसी से वित्तीय सुरक्षा और बचत के दोहरे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ग्राहकों के पास कई विकल्पों में से अपना वांछित जीवन कवर विकल्प चुनने की सुविधा है, जिसमें एकल प्रीमियम के बदले 1.25 गुना या 10 गुना जीवन कवर शामिल है। यह अनूठा अनुकूलन व्यक्तियों को अपने कवरेज को उनके दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों के साथ संरेखित करने में सशक्त बनाता है।

लांच के बारे में बताते हुए- इंडियाफर्स्ट लाइफ इंश्योरेंस के डिप्टी सीईओ रुषभ गांधी ने कहा हमारा विचार है कि निकट भविष्य में ब्याज दरें स्थिर रहेंगी और मध्यम से लंबी अवधि में नरमी शुरू हो जाएंगी।

कोटक के संकल्प बचत खाता ने ग्रामीण और अर्ध-शहरी ग्राहकों के नकद आधारित बैंकिंग की जरूरतों का समाधान किया

मुंबई एजेंसी। ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी ग्राहकों की नकद आधारित बैंकिंग की जरूरतों को संबोधित करते हुए कोटक महिंद्रा बैंक लिमिटेड (केएमबीएल / कोटक) ने संकल्प बैंकिंग खाता शुरू करने की घोषणा की है। इसमें वार्षिक 24 लाख रुपये तक की नकद जमा और निकासी पर शून्य प्रभार और खाता में अधिशेष रखने में लचीलापन जैसी अनेक सेवायें उपलब्ध हैं। इसके अलावा, संकल्प इन बाज़ारों में विशेष कीमत पर गोल्ड, टू-व्हीलर और ट्रैक्टर लोन भी प्रदान करता है। संकल्प बचत खाते को कृषि और खेती-बाड़ी से अलग आय वाले उभरते ग्राहक समूह को सेवा प्रदान करने के लिए शुरू किया गया है। बैंकिंग सेवाओं के साथ, यह नया बचत खाता, ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी ग्राहकों की बैंकिंग संबंधी विकसित होती जरूरतों के लिए सम्मानार्थ टॉक टाइम और पेशॉपमोर डेबिट कार्ड की भी पेशकश करेगा।

कोटक महिन्द्रा के प्रेसिडेंट एवं हेड - वितरण, रिटेल लायबिलिटीज, पुनीत कपूर ने कहा कि, 'गैर-महागरों में इंटरनेट की गहरी पहुँच और आय के बदलते आयामों के साथ, ग्राहक विविधतापूर्ण बैंकिंग सेवाएं चाहते हैं। वे नकद आधारित बैंकिंग सेवाएं और अधिक नकद निकालने की सीमा और ऋण में छूट जैसी बैंकिंग सेवाओं की तलाश में हैं। संकल्प बचत खाता आकर्षक मूल्यवर्द्धित सेवाओं के साथ आसान बैंकिंग उपलब्ध कराता है, जोकि ग्राहकों के इस समूह की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है।

संकल्प बचत खाता, एक विश्वास आगे बढ़ते रहने का, कोटक महिन्द्रा बैंक द्वारा ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी भारत के ग्राहकों को सुविधाजनक, सुलभ और किफायती समाधान उपलब्ध कराने का एक प्रयास है। संकल्प बैंकिंग खाता एक त्वरित और सुविधाजनक पेशकश है। हरेक ग्राहक तक इसकी पहुँच सुनिश्चित करने के लिए, कोटक की वेबसाइट या मोबाइल ऐप के माध्यम से डिजिटल रूप में आवेदन करने के विकल्प हैं।

चिकित्सा विज्ञान में प्रगति ने लिम्फोमा को एक इलाज योग्य बीमारी में बदल दिया : डॉ. अंकित जितानी

अहमदाबाद, एजेंसी। विश्व लिम्फोमा जागरूकता दिवस हर साल 15 सितंबर को मनाया जाता है। 2023 की थीम है हम अपनी भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए इंतजार नहीं कर सकते। मानव शरीर आवश्यक पोषक तत्वों के परिवहन और अंग कार्य को बनाए रखने के लिए संचार प्रणाली पर निर्भर करता है। परिसंचारी रक्त का एक भाग फ़िल्टर हो जाता है और एक समानांतर परिसंचरण डोमेन में प्रवेश करता है जिसे लिम्फेटिक सर्क्युलेशन कहा जाता है। इस विशेष नेटवर्क में लिम्फ, एक फ़िल्ट्रेट और प्रतिरक्षा कोशिकाएं होती हैं जिन्हें लिम्फोसाइट्स कहा जाता है। लिम्फ लसीका वाहिकाओं के भीतर प्रसारित होता है और ये वाहिकाएं विशिष्ट बिंदुओं पर प्रतिच्छेद करती हैं जिन्हें लिम्फ नोड्स कहा जाता है। यह हमारे शरीर के भीतर एक जटिल अंतर्संबंधित नेटवर्क बनाता है। डॉ. अंकित जितानी, कंसलटेंट, हेमेटोलॉजी, हेमेटो-ऑन्कोलॉजी × बोन मेरो ट्रान्सप्लान्ट, मैरिंगो सिम्स अस्पताल, चिकित्सा विज्ञान में प्रगति ने लिम्फोमा को एक इलाज योग्य बीमारी में बदल दिया है।

ग्लेन मैक्सवेल के घर आई खुशखबरी, बेटे के पिता बने

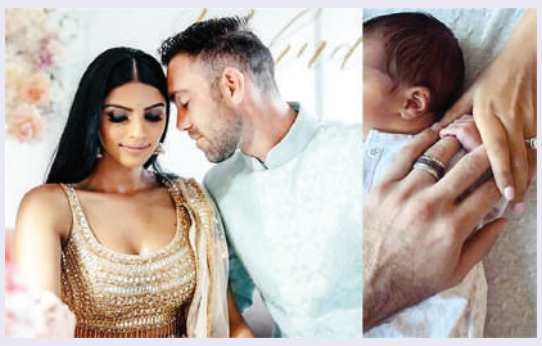

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के ऑलराऊंडर ग्लेन मैक्सवेल पिता बन गए हैं। उनकी पत्नी विनी रमन ने बेटे को जन्म दिया है। मैक्सवैल ने इसकी घोषणा अपने सोशल मीडिया अकाऊंट से की हैं। कपल ने अपने बच्चे का नाम भी रख लिया है। मैक्सवेल के बेटे का नाम लोगन मेवरिक मैक्सवेल होगा। कुछ महीने पहले विनी ने पोस्ट किया था कि वह सितंबर में अपने पहले बच्चे के आगमन की उम्मीद कर रहे हैं। उन्होंने तब यह भी कहा था कि गर्भधारण की यात्रा बहुत आसान नहीं रही है और उन जोड़ों के लिए दया दिखाई है जिन्हें उस दिन को देखने के लिए लंबे संघर्ष से गुजरना पड़ता है।

आईसीसी वनडे विश्व कप 2023 से ठीक पहले मैक्सवेल खुश होंगे। वह पिता बन गए हैं और उन्हें इस बात की खुशी होगी कि वनडे सीरीज के लिए भारत रवाना होने से पहले उन्हें अपने नन्हे बच्चे और पत्नी के साथ कुछ समय बिताने का मौका मिलेगा। बीते दिनों ही भारतीय तेज गेंदबाज ईशांत शर्मा ने भी पत्नी के साथ सोशल मीडिया पर घोषणा की थी कि वह जल्द ही मां-बाप बनने वाले हैं।

जानें कौन है विनी रमन

मेलबर्न में मार्च 1993 को विनी रमन का जन्म हुआ था। उन्होंने मेडिकल साइंस की पढ़ाई की है और पेशे से फार्मासिस्ट हैं। उन्होंने मैक्सवेल के साथ ईसाई औ तमिल रीति-रिवाज से शादी की थी। विनी और ग्लेन को पहली बार 2019 में एक साथ देखा गया था जब वे 2019 में ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट पुरस्कारों के लिए आए थे।

धोनी ने प्रशिक्षण सत्र के बाद युवा क्रिकेटर को अपनी बाइक पर लिफ्ट दी

चेन्नई (एजेंसी)। भारत के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी वर्ष 2020 में क्रिकेट से संन्यास ले चुके है और अब सिर्फ चेन्नई सुपर किंग्स का नेतृत्व करते हुए आईपीएल में ही नजर आते हैं। लेकिन इसके बावजूद वह सोशल मीडिया में सूर्खियों में बने रहते हैं। हाल ही में धोनी का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें वह एक युवा क्रिकेटर को अपनी पर लिफ्ट देते हुए नजर आए। रांची में एक प्रशिक्षण सत्र के बाद धोनी ने एक प्रतिभाशाली युवा क्रिकेटर को अपनी प्रतिष्ठित यामाहा आरडी350 पर लिफ्ट दी और सभी को याद दिलाया कि भारतीय क्रिकेट में उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद उनका दिल सादगी से भरा है। धोनी जो मोटरबाइकों के प्रति अपने प्रेम से कभी पीछे नहीं हटते ने उभरते क्रिकेटर का दिन बना दिया। वायरल वीडियो में धोनी को अपना प्रशिक्षण सत्र पूरा करते और अपनी यामाहा पर लंबी ड्राइव पर जाते देखा जा सकता है। रास्ते में सीएसके के विकेटकीपर बल्लेबाज ने युवा प्रशंसक को एक स्थायी स्मृति प्रदान की। धोनी की सादगी और उदारता से यूजर्स के आश्चर्यचकित होने के बाद यह वीडियो वायरल हो गया। इस वीडियो को उक्त युवा खिलाड़ी ने ही शूट किया था।

टेनिस : डोपिंग के कारण सिमोना हालेप पर लगा 4 साल का प्रतिबंध

रोमानियाई (एजेंसी)। इंटरनेशनल टेनिस इंटीग्रिटी एजेंसी ने मंगलवार को कहा कि पूर्व विश्व नंबर एक सिमोना हालेप को दो डोपिंग अपराधों के लिए टेनिस से 4 साल के लिए निलंबित कर दिया गया है।

31 वर्षीय रोमानियाई खिलाड़ी को 2022 यूएस ओपन में रॉक्सडस्टैट से पॉजीटिव पाया गया था। इस कारण उन्हें पिछले साल अक्टूबर से अस्थाई रूप से निलंबित कर दिया गया था। मई में दो बार की ग्रैंड स्लैम एकल चैंपियन पर एथलीट बायोलॉजिकल पासपोर्ट (एबीपी) में अनियमितताओं संबंधित रिपोर्ट बनी थी जोकि जांच में सही पाई गई। हालेप अब 6 अक्टूबर 2026 तक पेशेवर टेनिस नहीं खेल पाएंगी। वहीं, आईटीआईए के बयान जारी होने के बाद हालेप ने घोषणा की कि वह फैसले के खिलाफ अपील करेंगी। उन्होंने कहा- टेनिस एंटी-डोपिंग कार्यक्रम के तहत एक न्यायाधिकरण ने मेरे मामले में एक अस्थाई निर्णय की घोषणा की।

पाकिस्तान एशिया कप 2023 से बाहर

फाइनल मुकाबला, भारत-श्रीलंका में

कोलंबो (एजेंसी)। श्रीलंका ने कुसल मेंडिस के 87 गेंदों में 91 तो चरिथ असलांका की जुझारू पारी की बदौलत एशिया कप 2023 के सुपर 4 के अहम मुकाबले में पाकिस्तान को हराकर फाइनल में जगह बना ली। पाकिस्तान को फाइनल में जगह बनाने के लिए यह मैच जीतना जरूरी थी। बारिश से प्रभावित मुकाबले में पाकिस्तान ने श्रीलंका के आगे 42 ओवर में 252 रन का टारगेट रखा था। श्रीलंकाई बल्लेबाजों ने जोरदार प्रदर्शन कर अपनी टीम को जीत दिला दी और पाकिस्तान को एशिया कप से बाहर कर दिया।

इससे पहले बारिश के कारण मैच की शुरुआत में ही विलंब हुआ जिसके कारण इसे 45 ओवर का कर दिया गया। मैच के बीच में दोबारा बारिश आई जिससे के कारण मैच में ओवरों की संख्या फिर घटाकर 42 कर दी गई। श्रीलंका को डकवर्थ-लुईस पद्धति के तहत 252 रन का लक्ष्य मिला। रिजवान ने 73 गेंद में छह चौकों और दो छक्कों से नाबाद 86 की पारी खेलने के अलावा इफ्तिखार अहमद (47 रन, 40 गेंद, चार चौके, दो छक्के) के साथ छठे विकेट के लिए 108 रन जोड़कर पाकिस्तान को मजबूत स्कोर तक पहुंचाया। इन दोनों की साझेदारी से पाकिस्तान अंतिम 10 ओवर में 102 रन जोड़ने में सफल रहा। शफीक ने भी शीर्ष क्रम में 69 गेंद में तीन चौकों और दो छक्कों से 52 रन बनाए।

श्रीलंका की तरफ से मथीसा पथिराना सबसे सफल गेंदबाज रहे जिन्होंने 65 रन देकर तीन विकेट चटकाए। प्रमोद मदुसान ने 58 रन पर दो विकेट हासिल किए। टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने वाले पाकिस्तान ने पांचवें ओवर में ही फखर जमां (04) का विकेट गंवा दिया जिन्हें मदुसान ने बोल्ड किया। शफीक और कप्तान बाबर आजम (29) ने दूसरे विकेट के लिए 64 रन जोड़कर पारी को संभाला। दोनों ने 10 ओवर में टीम का स्कोर एक विकेट पर 40 रन तक पहुंचाया।

शफीक ने दुनिथ वेलालागे पर पारी का पहला छक्का जड़ा और फिर मथीसा पथिराना पर चौके के साथ 12वें ओवर में टीम के रनों का अर्धशतक पूरा किया। बाबर ने श्रीलंका के कप्तान दासुन शनाका और पथिराना पर चौके मारे लेकिन भारत के खिलाफ पिछले मैच में पांच विकेट चटकाने वाले वेलालागे ने उन्हें विकेटकीपर कुसाल मेंडिस के हाथों स्टंप करा दिया।

शफीक ने धनंजय डिसिल्वा पर छक्का और एक रन के साथ 65 गेंद में करियर का पहला अर्धशतक पूरा किया। वह हालांकि अगले ओवर में पथिराना की गेंद को हवा में लहराकर डीप स्क्वायर लेग पर मुदसान को कैच दे बैठे। उन्होंने अपनी पारी में 69 गेंद का सामना करते हुए तीन चौके और दो छक्के मारे। पथिराना ने अगले ओवर में मोहम्मद हारिस (03) को कैच लपककर 24वें ओवर में पाकिस्तान का स्कोर चार विकेट पर 108 रन किया।

ऑफ स्पिनर महीश तीक्षणा ने मोहम्मद नवाज (12) को बोल्ड करके पाकिस्तान को पांचवां झटका दिया। नवाज के 28वें ओवर में आउट होते ही बारिश आ गई और खेल दोबारा शुरू होने पर मैच को 42 ओवर का कर दिया गया। इफ्तिखार अहमद ने वेलालागे पर चौके के साथ 32वें ओवर में टीम का स्कोर 150 रन के पार पहुंचाया। मोहम्मद रिजवान और इफ्तिखार दोनों ने अगले ओवर में मदुसान पर छक्के जड़े। रिजवान ने अगले ओवर में वेलालागे पर छक्के और चौके के साथ 48 गेंद में अर्धशतक पूरा किया। रिजवान और इफ्तिखार ने अंतिम ओवरों में तेजतर्रार बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान को मजबूत स्कोर तक पहुंचाया।

जवाब में खेलने उतरी श्रीलंका ने पाथुम निसांका के 29 तो कुसल परेरा के 17 रनों की बदौलत सधी हुई शुरूआत की। लेकिन कुसल मेंडिस ने समरविक्रमा के साथ मिलकर टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया। समरविक्रमा ने 51 गेंदों पर 4 चौकों की मदद से 48 रन बनाए। इसके बाद असलांका ने आकर मेंडिस का भरपूर साथ दिया। इसी बीच मेंडिस 87 गेंदों में 8 चौके और एक छक्के की मदद से 91 रन बनाए। श्रीलंकाई पुछल्ले बल्लेबाज कुछ खास नहीं कर पाए लेकिन असलांका ने एक छोर संभाले रखा। आखिरी ओवर में श्रीलंका को जीत के लिए 8 रन चाहिए थे तब असलांका ने अपना जादू चलाया और टीम को जीत दिला दी।

दक्षिण अफ्रीका की मुश्किलें बढ़ीं, बावुमा और नोर्त्जे चोटिल

केप टाउन (एजेंसी)। तेज गेंदबाज एनरिक नॉटर्जे के बाद कप्तान टेम्बा बावुमा के भी चोटिल होने से दक्षिण अफ्रीका की मुश्किलों में इजाफा हुआ है। नार्त्जे पीठ के निचले हिस्से में चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जारी एकदिवसीय श्रृखंला से बाहर हो गए हैं जबकि कप्तान टेम्बा बावुमा भी चोटिल हाने के कारण शुक्रवार को सेंचुरियन में होने वाले चौथे वनडे में नहीं खेलेंगे।

कप्तान बवुमा की मांसपेशियों में खिंचाव है। ऑस्ट्रेलिया को सीरीज में बने रहने के लिए चौथा वनडे हर-हाल में जीतना होगा। दक्षिण अफ्रीका के इन खिलाड़ियों ने चोटिल होने से उसकी मुश्किलें बढ़ा दी हैं। दक्षिण अफ्रीका की टीम विश्व कप से पहले अपने दोनों खिलाड़ियों को लेकर कोई जोखिम नहीं लेना चाहेगी। एडेन मार्करम अब चौथे वनडे मैच में दक्षिण अफ्रीका की कप्तानी करेंगे। वो इस सीरीज में बेहतरीन फॉर्म में चल रहे हैं।

टी20 सीरीज पहले ही दक्षिण अफ्रीका 3-0 से हार चुकी है। ऑस्ट्रेलिया की टीम पांच मैचों की वनडे सीरीज में 2-1 से आगे है। अगर दक्षिण अफ्रीका को सीरीज में बने रहना है तो फिर ये मुकाबला हर-हाल में जीतना होगा। वहीं ऑस्ट्रेलिया की टीम चाहेगी कि ये मैच जीतकर सीरीज अपने नाम कर ले। मिचेल मार्श की अगुवाई में टीम ने अभी तक काफी अच्छा खेल दिखाया है।

नार्त्जे पीठ में खिंचाव के कारण इस सप्ताह की शुरुआत में पोटचेफस्ट्रूम में तीसरा वनडे नहीं खेल पाए थे। सीएसए की एक विज्ञप्ति में कहा, 'इस सप्ताह उनका स्कैन कराया गया और एक विशेषज्ञ से परामर्श लिया गया और वह प्रोटियाज मेडिकल टीम की देखरेख में इस सप्ताह के अंत में फिर से गेंदबाजी करना शुरू करेंगे। नॉटर्जे ने ब्लोमफोंटेन में सिफ 'दूसरा वनडे खेला जहां ऑस्ट्रेलिया ने 8 विकेट पर 392 रन बनाए और नॉटर्जे ने 58 रन देकर पांच विकेट चटकाए थे। कप्तान बावुमा इस श्रृंखला में अब तक दक्षिण अफ्रीका के लिए सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं, जिन्होंने पहले तीन मैचों में 57, 46 और नाबाद 114 रन बनाए हैं।

एशिया कप 2023

बाबर आजम ने बताया हार का कारण, कहा- हमें इसकी कीमत चुकानी पड़ी

कोलंबो (एजेंसी)। एशिया कप 2023 सुपर फोर मैच में पाकिस्तान को दासुन शनाका की अगुवाई वाली श्रीलंका के खिलाफ दो विकेट से हार का सामना करना पड़ा। कप्तान बाबर आजम और उनकी टीम कई पहलुओं में पिछड़ने के कारण टूर्नामेंट से बाहर होना पड़ा। मैच के बाद पाकिस्तान के कप्तान ने बड़ा बयान देते हुए कहा कि श्रीलंका ने बहुत अच्छा खेला, हमसे बेहतर क्रिकेट खेला।

बाबर ने मैच के बाद कहा, हमने अपना सर्वश्रेष्ठ ओवर फेंकने का फैसला किया और शाहीन को दूसरा आखिरी ओवर फेंकने के लिए कहा और जमान पर विश्वास किया। श्रीलंका ने बहुत अच्छा खेला, हमसे बेहतर क्रिकेट खेला। आजम ने स्वीकार किया कि सदीरा समरविक्रमा और कुसल मेंडिस के बीच साझेदारी के दौरान पाकिस्तान ने श्रीलंकाई टीम को गति बनाने दी, जिससे तीसरे विकेट के लिए 100 रन की बड़ी साझेदारी हुई।

उन्होंने कहा, हम गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण में अच्छे प्रदर्शन नहीं कर सके हैं। इसलिए हम मैच हार गए। बीच के ओवरों में हमने अच्छी गेंदबाजी नहीं की। उस साझेदारी की हमें कीमत चुकानी पड़ी। हमने अच्छी शुरुआत की, अंत अच्छा किया, लेकिन बीच के ओवर अच्छे नहीं रहे। हमारे पास इसकी कमी है। कुसल मेंडिस श्रीलंका की पारी के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज थे, उन्होंने इफ्तिखार अहमद द्वारा आउट होने से पहले शानदार 91 रन बनाए। हालांकि, उनके योगदान ने पहले ही श्रीलंका की कमांडिंग स्थिति का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। इस जीत के साथ श्रीलंका ने एशिया कप फाइनल में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया और रविवार 17 सितंबर को बहुप्रतीक्षित मुकाबले में भारत से भिड़ेगी। विशेष रूप से एशिया कप की शुरुआत हुए लगभग चार दशक हो गए हैं, फिर भी क्रिकेट जगत चिर प्रतिद्वंदी भारत और पाकिस्तान के बीच फाइनल का इंतजार कर रहा है।

विश्व कप से पहले पाकिस्तान को लगा झटका

मुख्य तेज गेंदबाज नसीम शाह कुछ मैचों से हो सकता है बाहर

कोलंबो (एजेंसी)। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने भारत में आगामी विश्व कप के शुरुआती मैचों के लिए तेज गेंदबाज नसीम शाह के समय पर ठीक होने की संभावना पर संदेह जताया है। कप्तान ने हालांकि कहा कि उनके शीर्ष तेज गेंदबाज हारिस रऊफ मांसपेशियों की खिंचाव से 'अच्छे से उबर रहे है' और वह छह अक्टूबर को हैदराबाद में नीदरलैंड के खिलाफ टीम के विश्व कप के शुरुआती मैच के लिए फिट हो जाएंगे।

एशिया कप में भारत के खिलाफ पाकिस्तान के सुपर फोर मुकाबले के दौरान यह दोनों तेज गेंदबाज चोटिल हो गए थे। गुरुवार को टीम जब श्रीलंका के खिलाफ मैदान में उतरी थी तो ये दोनों खिलाड़ी ड्रेसिंग रूम में बैठे थे। पाकिस्तान कोलंबो में सुपर फोर चरण के इस मैच में श्रीलंका से हारकर टूर्नामेंट से बाहर हो गया। नसीम को दांये कंधे में चोट लगी है और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने उनके रिहैबिलिटेशन को लेकर कोई आधिकारिक समयसीमा जारी नहीं की है जिसके कारण बाबर ने विश्व कप के शुरुआती मैचों में उनकी फिटनेस को लेकर अनिश्चितता व्यक्त की है।

बाबर ने श्रीलंका के खिलाफ मैच के बाद कहा, 'इस

बारे में मैं आपको बाद में बताउंगा। हारिस रऊफ की स्थिति उतनी बुरी नहीं है। उसके मांसपेशियों में खिंचाव है लेकिन वह विश्व कप से पहले इस चोट से उबर जाएगा। उन्होंने कहा, 'नसीम शाह भी चोट से उबर रहे है। वे कुछ मैचों के लिए उपलब्ध नहीं है। मुझे अभी चोट की गंभीरता और इससे उबरने की समयसीमा के बारे में पता नहीं है। नसीब विश्व के बाद के मैचों के लिए उपलब्ध रहेंगे। देखते है क्या होता है।

नसीम का चोट से पुराना नाता रहा है। वह जब 17 साल के थे तब भी पीठ की चोट के कारण 14 महीने तक खेल से दूर रहे थे। इस चोट से उबरने के बाद काउंटी टीम ग्लूस्टरशर के खिलाफ खेलते हुए वह दोबारा चोटिल हो गये थे। करियर की शुरुआत में नसीम को टेस्ट विशेषज्ञ गेंदबाज के तौर पर देखा जा रहा था लेकिन जल्द ही उन्होंने खुद को तीनों प्रारूप में साबित किया और पाकिस्तान के मुख्य तेज गेंदबाज के तौर पर उभर गये। एकदिवसीय में उनके नाम 14 मैचों में महज 17 के औसत से 32 विकेट है। विश्व कप से पहले पाकिस्तान को अब न्यूजीलैंड (29 सितंबर) और ऑस्ट्रेलिया (तीन अक्टूबर) के खिलाफ अभ्यास मैच खेलना है।

मोरक्को के खिलाफ डेविस कप में भारत का पलड़ा भारी, बोपन्ना का होगा आखिरी मैच

लखनऊ (एजेंसी)। मोरक्को के खिलाफ डेविस कप विश्व ग्रुप दो का मुकाबला भारत के लिए मुश्किल नहीं होगा लेकिन यह खास इसलिए है क्योंकि करीब 21 साल बाद रोहन बोपन्ना के डेविस कप करियर पर विराम लगने जा रहा है। पिछले कुछ साल में एटीपी सर्किट पर बड़े खिलाड़ियों को चुनौती देने वाले एकल खिलाड़ियों के अभाव और जीते जा सकने वाले मैचों में मिली हार से भारतीय डेविस कप टीम का प्रदर्शन काफी प्रभावित हुआ है। फरवरी में टीम विश्व ग्रुप दो में खिसक गई जो अब तक नहीं हुआ था।

नया प्रारूप 2019 में लांच होने के बाद से यह पहली बार है कि भारतीय टीम इस स्तर पर गिरी है। भारत पिछली बार मार्च में डेविस कप मुकाबले में डेनमार्क से 2.3 से हार गया था। इस सत्र में भारतीय टेनिस ने कोई यादगार पल नहीं देखे लेकिन पिछले सप्ताह बोपन्ना अमेरिकी ओपन पुरूष युगल के फाइनल में पहुंचे। युकी भांबरी ने एकल खेलना छोड़ दिया है जबकि रामकुमार रामनाथन शीर्ष 550 से भी बाहर हो गए हैं। इस सत्र में अलग-अलग टूर्नामेंटों में रामनाथन 17 बार पहले दौर से बाहर हो गए। यही वजह है कि कप्तान रोहित राजपाल ने उन्हें टीम में नहीं लिया हालांकि वह अभ्यास में मदद के लिए टीम का हिस्सा हैं।

बोपन्ना 43 वर्ष की उम्र में भी शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। उनके स्ट्रोक्स में अभी भी धार है और वह

जबर्दस्त विनर लगा रहे हैं। उनकी इच्छा को देखते हुए विदाई मैच उनके शहर बेंगलुरू में खेला जाता तो बेहतर रहता। लखनऊ में स्टेडियम की दर्शक क्षमता 1300 है लेकिन बेंगलुरू में 6500 दर्शक बैठ सकते हैं। वर्ष 2002 में पदार्पण के बाद से अब तक खेले गए 32 मैचों में से बोपन्ना ने 22 मैच जीते हैं जिनमें दस एकल हैं। एआईटीए ने बृहस्पतिवार की रात को बोपन्ना का एक विशेष समारोह में अभिनंदन किया। उनके कई दोस्त और परिजन इस मैच को देखने के लिए पहुंचे हैं।

भारत के नंबर एक एकल खिलाड़ी सुमित नागल फॉर्म में हैं। वह आस्ट्रिया में चैलेंजर टूर्नामेंट फाइनल खेलकर आए हैं जो इस सत्र में उनका तीसरा फाइनल था। शशि मुकुंद भारत के लिये पदार्पण करोंगे। उन्हें 2019 में भी पाकिस्तान के खिलाफ टीम में जगह दी गई थी लेकिन चोट के कारण उन्होंने नाम वापस ले लिया था। दिग्विजय प्रताप सिंह भी टीम में है जिन्हें औपचारिकता के मैच में उतारा जा सकता है। मोरक्को की टीम में एक ही खिलाड़ी एलियोट बेनचेट्रिट से भारत को चुनौती मिल सकती है। उन्होंने शीर्ष सौ में शामिल खिलाड़ियों को हराया है और ग्रैंडस्लैम भी खेल चुके हैं। मोरक्को के दूसरे एकल खिलाड़ी 20 वर्ष के यासिन डी हैं जो रैंकिंग में 557वें स्थान पर हैं। एडम मूंडिर 779वें स्थान पर हैं जबकि वालिद अहूडा और यूनिस लालामी तो शीर्ष 1000 में भी नहीं हैं।

संक्षिप्त समाचार

विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम हिंदी है: शाह

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने आज हिंदी दिवस के मौके पर अपने संबोधन में कहा कि भारत, विविध भाषाओं का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषाओं की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम हिंदी है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ

भाषाओं और संस्कृतियों का बेजोड़ संगम देखने को मिलता है। हिंदी को जनत्रांत्रिक भाषा का दर्जा भी मिल चुका है। यह बताने की जरूरत नहीं है कि जन-जन की भाषा हिंदी ने पूरब से लेकर पश्चिम और उत्तर से लेकर दक्षिण तक देश भर में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों को एकसूत्र में पिरोने का कार्य किया। आजादी के बाद हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 के दिन ही हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। मोदी जी की दूरदर्शी सोच और शाह के मार्गदर्शन में आज सभी भारतीय भाषाओं के माध्यम से गरीब हितैषी योजनाओं को लागू कर गरीबों और वंचितों का कल्याण किया जा रहा है। देश में राजभाषा में हुए कार्यों की समय-समय पर समीक्षा के लिए संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया था ताकि सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा की जा सके। 2014 तक इस रिपोर्ट के 9 खंड ही सौंपे गए थे, लेकिन शाह के कुशल प्रबंधन में महज 4 वर्षों के अंदर 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 2019 से सभी 59 मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया जा चुका है। आज देश के विभिन्न क्षेत्रों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 528 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन भी किया जा चुका है। लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट-लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने की भी पहल की है। राजभाषा को तकनीक के अनुसार विकसित बनाने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और 'हिंदी शब्द सिंधु' शब्दकोष का निर्माण किया जा चुका है। कुल 90 हजार शब्द का एक ई-महाशब्दकोष मोबाइल एप्प और करीब 9 हजार वाक्य का ई-सरल वाक्यकोष भी तैयार किया गया है। निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल. बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल का उदाहरण देते हुए शाह ने स्पष्ट किया कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ देश की सांस्कृतिक धरोहर हैं। हिंदी की किसी भी भारतीय भाषा से न कभी कोई स्पर्धा थी और न ही कभी हो सकती है। सशक्त भारत के निर्माण के लिए सभी भाषाओं को सशक्त करने की जरूरत है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारतीय भाषाओं को देश ही नहीं दुनिया भर के मंचों पर उचित सम्मान मिल रहा है।

आवारा कुत्ते ने बच्ची पर किया हमला, पांच मिनट तक नोंचता रहा; राहगीरों ने बचाई जान

नई दिल्ली, एजेंसी। गाजियाबाद के बापूधाम में दुकान से सामान लेकर जा रही नौ साल की बच्ची पर बुधवार शाम कुत्ते ने हमला कर दिया। बच्ची के पेट और कमर में काटने के जख्म हैं। गुरुवार को बच्ची के पिता ने संयुक्त अस्पताल में वैक्सीन लगवाई। बापूधाम कॉलोनी में रहने वाले ऑटो चालक सोनू गिरि की नौ साल की बेटी रुनझुन बुधवार शाम सात बजे दुकान से सामान लेने गई थी। दुकान से लौटते समय रास्ते में एक कुत्ते ने उस पर हमला कर दिया। कुत्ते ने शरीर पर कई जगह नोंचा और दो जगह का मांस उखाड़ दिया। चीख सुनकर वहां से गुजर रहे लोगों ने बच्ची को बचाया। गुरुवार को बच्ची को संयुक्त अस्पताल में एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाई गई। पिता सोनू गिरि ने बताया कि बेटी को लगभग पांच मिनट तक कुत्ता नोंचता रहा और पंजे मारता रहा। इससे बेटी के शरीर पर कई जगह घाव के निशान बन गए हैं। कमर में दो जगह दांत के गहरे निशान और पेट, पैर, छाती पर पंजों के निशान बन गए हैं। गिरि ने बताया कि कॉलोनी में 40 से 50 आवारा कुत्ते हैं। इससे लोगों में हमेशा डर बना रहता है। उन्होंने बताया कि आवारा कुत्तों से सबसे अधिक समस्या बच्चों को होती है। उन्होंने बताया कि कॉलोनी में आए दिन लोगों को कुत्ते काटने की घटनाएं होती रहती है। एमएमजी अस्पताल में 122 लोगों को एंटी रेबीज वैक्सीन लगाई गई। इसमें वे लोग भी शामिल हैं, जिन्हें दूसरी और तीसरी बार वैक्सीन लगी। इसके अलावा संयुक्त जिला अस्पताल में 78 लोगों ने वैक्सीन लगवाई।

मराठा कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने खत्म की भूख हड़ताल, सीएम शिंदे ने खुद पिलाया जूस

मुंबई, एजेंसी। मराठा आरक्षण को लेकर 17 दिनों से जारी गतिरोध गुरुवार सुबह समाप्त हो गया। मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जारांगे पाटिल ने मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और अन्य वरिष्ठ राज्य कैबिनेट सदस्यों के साथ अंतरवाली-सती गांव में मुलाकात की। बातचीत के बाद जारांगे ने अपनी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल समाप्त कर दी। जारांगे ने आरक्षण के लिए 29 अगस्त से चल रही भूख हड़ताल को खत्म करने के लिए मुख्यमंत्री के हाथों संतरे का जूस पिया। इस बारे में काफी माथापच्ची हुई कि क्या मुख्यमंत्री को जारांगे पाटिल से मिलना चाहिए? इस दौरान शिंदे बुधवार शाम को दौरा टाल दिया। शिंदे ने गुरुवार सुबह जारांगे से मिलने का फैसला किया। एकनाथ शिंदे, राधाकृष्ण विखे पाटिल, गिरीश महाजन, उदय सामंत और रावसाहेब दानवे सहित अन्य वरिष्ठ मंत्रियों के साथ अंतरवाली सारती पहुंचे और मनोज जारांगे को भूख हड़ताल खत्म करने के लिए मनाया।

बंगाल के 12 पूर्व कुलपतियों ने गवर्नर के खिलाफ खोला मोर्चा; भेजा नोटिस

कोलकाता, एजेंसी। पश्चिम बंगाल में विभिन्न विश्वविद्यालयों के बारह पूर्व कुलपतियों ने राज्य के सभी विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति और गवर्नर सीवी आनंद बोस को एक कानूनी नोटिस भेजा है और उनसे मांग की है कि वह अपने हालिया बयान को वापस लें, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा है। इन कुलपतियों ने अपने नोटिस में गवर्नर से कहा है कि वह 15 दिनों के अंदर या तो सार्वजनिक तौर पर माफी मांग लें या फिर कानूनी कार्रवाई झेलने के लिए तैयार रहें। लीगल नोटिस में सभी कुलपतियों ने 50-50 लाख रुपये की मानहानि का हर्जाना भी मांगा है।

बंगाल गवर्नर ने हाल ही में कहा था कि इन कुलपतियों को सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद इस्तीफा देना पड़ा क्योंकि उनकी नियुक्तियाँ मानदंडों के अनुसार नहीं थीं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया था कि ये पूर्व वीसी भ्रष्ट थे

और कुछ के खिलाफ उत्पीड़न के भी आरोप थे। पूर्व कुलपतियों ने कहा है कि बोस को राज्य विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति होने के नाते लीगल नोटिस भेजा गया है, राज्यपाल होने की वजह से नहीं।

राज्यपाल सह कुलाधिपति ने 7 सितंबर को एक वीडियो संदेश में कहा था कि उन्हें इतने सारे विश्वविद्यालयों के लिए अंतरिम कुलपति की नियुक्ति इसलिए करनी पड़ी क्योंकि पिछले कुलपतियों को सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर इस्तीफा देना पड़ा था क्योंकि उनकी नियुक्तियां मानदंडों के अनुसार नहीं की गई थीं। मैंने उनसे इस्तीफा देने के लिए नहीं कहा था लेकिन सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद उन्हें खुद ही इस्तीफा देना पड़ा था।

इसके आगे बोस ने कहा था कि अब आप पूछ सकते हैं कि सरकार द्वारा मनोनीत व्यक्तियों को कुलपति क्यों नहीं नियुक्त किया? इनमें से कुछ नामज़द लोग या तो भ्रष्टाचार में शामिल थे तो कुछ पर छात्राओं को परेशान करने का आरोप था। मैं उन्हें कुलपति कैसे नियुक्त कर सकता हूं? बोस की इसी टिप्पणी के विरोध में पूर्व कुलपतियों ने उन्हें कानूनी नोटिस भेजा है।

पूर्व कुलपतियों को समर्थन देते हुए राज्य शिक्षाविद् मंच के सदस्य और जादवपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ओम प्रकाश मिश्रा ने कहा,राज्यपाल ने कुलपति के रूप में उन्हें सेवा विस्तार इसलिए नहीं दिया, क्योंकि वे राजभवन से सीधे संवाद नहीं करते थे, बल्कि विकास भवन (राज्य उच्च शिक्षा विभाग का कार्यालय) के माध्यम से संवाद करते थे। दो अन्य कुलपतियों को सेवा विस्तार दिया गया क्योंकि वे राजभवन से सीधे संवाद करते थे।

मिश्रा ने कहा कि तीन-चार महीनों के बाद, राज्यपाल ने ऐसे सभी कुलपतियों को भ्रष्ट करार दे दिया, जो उनके पास नहीं जाते थे और दावा किया कि उनमें से कुछ कुलपतियों के खिलाफ उत्पीड़न के आरोप हैं। मिश्रा ने कहा कि इसी वजह से उन्होंने चांसलर को कानूनी नोटिस भेजकर विरोध दर्ज कराने का फैसला किया।

बीजेपी विधायक कर रहे है मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की तारीफ!

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान में भले ही बीजेपी गहलोत सरकार के खिलाफ प्रदेश भर में परिवर्तन यात्रा निकाल रही हो, लेकिन बीजेपी विधायक सीएम गहलोत के कामकाज की खुलकर तारीफ कर रहे है। खास बात यह है कि वसुंधरा राजे कैंप के माने जाने वाले विधायक ही गहलोत की तारीफ कर रहे हैं। सियासी जानकारों का कहना है कि ऐसा माना जा रहा है कि बीजेपी उम्रदराज और वसुंधरा राजे कैंप के नेताओं का टिकट काट सकती है। 30 से 40 विधायकों टिकट काटने की प्लानिंग है। एच चेहरों से चुनाव लड़ना चाहती है। गहलोत की तारीफ का सिलसिला जारी रह सकता है।

बीजेपी की वरिष्ठ विधायक सूर्यकांता व्यास ने सीएम गहलोत की तारीफ की है। जोधपुर से कई बार लगातार चुनाव जी रहीं सूर्याकांता व्यास ने कहा- गहलोत ने राजा-महाराजाओं से जैसा काम किया, सपना साकार कर उपकार किया। मुख्यमंत्री ने कुलदेवी उष्ट्र वाहिनी देवी मंदिर का जीर्णोद्धार करवाने के लिए बजट आवंटित कर दिया तो मैंने तो इनता नही कहा कि बधाई तो बनती है। अब समाज के लोग पोस्टर लगवाएं तो मैं क्या करुं? जानकारों का कहना है कि सीएम अशोक गहलोत और विधायक सूर्यकांता व्यास पहले भी एक-दूसरे की तारीफ करते रहे हैं। सीएम गहलोत कह चुके हैं कि विधायक सूर्यकांता व्यास से उनके आत्मीय रिश्ते मुख्यमंत्री बनने से पहले के है। सियासी जानाकारों का कहना है कि बीजेपी विभिन्न गुटों में बंटी हुई। खुद बीजेपी से निलंबित विधायक कैलाश मेघवालल ने यह बात स्वीकार की है। मेघवाल ने कहा कि बीजेपी में राजेंद्र सिंह राठौड़ गुट, शेखावत गुट, पूनिया गुट और अर्जुन मेघवाल गुट हावी है। जबकि वसुंधरा राजे कैं हाशिए पर है। कैलाश मेघवाल ने साफ कहा है कि उन्हें वसुंधरा राजे कैंप का माना जाता है। इसलिए निलंबित किया है। लेकिन मैं झुकूंगा नहीं। चुनाव लड़ूंगा। जीत हासिल करूंगा। कैलाश मेघवाल ने सीएम गहलोत की जमकर तारीफ की। मेघवाल ने कहा कि 2018 में मोदी सरकार की वजह से वसुंधरा राजे को हार का सामना करना पड़ा था। मेघवाल का यह भी दावा है कि उनके एक बयान की वजह से गहलोत सरकार गिरने से बच गई। विधायक सूर्यकांता व्यास की मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की खुलकर तारीफ को बीजेपी ने गंभीरता से लिया है।

कभी भेदभाव नहीं; कांग्रेस सरकार के उपमुख्यमंत्री ने खुलकर की पीएम मोदी की तारीफ

रायगढ़, एजेंसी। तू-तू और मैं-मैं की राजनीति के बीच ऐसा कम ही देखना को मिलता है कि विरोधी दलों के नेता एक-दूसरे की सार्वजनिक मंचों से तारीफ करें। बात जब कांग्रेस और भाजपा नेताओं की हो तो यह और भी दुर्लभ है। हालांकि, गुरुवार को ऐसा एक दृश्य जरूर दिखा जब छत्तीसगढ़ के लिए कई सौगत लेकर पहुंचे पीएम मोदी की कांग्रेस सरकार में उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने खुलकर तारीफ की। उन्होंने मंच से कहा कि पीएम मोदी ने राज्य के साथ कभी भेदभाव नहीं किया और जब जिस बात की मांग की गई उसे केंद्र सरकार की ओर से पूरा किया गया। पीएम मोदी ने विधानसभा चुनाव से पहले छत्तीसगढ़ में गुरुवार को लगभग 6350 करोड़ रुपये की रेल परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास किया। उन्होंने प्रधानमंत्री ने चसिकल सेल रोगज की जांच की गई आबादी के बीच एक लाख सिकल सेल परामर्श कार्डों का भी वितरण किया। इस दौरान मंच पर छत्तीसगढ़ सरकार के उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव भी मौजूद थे। गर्मजोशी से पीएम मोदी का स्वागत करने के बाद उन्होंने खुलकर तारीफ भी की। टीएस सिंहदेव ने कहा, मेरा सौभाग्य है कि छत्तीसगढ़ की धरती पर श्रद्धेय प्रधानमंत्री जी की अगुआनी का अवसर मिला। छत्तीसगढ़ में सर आपका बहुत-बहुत स्वागत है। आज आप देने आए हैं। बहुत सारी चीजें देते रहे हैं, और देते रहे हैं और भविष्य में भी मिलती रहेंगी ऐसा मेरा विश्वास है। सिकल सेल रोगियों को लेकर हुए काम को लेकर उन्होंने कहा, छत्तीसगढ़ में हर 10 में से एक व्यक्ति सिकल सेल से ग्रसित है। ये आदिवासी और पिछड़े वर्ग के भी है। मार्गदर्शन में, राज्य अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए सदैव काम करते रहा है। टीएस सिंहदेव मंच से खुलकर कहा कि पीएम मोदी ने कभी राज्य सरकार के साथ भेदभाव नहीं किया और हर मांग पूरी की। उन्होंने कहा,मैं यह कहने से भी नहीं चूकना चाहूंगा कि मेरे अनुभव में मैंने भेदभाव महसूस नहीं किया।

दिल्ली में प्रदूषण पर लगेगा ब्रेक, एक अक्टूबर को लॉन्च होगा विंटर एक्शन प्लान

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के 13 प्रदूषण हॉट स्पाट के लिए विशेष टीमों का गठन किया गया है। ये टीमें इन जगहों का दौरा कर सर्दियों के लिए कार्ययोजना तैयार करेंगी, ताकि यहां मौजूद प्रदूषण के स्रोतों की रोकथाम की जा सके। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने गुरुवार को सचिवालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में इसकी जानकारी दी।

इससे पूर्व पर्यावरण मंत्री ने दिल्ली के 28 विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में सर्दियों के मौसम में प्रदूषण की रोकथाम को लेकर विचार-विमर्श किया गया। बैठक के बाद पर्यावरण मंत्री ने पत्रकारों से कहा कि दिल्ली में अक्तूबर से प्रदूषण का स्तर बढ़ने लगता है। इसे देखते हुए दिल्ली सरकार की ओर से विंटर एक्शन प्लान तैयार किया जा रहा है। मंगलवार को दिल्ली सरकार ने पर्यावरण एवं वायु गुणवत्ता

विशेषज्ञों के साथ बैठक की थी। इसमें विशेषज्ञों ने अलग-अलग सुझाव दिए थे। इन्हीं सुझावों को लेकर दिल्ली के 28 ऐसे विभागों के साथ बैठक की गई, जिन्हें इन सुझावों को अमलीजामा पहनाना है। पर्यावरण मंत्री ने बताया कि इस बार पूरी दिल्ली के लिए विंटर एक्शन प्लान तैयार करने के साथ-साथ प्रदूषण के 13 हॉट स्पाट को लेकर अलग से कार्ययोजना तैयार की जा रही है, चूंकि इन 13 जगहों पर प्रदूषण के कारक अलग-अलग हैं, इसलिए इनके लिए अलग कार्ययोजना की जरूरत भी है। पर्यावरण मंत्री ने कहा कि इन 13 जगहों का जमीनी स्तर पर निरीक्षण कर कार्ययोजना तैयार करने के लिए 13 टीमों का गठन किया गया है। इसके साथ ही बैठक में कार्ययोजना के लिए 15 फोकस बिन्दु भी तय किए हैं। इन बिन्दुओं में हॉट स्पॉट प्रबंधन, पराली, धूल प्रदूषण, वाहन प्रदूषण, खुले में कचरा जलाना, औद्योगिक प्रदूषण, ग्रीन ऐप व ग्रीन वार रूम, रियल टाइम अपोर्समेंट स्टडी, पटाखों पर प्रतिबंध, पौधरोपण, अर्बन फार्मिंग, ई-वेस्ट ईको पार्क, जन जागरुकता अभियान, केंद्र व पड़ोसी राज्यों के साथ संवाद और ग्रैप क्रियान्वयन शामिल हैं। पर्यावरण मंत्री ने बताया कि सभी विभागों की ओर से 25 सितंबर तक विंटर कार्ययोजना दी जाएगी, जिसे पर्यावरण विभाग एकत्रित कर अभियान की रूपरेखा तैयार करेगा। एक अक्तूबर से मुख्यमंत्री इसे लागू करेंगे।

लीबिया में आई भीषण समुद्री बाढ़ के चलते अब तक 20 हजार से ज्यादा लोगों की मौत की आशंका

त्रिपोली , एजेंसी। लीबिया में आई भीषण समुद्री बाढ़ के चलते 20 हजार से ज्यादा लोगों की मौत की आशंका जताई जा रही है। इस बीच अथॉरिटीज ने कहा है कि इन घटनाओं की जांच की जाए। लीबिया के आधुनिक इतिहास की यह सबसे बड़ी तबाही है, जिसमें मारे गए लोगों की लाशें तक बरामद नहीं हो पा रही हैं। बचाव अभियान में शामिल लोगों का कहना है कि समुद्र में आई बाढ़ शहर में घुस आई थी और उसके पानी के साथ ही बहुत से लोग बह गए। माना जा रहा है कि इनमें से ज्यादातर की मौत हो गई है, लेकिन शवों की तलाश करना मुश्किल हो रहा है। लीबिया के डेरना शहर का लगभग आधा हिस्सा पूरी तरह तबाह हो गया है। डेरना शहर के मेयर अब्दुलमेनाम

अल-घाइठी ने कहा कि शहर में मरने वालों का आंकड़ा 18 से 20 हजार तक पहुंच गया है। यही नहीं उन्होंने कहा कि अब बड़ा डर इस बात का है कि महामारी फैल सकती है। पानी में शव सड़ रहे हैं और सड़कों पर पानी के साथ गंदगी बह रही है। इसके चलते बीमारियों का खतरा पैदा हो गया है। इस बीच विश्व मौसम संगठन का कहना है कि लीबिया में इतनी ज्यादा मौतों को टाला जा सकता था। संगठन ने कहा कि लीबिया बीते एक दशक से गृह युद्ध की मार झेल रहा है और देश में दो अलग-अलग सरकारों का शासन चल रहा है। हालत यह है कि लीबिया में मौसम विभाग ही सक्रिय नहीं है। यदि देश में मौसम विभाग ऐक्टिव होता तो उसकी ओर से कुछ भविष्यवाणी की जाती और फिर लोगों को बचाया जा सकता था। वैश्विक संस्था ने कहा कि यदि समय रहते बाढ़ का अनुमान जाहिर हो जाता तो लोगों को पहले ही कहीं शिफ्ट कर लिया जाता। इसके अलावा बचाव कार्य के लिए भी पर्याप्त समय मिल पाता। इसके अलावा कई जानकारों ने कहा कि डेरमा शहर पहले से ही खतरे पर था। इसे लेकर कई बार चेतावनी दी गई थी कि शहर में कुछ डैम बना दिए जाएं वरना समुद्र किनारे बसा यह शहर कभी भी भीषण आपदा की चपेट में आ सकता है।

डेरमा शहर की यह बाढ़ इतनी भीषण थी कि मिनटों के अंदर विशाल इमारतें ढह गईं। कई ऐसे परिवार हैं, जो पूरी तरह से तबाह हो गए और कोई सदस्य ही नहीं बचा। एक शख्स ने बताया कि उसने अपने संयुक्त परिवार के 13 सदस्यों को इस आपदा में खो दिया है। बाढ़ की भयावहता को इससे समझा जा सकता है।

स्पेन के पार्क में दिखीं बंगाल सीएम ममता बनर्जी, साड़ी और चप्पल पहन कर रहीं जॉगिंग

मेड्रिड, एजेंसी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इस समय अपनी 12 दिवसीय विदेश यात्रा पर हैं। वे राज्य में निवेश को आकर्षित करने के मकसद से स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा पर हैं। गुरुवार को ममता बनर्जी का स्पेन से एक वीडियो सामने आया जिसमें वे जॉगिंग करते नजर आ रही हैं। फिट रहें, स्वस्थ रहें! के संदेश के साथ ममता बनर्जी स्पेन के एक पार्क में जॉगिंग करते दिख रही हैं। ममता बनर्जी ने अपने इंस्टाग्राम पर ये वीडियो शेयर किया है। वे स्पेन की राजधानी मैड्रिड के एक पार्क में अपनी टीम के सदस्यों के साथ जॉगिंग कर रही हैं। उन्होंने वीडियो को इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए लिखा, ताजा करने वाली सुबह। एक अच्छी जॉगिंग आपको आने वाले दिन के लिए ऊर्जावान बना सकती है। फिट रहें, सभी स्वस्थ रहें! वीडियो में देखा जा सकता है कि बंगाल सीएम ने कलाई पर स्मार्टवॉच पहनी हुई है। इसके अलावा, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री को साड़ी और चप्पल में जॉगिंग करते देखा गया। ममता बनर्जी हर दिन ट्रेडमिल पर चलने के लिए जानी जाती हैं। 2019 के एक वीडियो में, वह दार्जिलिंग की पहाड़ियों में जॉगिंग करते हुए देखी गई थीं। वह अपनी टीम के सदस्यों के साथ 10 किलोमीटर की जॉगिंग पर निकलीं। ममता बनर्जी द्वारा साझा किए गए एक अन्य वीडियो में, वह एक पार्क में एक बॉक्स के आकार के संगीत वाद्ययंत्र अकॉर्डियन पर धुन बजा रही हैं। फुटबॉल लीग ला लीगा के अध्यक्ष से मुलाकात करेंगी और फुटबॉल से जुड़े किसी अहम समझौते के होने की संभावना है।

सुको ने पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ की याचिका लौटाई, की गई थी 90 दिनों के अंदर चुनाव कराने की मांग

इस्लामाबाद (पाकिस्तान), एजेंसी। पाकिस्तान स्थित जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट के रजिस्ट्रार ने गुरुवार को आपत्तियों के साथ पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ की याचिका लौटा दी है। बता दें कि इस याचिका में 90 दिनों के भीतर देश में राष्ट्रव्यापी चुनाव कराने की मांग की गई थी।

बता दें कि ये याचिका वापस कर दी गई क्योंकि पूर्व सत्तारूढ़ गठबंधन ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करने से पहले संबंधित मंचों पर संपर्क नहीं किया था।

याचिका में पीटीआई ने प्रतिवादी के रूप में पाकिस्तान के राष्ट्रपति आरिफ अल्वी को भी शामिल किया। हालांकि, रजिस्ट्रार ने कहा कि राज्य के प्रमुख को अनुच्छेद 248 के तहत याचिका का हिस्सा नहीं बनाया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट के रजिस्ट्रार ने आगे कहा, याचिका में यह नहीं बताया गया कि याचिकाकर्ता के किस मौलिक अधिकार का उल्लंघन हुआ है। जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, याचिका अनुच्छेद 184/3 के तहत अदालत के हस्तक्षेप की मांग करने वाली आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती है।

पीटीआई ने खटखटाया स्ष्ट का दरवाजा: अगस्त में, पीटीआई ने नेशनल असेंबली के विघटन के 90 दिनों के भीतर पाकिस्तान में चुनाव कराने के निर्देश देने के लिए शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाया है।

याचिकाकर्ता, जो पीटीआई के महासचिव उमर अय्यूब हैं, ने सुप्रीम कोर्ट से आग्रह किया कि वह पाकिस्तान के राष्ट्रपति अल्वी को चुनाव की तारीख देने का निर्देश दें और पाकिस्तान चुनाव आयोग को तदनुसार चुनाव कार्यक्रम जारी करने का निर्देश दें। अय्यूब ने संविधान के

अनुच्छेद 184(3) के तहत याचिका दायर की और अदालत से जनगणना को मंजूरी देने वाले काउंसिल ऑफ कॉमन इंटरेस्ट के 5 अगस्त, 2023 के फैसले को अवैध और शुरू से ही शून्य घोषित करने का अनुरोध किया। जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, यह सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई दूसरी याचिका थी। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष आबिद एस जुबैरी ने भी सुप्रीम कोर्ट में यही याचिका दायर की थी। मिली जानकारी के अनुसार, जुबैरी ने बैरिस्टर अली जफर के माध्यम से याचिका दायर की, जिसमें यह भी अनुरोध किया गया है कि सांख्यिकी ब्यूरो की 8 अगस्त, 2023 की अधिसूचना को अवैध, गैरकानूनी और शुरू से ही शून्य घोषित किया जाए। उन्होंने अदालत से यह भी अनुरोध किया कि इसीपी द्वारा 17 अगस्त, 2023 को की जाने वाली प्रस्तावित कार्रवाई को अवैध, गैरकानूनी और शुरू से ही शून्य घोषित किया जाए। याचिका में पीटीआई ने इसीपी, महासंघ, पाकिस्तान के संसदीय मामलों के मंत्रालय, काउंसिल ऑफ कॉमन इंटरेस्ट पंजाब, खैबर, सिंध, बलूचिस्तान के मुख्य सचिवों और अन्य को प्रतिवादी बनाया था। पीटीआई ने अदालत से यह भी अनुरोध किया कि सिंध के राज्यपाल को सिंध विधानसभा के विघटन के 90 दिनों के भीतर चुनाव की तारीख की घोषणा करने की आवश्यकता हो सकती है और चुनावी निकाय को तदनुसार चुनाव कार्यक्रम जारी करने के लिए कहा जा सकता है और बलूचिस्तान प्रांत के लिए भी ऐसा ही किया जा सकता है। जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, इस बीच, इसीपी ने आगे कहा कि पंजाब और खैबर पख्तूनख्वा विधानसभाओं में चुनाव अदालत के फैसले के अनुसार और अदालत द्वारा तय समय सीमा के भीतर हो सकते हैं।

याचिका में पीटीआई ने कहा कि जनगणना का इस्तेमाल इसीपी द्वारा नेशनल असेंबली के चुनावों में देरी के बहाने के रूप में किया जा रहा है।

अल्वी ने की थी 6 नवंबर की तारीख प्रस्तावित: पाकिस्तान स्थित डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, 13 सितंबर को पाकिस्तान के राष्ट्रपति आरिफ अल्वी ने मुख्य चुनाव आयुक्त सिकंदर सुल्तान राजा को लिखे पत्र में राष्ट्रीय चुनाव की तारीख 6 नवंबर प्रस्तावित की थी।

पत्र में, राष्ट्रपति अल्वी ने कहा कि उन्होंने 9 अगस्त को प्रधानमंत्री की सलाह पर नेशनल असेंबली को भंग कर दिया था। विशेष रूप से, ष्ट्रश्वष्ट को राष्ट्रपति की सलाह चुनाव की समय सीमा पर हितधारकों के बीच विभाजित राय की पृष्ठभूमि के खिलाफ आती है।

उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 48(5) का भी हवाला दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति को विधानसभा के लिए आम चुनाव कराने के लिए विघटन की तारीख से 90 दिनों के भीतर की तारीख तय करने का अधिकार और आदेश दिया गया है।

पत्र में कहा गया है, इसलिए, अनुच्छेद 48(5) के संदर्भ में, नेशनल असेंबली का आम चुनाव नेशनल असेंबली के विघटन की तारीख के 89वें दिन, यानी सोमवार, 6 नवंबर 2023 तक होना चाहिए।

डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, अल्वी ने पत्र में याद दिलाया कि संवैधानिक दायित्वों को पूरा करने के प्रयास में, मुख्य चुनाव आयुक्त को संवैधानिक इरादे और जनादेश को लागू करने के तौर-तरीकों को तैयार करने के लिए एक बैठक के लिए आमंत्रित किया गया था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129